अनुभव प्रकाश जैन (म.प्र.) भिण्ड जिले के मौ नगरी
19 सितम्बर 1977 ई. को एक धार्मिक परिवार में जन्में पिता श्री सुरे
चन्द जी जैन माता श्रीमती निर्मला देवी जी जैन के तृतीय पुत्र
प्राथमिक शिक्षा आपकी मौ नगरी में ही हुई वहीं आप पं. श्री पूरन चन्द जी
निर्देशन में धार्मिक शिक्षा भी पाते रहे बाद में उच्च शिक्षा हेतु आप ग्वालियर
बसे लौकिक शिक्षा में आगे बढ़ते हुए आपने मास्टर ऑफ आर्ट की उपाधि प्राप्त

आध्यात्मिक वातावरण में आगे बढ़ते हुए अनुभव प्रकाश जी निरंतर अध्ययन शील रहे हैं। विगत आठ वर्षों से आप ग्वालियर में ही अवैतनिक रूप से वीतराग विज्ञान पाठशाला का संचालन कर रहे हैं आपके द्वारा अनेक पूजन विधान भी सम्पन्न कराये गये हैं। आप लेखन, सम्पादन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विशेषरुचि रखते हैं। पहले भी आपकी 'हमारा जैन धर्म' नामक पुस्तिका प्रकाशित हुई जिसकी आज भी समाज में निरंतर मांग है, वह समाज के हर वर्ग के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है।

धर्म के बीज जो आप में शुरू से डाले गये हैं। वह निरंतर अंकुरित होकर समाज को धर्म लाभ दे रहे है, उन्हीं बीजों में से आज फिर एक बीज अंकुरित हुआ जो 'भक्ति-लहर' के रूप में हम सभी के बीच महक रहा है। वर्तमान में आप ग्वालियर में ही अपने कपड़े के व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाते हुए अपने जीवन चक्र को धार्मिक वातावरण में आगे बढ़ा रहे हैं।

जिन धर्म प्रभावनार्थ हेतु
आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं संगीतमय पूजन विधान आदि
के लिए विद्वान व्यवस्था, संपादक के पते पर सम्पर्क करें।

भक्ति-लहर

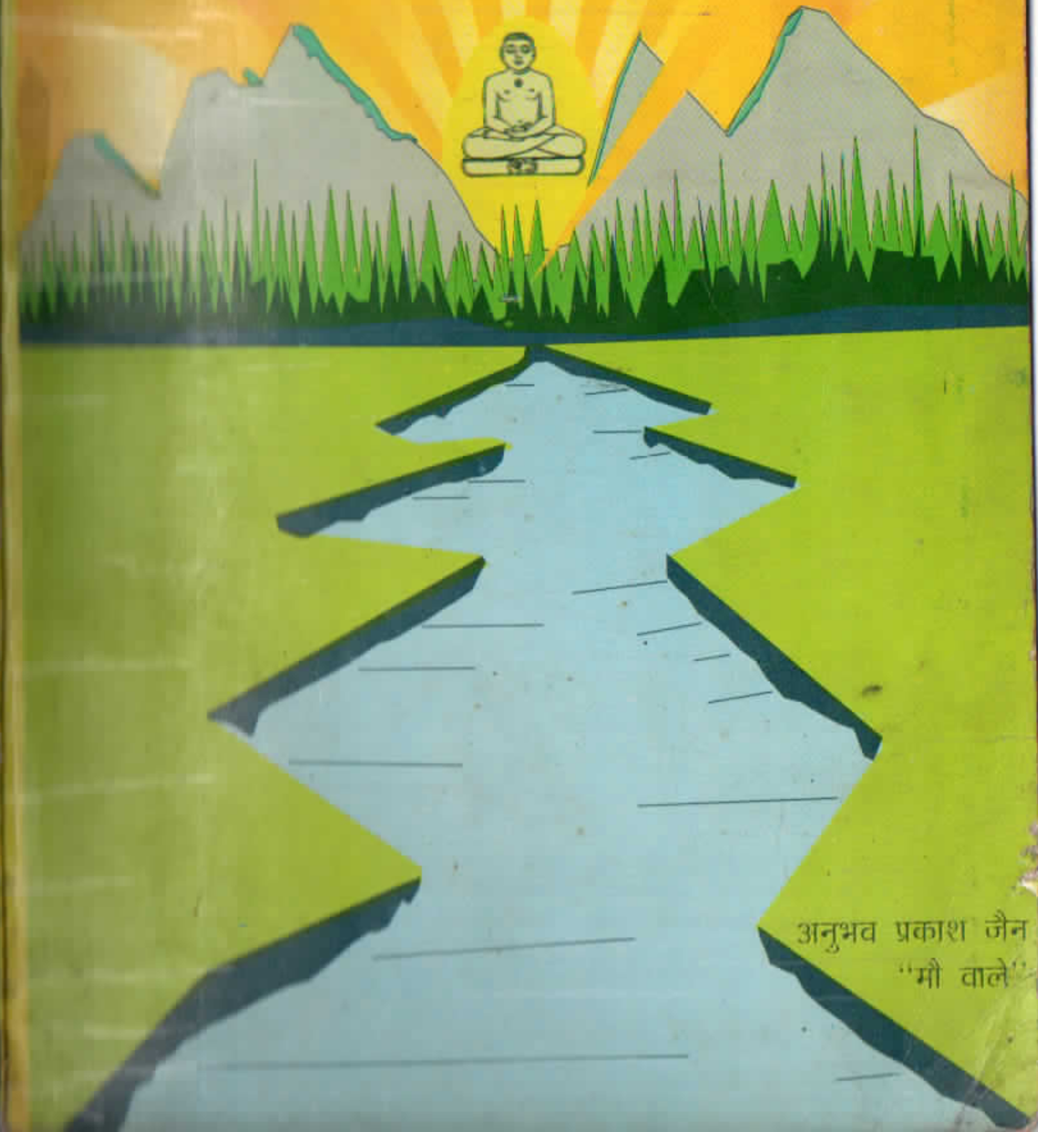

अनुभव प्रकाश जैन
"मौ वाले"

णमोकार मंत्र की आरती

ऊँ णमो अरिहंताणं स्वामी णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोऐ सव्व साहूणं .... टेक
प्रथम श्री अरहंत जिनेश्वर, गुण अनंत धारी, स्वामी.....ज्ञान
अनंते दरश अनंते -2 सुख बल भण्डारी ......टेक
दूजे सिद्ध सदा सुखदाता, शिवपुर के वासी, स्वामी ....
पूर्ण शुद्ध परमातम प्रभुजी-2 अविचल अविनाशी ....टेक
तीजे श्री आचार्य परमगुरू, छत्तीस गुणधारी, स्वामी........
पंचाचार आचारी स्वामी-2 मुनिसंघ संचारी ....टेक
चौथे श्री उपाध्याय गुरूजी, स्वाध्याय धारी, स्वामी...........
ग्यारह अंग पूर्व चौदह के -2, नित अभ्यास कारी ....टेक
पंचम सब मुनिराज लोक के , रत्नत्रय धारी, स्वामी...........
आठ बीस गुण मूल सहित है-2, शुद्धातम धारी ....टेक
ऐसो पंच णमो यारो, सव्वपापपणासणो, स्वामी............
मंगलाणं च सव्वेसिं स्वामी-2 पढ़मं होई मंगलम् ....टेक

भक्ति -लहर

卐 श्री वीतरागः नमः 卐

भक्ति -लहर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रस्तुतकर्ता

अनुभव प्रकाश जैन "मौ वाले"

(M.A.) दाना ओली लश्कर (ग्वा.)

सम्पादक

पं. पूरन चन्द जी जैन

तलहटी नं. 3 सोनागिर (दतिया)

पवन कुमार जी जैन

C/o श्री सुरेश चन्द पवन कुमार जी जैन

मौ, जिला भिण्ड

प्रकाशक

महिला मुमुक्षु मण्डल

गली नं. 12, कैलाश नगर, दिल्ली

श्री दिगम्बर जैन समाज, ग्वालियर

पुस्तक प्राप्ति स्थल

- **श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम मंदिर**
  जैन मंदिर संतर, मुरार
  ग्वालियर
- **श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर**
  गली नं. 12, कैलाश नगर, दिल्ली
- **श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला**
  श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर
  मौ, जिला–भिण्ड
- **श्री वीतराग विज्ञान पाठशाला**
  2372, गली नं. 12
  कैलाश नगर, दिल्ली
- **श्री वीर पाठशाला**
  जैसवाल जैन मंदिर जी
  दाना ओली लश्कर, ग्वालियर

मूल्य : 15 रूपये

(प्रस्तुत कृति से प्राप्त राशि अगले संस्करण के प्रस्तुतिकरण के उपयोग में ली जायेगी)

प्रतियाँ : 1111

प्रथम संस्करण 2001

: लेजर टाइप सेटिंग :

तान्या कम्प्यूटर इन्स्टीट्यूट

ताम्बे भवन, करतार सिंह मार्ग, लक्कड़ खाना,
लश्कर, ग्वालियर, फोन - 436730

प्रकाशकीय

आधुनिकता के इस युग में जीव भोग विषयों की चकाचोंध में इतना भ्रमा हुआ है कि उसे अपनी ही सुध नहीं रही है। कि मैं स्वयं कौन हूँ? क्या कर रहा हूँ? किसके लिए कर रहा हूँ? और वास्तव में मुझे क्या करना चाहिए? इन सब प्रश्नों का हल जब वह ढूढ़ता है। तो उसे कोई सकारात्मक हल नहीं मिलता और उसका मन अशांत हो जाता है। तब इस अशांत मन की शांति के लिए वह देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में आके आराधना करता है, अर्थात् पूजन-भक्ति-विधान आदि रचाता है और शांतिमयी प्रभु की शरण में शांति पाता है। तब उसे निज का भान होता है कि मैं कौन हूँ और अभी तक क्या कर रहा था.....। जीव सोचता है कि मैंने एक बार प्रभु के दर्शन-पूजन-विधान किऐ तो मेरा भटका हुआ मन शांत हुआ और जब प्रतिदिन भगवान का पूजन विधान रचाऊँगा तो कितना अच्छा होगा, ऐसा सोच वह श्री जिनेन्द्र देव की आराधना करना अपने जीवन का एक अभिन्न कार्य बना लेता है।

पूजन-विधान को रुचिकर बनाने के लिए रचियताओं ने उसमें अनेक छंदों का समावेश भी किया है और इन छंदों को वह कैसे पढ़े इस बात का ज्ञान न होने से उसका मन पुनः विचलित हो जाता है, कि इन छंदों को मैं कैसे पढ़ूँ कि मुझे अत्यधिक आनंद आवे। उसकी इस समस्या का हल करती है "भक्ति-लहर" नामक पुस्तक। अनुभव प्रकाश जी के द्वारा तैयार की गई भक्ति-लहर

नामक पुस्तक अपने आप में एक अलग स्थान रखती है इस तरह की यह पहली पुस्तक है, जिसमें कि विधान में आये हुए विभिन्न छंदों को भक्तिमय होकर कैसे पढ़ा जाय यह सब दिया गया है। भजन आध्यात्मिक-हृदयस्पर्शी हों इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है।

इस पुस्तक को प्रस्तुत करने के लिए अनुभव प्रकाश जी की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी ही कम है, किन शब्दों से मैं उनका धन्यवाद ज्ञापित करूँ शायद वो शब्द मेरे पास नहीं है। "भक्ति-लहर" पुस्तक के प्रकाशन का सौभाग्य जो हम महिला मुमुक्षु मण्डल को मिला है इसके लिए मैं पुनः समस्त महिला मुमुक्षु मण्डल की ओर से भाई अनुभव जी को धन्यवाद देती हूँ एवं पुस्तक के सम्पादन में पं. श्री पूरन चन्द जी, सोनागिर एवं श्री पवन कुमार जी, मौ ने अपना जो अमूल्य योगदान दिया है तथा पुस्तक के प्रकाशन में सकल जैन समाज ने जो सहयोग प्रदान किया है उसके लिए हम उन सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं।

हम सभी इस पुस्तक के माध्यम से पूजन-विधन को स्वरमयी, भक्तिमयी, आनन्दमयी, सम्पन्न कर अपना आत्म कल्याण करें ऐसी मंगल भावना के साथ!

सम्पादकीय

वर्तमान भौतिकवादी युग में विषयोन्मुख हो रहे प्राणियों के लिए भजन, भक्ति के माध्यम से उनको धर्माचरण में लगाने की सद्भावना से भक्ति की महिमा बताई गई है "जिने भक्ति-जिने भक्ति दिने-दिने सम्यत्वकारणं संसार वारणं" ऐसी भक्ति लहर में भावना है।

वास्तव में निज ज्ञायक स्वभाव के आश्रय से अभेद भक्ति एवं उसके साथ में शुभ राग का परिणाम भेद भक्ति है। सभी भव्यात्माओं को 'भक्ति-लहर' जीवन में प्रदर्शन के रूप में नहीं अपितु प्रवर्तन में आवे तभी उसकी सार्थकता है।

"हमारा जैन धर्म" के बाद "भक्ति-लहर" लिखकर धर्म प्रेमी बालक अनुभव प्रकाश ने एक आदर्श जीवन बने ऐसे संस्कारों के प्रयोजन से प्रस्तुत पुस्तक लिखी है

सभी लोग भक्ति भावना भाकर के आत्म कल्याण की ओर अग्रसर हो ऐसी सद्भावना है। भक्ति-लहर जन-2 में घर-2 में पहुँचे सभी साधर्मी जन उसका सदुपयोग करें तभी उसके उपयोग की सार्थकता है।

पूरन चन्द जैन
मंदिर नं. 3
मौ वाली धर्मशाला
सोनागिर, दतिया (म.प्र.)

अपनी बात

जो वीतराग हो चुके और जिनको भविष्य में होना है
जो वर्तमान में इस पथ पर चल रहे कर्म मल धोना है।
जो साधक है आराधक है जिनसे अंतस हरि हारा है
इस महत् कार्य की सिद्धि हेतु उनको शत् नमन हमारा है।।

जीवन में पुण्य कमाने के कई तरीके है कोई दान देकर पुण्य कमाता है तो कोई दीन–दुखियों की सेवा करके पुण्य कमाता है, कोई तीर्थयात्रा कर पुण्य कमाता है, तो कोई जिनेन्द्र देव की आराधना अर्थात् पूजन–विधान रचाकर पूण्य कमाता है इत्यादि अनेक प्रकार से जीव अपने जीवन में पुण्यार्जन कर सकता है। लेकिन इन अनेक प्रकार के पुण्यार्जन के तरीकों में जो सर्वश्रेष्ठ उत्तम व सरल तरीका है वह है जिनेन्द्र देव की आराधना अर्थात् पूजन विधान क्योंकि जब हम जिनेन्द्र देव की पूजन विधान रचातें है तो उसमें जिनेन्द्र देव का ही गुणानुवाद करते है, कि हे भगवान आप इस दुख रूपी संसार को तजकर, मोह रूपी अंधकार को दूर भगाकर, आपने शाश्वत सच्चा सुख प्राप्त किया है, आप अंतर्यामी हो, तीनलोक के स्वामी हो आदि गुणानुवाद करते है तब उसे एक क्षण के लिए अपनी याद आती है कि अरे मैं कौन हूँ ?और इस दुखमयी संसार में क्या कर रहा हूँ ? मैं भी भगवान की तरह मोह रूपी अंधकार को दूर कर शाश्वत सच्चा सुख प्राप्त कर सकता हूँ, ऐसी अनुभूति उसे अपने अंतर में होती है। ठीक भी है "जिस प्रकार दर्पण को देखकर शरीर का दर्शन होता है उसी प्रकार परमात्मा को देखकर निजात्मा का दर्शन होता है" यह बात अन्य प्रकार के पुण्यार्जन में नहीं है क्योंकि और पुण्यार्जन वांछा युक्त होते है और वांछा ही संसार भ्रमण का कारण है। जैसे– व्यक्ति जब दान देता है, तो वह सोचता है कि आज दान देंगे तो कल मिलेगा भी अर्थात् स्वार्थ वश दान करता है। और जब वह दीन–दुखियों की सेवा करता है तो वह सोचता है कि आज हम सेवा करेंगे तो कल हमारी भी सेवा होगी और तीर्थयात्रा करने व्यक्ति जब जाता है तो वह पहले ही अपनी कामना पूरी कर लेता है, कि हे कुण्डलपुर वाले बाबा, हे चम्पापुर वाले बाबा, अगर मेरा ये रोग दूर हो जाये या मेरी नौकरी लग जाए आदि अनेक वांछा ले वह तीर्थयात्रा करने जाता है। अर्थात् ये सब पुण्यार्जन, संसार में भ्रमण ही कराने वाले है और पूजन विधान वाला पुण्यार्जन, संसार से मुक्ति दिलाने वाला है।

प्रिय पाठको! आज जिनेन्द्र देव की आराधना के लिए कवियों ने अनेक पूजन विधान रचकर समाज पर एक अकथनीय उपकार किया है। इन पूजन विधानों में अनेक प्रकार के छंदों का भी उपयोग किया गया है। जैसे रोला छन्द, चौपाई छन्द, करिखा छन्द, सरसी छन्द आदि, अगर इन छन्दों को लयबद्ध या राग में पढ़ा जाय तो पूजन विधान में इतना अधिक आनंद आता है कि किसी अन्य कार्य की याद ही नहीं रहती है। जन सामान्य इन सब छन्दों की रागों से परिचित नहीं है, अर्थात् वह पूजन–विधान का सर्वोत्तम आनंद नहीं उठा पाते, तो सभी सामान्य जन पूजन–विधान का भरपूर आनंद उठायें इसी उद्देश्य को लेकर यह "भक्ति–लहर" नामक पुस्तक तैयार करके मैंने आप सभी के बीच प्रस्तुत की है। इस पुस्तक के अंदर जितने भी प्रकार के छंद होते है इन सभी छंदो की लय या राग क्या है एवं इस लय व राग को कितने प्रकार से कर्ण प्रिय स्वरों के साथ पढ़ा जा सकता है, उन सभी छंदों के ऊपर आध्यात्मिक भजन तैयार करके इस पुस्तक के अंदर दिये गये हैं। भजनों को अधिक से अधिक देने के प्रयास में कई भजनों को छोटे रूप में प्रस्तुत किया गया है, इस पुस्तक के अन्दर छोटे–बड़े लगभग ५०१ भजन दिए गये हैं।

समाज के लोगों की विशेष माँग होने के कारण बहुत ही अल्प समय में "भक्ति–लहर" मेरा प्रथम प्रयास है। "भक्ति–लहर" में कहीं कोई त्रुटि न रह जाय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है, लेकिन फिर भी इस संस्करण में कहीं कोई त्रुटियाँ रह गई हो या प्रिंटिंग में गल्ती रह गई हो तो कृपया आप हमें अवश्य सूचित करें जिससे अगले संस्करण में कोई त्रुटि न हो। इस पुस्तक का सम्पादन आदरणीय पं. श्री पूरन चन्द जी जैन, सोनागिर एवं श्री पवन कुमार जी जैन, मौ के द्वारा किया गया है मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। इस पुस्तक के प्रकाशन का भार महिला मुमुक्षु मण्डल, कैलाश नगर, दिल्ली ने लिया है साथ ही जिन महानुभावों ने अपनी चंचल लक्ष्मी का पुस्तक की कीमत कम करने में जो सहयोग देकर सदुपयोग किया है उन सभी साधर्मी जनों को हमारी ओर से बहुत–बहुत धन्यवाद!

अगली पुस्तक के प्रकाशन में गुरूजनों एवं विद्धुत जनों के सुझाव का अभिलाषु

अनुभव प्रकाश जैन
C/o श्री शांत कुमार जी जैन
सुभाष बाड़ा, दाना ओली
लश्कर, ग्वालियर

क्या/कहाँ

छन्द का नाम	पृष्ठ
विजात, समान सवैया, उपजाति	4
शिखरणी	5
मालिनी	6
मणुयणाणंद, विजया, करिखा, झूलना, सृग्विणी, कामनीमोहन	7
दोहा	10
वीर छन्द, ताटंक, मालती, लावनी, मरहठा माधवी, छदमत्त सवैया, बारहमासा, कुसुमलता, चूलिका, घत्ता, चकोर, शंभू छन्द, त्रिभंगी, मरहठा	27
सुन्दरी	49
चाल, पायत्ता, रेखता, सखी, चाली	51
चौपाई, धोदका, लोलतरंग, दोधक, बेसरी, डालर, मुक्तादान, मोतियाधाम, मौक्तिक धाम, मोदक	55
त्रोटक, पद्धरि	79
गीता, गीतिका, हरगीतिका, माधवमालती	85
चान्द्रायण, अडिल्ल, पीयूष	87
मानव	91
राधिका, रोला, छप्पय, रोड़क, आभानक	94
बसन्ततिलका, भुजंगप्रयात, इन्द्रव्रजा, पीयूषनिर्झर, शंखनारी, उपेन्द्रव्रजा	98
सोरठा	104
अवतार	105
सरसी, चौपैया, सार, विष्णु, जोगीरासा, चौबोला, नवसरसी, उल्लाला, अर्धजोगीरासा	106
दिग्वधू	110
दिग्पाल, दीनबन्धू	115
विधाता	120
तोमर, पंच चामर, चंचला, नाराच, अर्ध नाराच, नागरूपणी, चामर, चामरा	125

अनुक्रमणिका

भजन	पृष्ठ सं.	भजन	पृष्ठ सं.
नरभव मिला है मैं	1	मन जपले अरिहंता	12
सोनागिर सिद्धक्षेत्र मैं	4	वीर स्वामी के भवन	12
मोह माया से ये मन	4	सोते–सोते में निकल	13
ज्ञानी कहते हैं जीव	4	हे जग वन्दन	13
तुम्हारी मूरत पे	5	मैं तेरा पुजारी	13
तेरे पाँच हुए कल्याण	5	सुन रे चेतन	14
वैरागी बनना है	5	दशलक्षण त्यौहारों	14
जैनी होके ध्यानी	6	आओ झूलें मेरे	14
आया है अबकि बार	6	भक्तों का सहारा	14
प्रभु दर पै आया	6	मैं ज्ञानानंद का	15
पैदल चलके राजुल	7	करले जिनवर का	15
तू दुनियां के सारे	7	पार्श्व प्रभु जी पार	15
हम अगर वीर वाणी	8	चेतन अखियाँ खोलो	16
झूठे वैभव में चेतन	8	हमें तार दे	16
तूही चेतन चिदानंद	8	एक ही झलक	16
जिनवाणी सुन भैया	9	मैंने तेरे ही भरोसे	17
हमने देखा जहाँ	9	मैया त्रिशला तेरो लाल	17
माया मोह जाल का	9	समझो–समझो रे	17
महावीर की वाणी	9	त्रिशला का प्यारा	17
जिनमंदिर के आंगने	10	त्रिशला मैया के	18
भगवान मेरी नैया	10	वीतरागी छवि	18
आयो आयो रे शरण	10	करले आतम का	18
लागी जिनवर से	11	तिजारे वाले बाबा	18
देखा–देखा रे	11	अरहंत मंगल है	19
करूणा सागर	11	जग में प्रभु पूजा	19
मनड़ो म्हारो लाग्यो	11	मेरी अरज कहानी	19
माया में फंसे इन्सान	12	मन प्रभु की लगन	19

रोम–रोम से निकले 20
जनम–जनम तक 20
चेतन लख अपना 20
निरखों अंग–अंग 21
वृथा तूने काहे को 21
मेरा मन नाचे 21
मैंने प्रभु के चरण 21
निश दिन प्रभु तेरे 22
कितना प्यारा तेरा 22
करलो इन्द्र ध्वज 22
वीर प्रभु की जय 22
मैं वैभव पाया रे 23
गाड़ी खड़ी रे खड़ी 23
हमारे पार्श्व जिनेश 23
वीर भजले रे भाया 24
आओ–आओ जी जैन 24
म्हारों सांचो साथी 24
करो–करो रे प्रभू 25
आजा मंदिर में रोक 25
भव–भव के दुखड़े 27
अहो निहारे अद्भुत 27
चुनरिया मोरी ऐसी 28
ओंकारमयी वाणी तेरी 28
परदेशी प्यारे ! कौन 29
तोरि भक्ति बड़ी महान 29
दुनियाँ में रहें चाहे 29
जैन धर्म के हीरे मोती 29
जिसको तू खोज रहा 30
जीवन में शांति न 30
सुख का मित्र जहान 30
शुभ कर्मो से पुण्य 31
जितना देखेगा बाहर 31
दृष्टि हो बस अपने 31
रे प्राणी आ आ 31
है मनुष्य जन्म 32
जिस पिंजरे पर इतरा 32
कौन विरोधी कौन 32
आओ भाई तुम्हें 33
ममता की पतवार न 33
निज आतम देव 33
अपने घर को देख 34
जैन धर्म है हमको 34
चिदानन्द चैतन्य प्रभु 34
परम दिगम्बर मुनिवर 35
माटी का घर छोड़ 35
आया कहाँ से कहाँ हैं 35
जरा सुनले ओ चेतन 36
तन पिंजरे के अंदर 36
आत्मनगर में ज्ञान 36
तू धरले दिगम्बर 36
समझ आत्मा के 37
देखो देखो जी 37
जय जयकार करो 37
आनंद अपार है 38
यदि भला किसी का 38
मेरा नम्र प्रणाम 38
आपा नहीं जाना 39
बार बार कब मिला 39
मर–मर जाय शरीर 39
सब जैन धर्म की 40
चिदानंद चिद्रूप आतम 40
जो जो देखी वीतराग 40
ओ चेतन निज की 40
कहाँ–कहाँ तक भटक 41
जन्म मरण का तोड़ 41
एक लगन ही मेरे 42
जनम–जनम तन धरने 42
मंदिर जी में चलो 42
तेरे ज्ञान स्वरूपी आतम 43
चेतन को मिला जब 43
आत्म तत्व का करो 43
कंकड़ पत्थर गलें लगायें 44
जल से गलता रवि से 44
है नर ज्ञानी तू 44
देखा जब अपने अंतर 45
ओ वीर नाम की 45
दरश तेरा पाया है 45
परिग्रह डोरी से 46
रे दर्श को आऐ 46
जिन धर्म की क्या 46
ये दुनियां सराये 47
जिनवाणी को नमन 47
सुन चेतन प्यारे साथ 47
बैठ अकेला दो घड़ी 48
तुम कब तक घूमोगे 49
ज्ञानमयी चेतन तुझे 49
आतम ही महान 49
आतम में आतम में 50
मेरा प्रभु सबसे 50
तेरो सब संकट 51
जो मानुष तन को 51
तेरा दो दिन का 51
नित उठ शीश 52
रे मन कर लो 52
भेष दिगम्बर धार 52
बिन पूजन पड़े न 52
भव फेरा करते डोला 53
चाह मुझे है दर्शन 53
संतों से सुना है 53
तू तो आत्मा अकेला 54
मन में सोच विचार 54
पहिना गये श्री 55
हूँ स्वतंत्र निशचल 55
धन्य धन्य जिनधर्म 55
आतमराम मैं 56
मेरी परणति में 56
निजपुर मे आज 56
क्यों न ध्यान लगावे 56
अब लगा ले लगन 57
जहाँ मोक्ष गये प्रभु 57
मंदिर हमारे में आ 57
खाली पुदगल पड़ा 57
वीर नाम सुखदाई 58
प्रभु रथ में हुये 58
जिन मंदिर में धर्म 58
तुम सुनो श्री महावीर 58
चन्द्र प्रभु भगवान 58
मोक्ष परम पद 59
तेरे दर्शन से 59
त्रिशला के नंद 59
कैसे करूँ गुणगान 59
प्रभु नाम जपले 60
जय जय जय जिन 60
महावीर की वाणी 60
मेरे मन मंदिर में 60
पारस नाम पारस 61
म्हारे अंगना में आये 61
पार लगा पार लगा 61
धुन रे धुनिया अपनी 61
चाल म्हारा भायला 62
शिवपुर की पकड़ो 62
मोह की महिमा 62
भूला है स्वयं आतम 63
मंत्र जपो नवकार 63
अहो ज्ञायक देव 63
मोहे भावे न भैया 64

ग्वालियर नगर में 64
बीती जाये उमरिया 64
जिनवाणी मां 64
नाम प्रभु का बोले 65
होली खेले मुनिराज 65
वीर गये निर्वाण 65
मेरी जान जाय तो 66
ये शाश्वत सुख का 66
भजो रे मन श्री 66
शुद्धातम शुद्धातम 66
ये नरतन पाया तूने 67
अपना ही रंग मोह 67
रंग मां रंग मा रंग 67
आओ भवि जिनवर 67
मां जिनवाणी ज्ञायक 68
अनुभव बिन आतम 68
सुन रे जिया 68
ज्ञायक प्रभु को 68
जिनवर तू है चंदा 69
हुआ इन्द्रध्वज का 69
वरदान तुमसे प्रभु 69
मनुष्य जन्म को 69
मेरे अंगना आए 70
साँची कहूँ तोरे 70
पुजारी ! हृदय के 70
रंग बरसे ले ले 70
मुझ दुखिया की 71
महावीरा झूले पलना 71
जिन पूजन करले 71
करले आतम ज्ञान 71
गा रे भैया गा 72
वीर प्रभु का है 72
होय–होय के 72
निज घर में अब 72
जैन मंदिर हमको 73
छोटा सा मंदिर 73
प्रभुजी मैने अवगुण 73
तुम्हारी महिमा को 73
फंसा हुआ क्यों 74
मैं आया रे 74
जिनवर भक्ति 74
जप ले प्रभु का 75
मेरी परिणीत में 75
चेतो चेतन निज 75
राही राम नाम 76
हमने तो घूमी चार 76
जिन देख मगन 76
तेरे दर्शन से भगवान 76
घड़ि–घड़ि पल–पल 76
महावीर पधारे भैया 77
मंत्र जपो नवकार 77
जब चले आत्माराम 77
मुनिवर आज मेरी 77
रिम झिम उड़े रे 78
मंदिर में आऊँगा 78
जिनवर की होवे 78
मैंने धार लिया 78
भोला आत्मा में 79
जिनवाणी सुनलो 79
झूठ बोले पाप 79
पावन तेरा प्रभु 79
हम सब कुछ अपना 80
यह धर्म है आतम 80
आप न होते–ज्ञान 80
स्वाध्याय करो 81
आचरण तुम्हारा 81
महावीर प्रभु मेरी 81
यह तन जावै तो 81
हे परम दिगम्बर 82
पुद्गल क्या देखते 82
एक प्रेम पुजारी 82
महावीर प्रभु के 82
मिलता है सच्चा 83
अब गतियों में 83
चल दिया छोड़ घर 83
हे वीर तुम्हारे द्वारे 83
चेतो–चेतो चतुर 84
क्यों न ध्यान 84
चाँदनपुर के 84
धन्य मुनीश्वर 85
तन नहीं छूता 85
संत साधु बन 86
जाना नहीं निज 86
सुन–सुन भैया 87
जब तेरी डोली 87
वीरनाथ भगवान 87
हे प्रभु! चरणों में 88
आत्मा हूँ आत्मा 88
चन्द क्षण जीवन 88
कैसे–कैसे रंग 89
कब हम वहाँ 89
बार–बार तोहे शीश 89
झूम–झूम के प्रभु 90
जिनमंदिर–जिनमंदिर 90
नेमी दर पर आते 90
जीवन के किसी 91
सुनलो महावीर की 91
तुम राग–द्वेष से 91
दर्शन को आया 92
हे वीर वतन के 92
जीवों का जिसके 92
तू जाग रे चेतन 93
आओ जिन मंदिर 94
मुनिराज समागम 94
मन पर काबू कर 95
जीव तू अप्पा लगता 95
घट–घट जीवन 96
मैं तो आरती 96
तुम जपो मंत्र 96
तुम तो प्रभु 97
छोड़ो पर की 97
आतम हूँ आतम 98
हमें नाथ जग में 98
तुम्हीं मेरे भगवन 98
प्रभु दर्श कर आज 99
प्रभु वीर का आसरा 99
जयन्ति.का उत्सव 99
सुबह शाम जिसको 99
लगन लागी भगवन 100
लगाओ प्रभु से 100
वीर गुण गा 100
मन में ये सोचत 100
गोपाचल पर्वत का 101
भजले पारस अति 101
मैं महापुण्य उदये 101
बड़े भाग्य से 102
मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक 102
त्रिशला के भवन 102
इन्ही कर्मों ने इन्ही 102
अरे दुनियां वालों 103
आतम का जब 103
दिन रात स्वामी 103
करना मन ध्यान 104
लिया प्रभु अवतार 104
पारस की जय 104
आनंद श्रोत बह 105

बजे कुण्डलपुर में 105
मेरे प्रभु वीतराग 105
अरे मन आतम को 106
आतम की जोत 106
आज हम जिनराज 106
हमको भी बुलवा 107
आये–आये रे 107
गगन मण्डल में 107
हे परम दिगम्बर 108
वीतराग निर्ग्रन्थ 108
धर्म बिन कोई 108
लहर–लहर लहराये 109
भावना रथ पर 109
जिनागम पाया है 109
धन्य–धन्य जिन 110
नरतन को पाकर 110
भगवान मेरी नैया 111
ज्ञानी के सहारे हो 111
संसार तो सपना 111
सुन भैया सुन बात 112
अविनाशी आतम 112
मैं आया तेरे 112
जिया कब तक 113
भक्तों के आंगन 114
माता तू दया 114
आये है तेरे दर 115
सज–धज के जिस 115
चेतन स्वरूप तेरा 115
गर हो जनम 116
जिनवर के ये 116
भगवन समय हो 116
कुछ काम करके 117
प्रभु वीर की 117
कैसे तुम्हें रिझाऊँ 117
दिखता है ज्ञान 118
परदा पड़ा है मोह 118
समकित से कब 118
आचार्य कुंद–कुंद 119
चरणों में आ पड़ा 119
हमने तो धर्म पाया 119
किसको विपद 120
तत्वों का सुन्दर 120
तेरे दरबार में 120
समझ उठ चेत 121
अगर महावीर के 121
तेरे चरणों में सर 121
भाव वैराग दर्शावे 122
जगत में आत्म पावन 122
तुम्हारे दर्श बिन 122
सजन अखियाँ 123
परम उपकारी 123
अहो भगवंत का 123
करो कल्याण 123
है चमका भाग्य 124
तिहारे ध्यान की 124
हमें जिनधर्म पर 124
पतित–पावन तरण 125
हम लाऐ हैं 125
जिनवर की वाणी 126
अब क्या मिसाल 126
प्रभु की शरण में 126
आचार्य कुंद–कुंद 127
चाहे लाख तूफां 127
मेरी आत्मा में 128
भरत बाहुबली संवाद 128
देखा मैंने त्रिशला 130
गूँजते स्वर 132
धन्य–धन्य 143

मेरा निश्चय

नरभव मिला है मैं अर्पूव कार्य करूँगा
पाया जिन शासन अब भव का अभाव करूँगा
है मेरा निश्चय है सम्यक निश्चय.......

मिथ्यात्व वश अनादि काल से ही रूल रहा
गति–गति में खाते ठोकरें मैं अब तो थक गया
जिन दर्श से निज दर्श कर मैं मोह तजूँगा...

इन्द्रिय सुखों की कामना अब है नहीं मन में
उपसर्ग की परवाह नहीं जाकर बसूँ वन में
निर्द्वन्द हूँ स्वभाव से निर्द्वन्द रहूँगा....

भव रहित भगवान अंतर मांहि दिखाया
भगवान होने का सहज विश्वास जगाया
निज के आंनद में ही निज से तृप्त रहूँगा......

देहादि से अति भिन्न हूँ न्यारा विभाव से
एकाकी शुद्ध निर्मम हूँ ज्ञायक स्वभाव से
स्वाधीन निर्भय एकाकी अति तृप्त रहूँगा........

चैतन्य की अदभुत शोभा ही भाई है मुझे
अक्षय विभूति सिद्ध सम सुहाई है मुझे
झूठे प्रपंचों में फंसकर दुख अब ना सहूँगा.....

रे कर्म अपने ठाठ तू दिखाता है किसे
प्रतिकूलताओं का भी भय दिखाता है किसे
निरपेक्ष ज्ञाता रूप हूँ ज्ञाता ही रहूँगा........

जिनको अंनतों बार भोग–भोग कर छोड़ा
हैं वे ही भोग नहीं नवीन चित्त है मोड़ा
अज्ञान वश उच्छिष्ट भोगी अब ना बनूँगा.....

निज के लिए निज में ही भरा सुख अतीन्द्रिय
भोगूँगा अनंतकाल मैं बनूँगा जितेन्द्रिय
है द्वार मुक्ति का मिला भव में न रूलूँगा.......

दुख के पहाड बाह्य को प्रवृति मार्ग में
आनंद की हिलोरें है निवृत्ति मार्ग में
उल्लास से निवृत्ति के मारग में बढूँगा ....

इस मार्ग में कुछ पाप तो होते ही नहीं हैं
रे पूर्व बन्ध भी सहज खिरते ही सही हैं
कैसे कहो फिर दुख की कल्पना भी करूँगा....

निंदा करें वे ही जिन्हें कुछ ज्ञान नहीं है
अनुमोदना करते जिन्हें निज ज्ञान सही है
कुछ हर्ष या विषाद मैं मन में न धरूँगा ......

असहाय परिणमन है सर्व द्रव्यो का सदा
वांछा सहाय की नहीं मन में भी हो कदा
विश्वास निजाश्रय से ही शिव पद भी लहूँगा..

स्वभाव से निर्मुक्त हूँ स्वीकार है हुआ
स्वभाव के सन्मुख सहज पुरूषार्थ है हुआ
ध्याऊँ सहज शुद्धात्मा सम दृष्टि रहूँगा......

भवितव्य वली काल लब्धि आई है अहो
निमित्त भी मिले मिलेंगे योग्य है अहो
हर हाल में आराधना मैं थिर ही रहूँगा......

विघ्नों के भय से मूढ़ हो निज लक्ष्य नहीं भजते
विघ्नों के आने पर भी धीर मार्ग नहीं तजते
निश्चित निराकुल हुआ निज साध्य लहूँगा....

सब जीवों के प्रति मेरे सहज क्षमा भाव है
करना क्षमा मुझको क्षमा आतम स्वभाव है
त्यागा है मोह–राग आग मैं न जलूँगा....

पाया है ऐसा मार्ग जिसके बाद मार्ग ना
पाऊँगा ऐसा सुख जिसके बाद दुख ना
जिसका न हो अभाव वह प्रभुत्व लहूँगा.....

पाया स्वरूप झूठे स्वांग अब नहीं धरूँगा
चैतन्य महल है मिला भव नहीं भ्रमूँगा
द्रारिद्र फिर जिसमें न हो वैभव वह लहूँगा......

संयोगों का मैंने वरण कीना अंनत बार
वियोग के दुख में जहाँ टूटे सदा पहाड़
निश्चय किया अतएव ध्रुव स्वभाव वरूँगा......

तज करके मोह देखो यह आंनद मय मारग
निशंक हो जानो सभी आंनद मय मारग
आंनदमय जिन मार्ग का प्रभाव करूँगा.........

इस मार्ग से ही पाया है भगवन्त ने भव अन्त
इस मार्ग में विचरें अभी भी ज्ञानी साधु सन्त
उनका ही करना अनुसरण निजानुभव करूँगा...

चिंता नहीं विभावों की नशेगें वे स्वयं
निर्ग्रंथ हो निज भाव में ही रमण सहज निशंक
होता हुआ शिव होगा सहज ज्ञाता रहूँगा...

श्रद्धेय बाल ब्र. पं. श्री रवीन्द्र कुमार जी जैन

इस पाठ का प्रतिदिन स्मरण करें एवं दिग्पाल छन्द के साथ पढ़ा जा सकता है।

शोक उसी का कीजिए जो अनहोनी होय
अनहोनी होती नहीं होनी है सो होय

विजात समान सवैया उपजाति

तर्ज– मैं तुम्हें छोड़के कहाँ............ दिल

सोनागिर सिद्धक्षेत्र मैं जाऊँगा
भगवन चन्द्रा प्रभु के दर्शन में कर अपना जीवन सफल मैं बनाऊँगा ....टेक
त्याग की मूरत है मेरे प्रभुवर, ज्ञान की गंगा ये तो बहायें
देखके प्रभु की शांति मुद्रा, भक्तों के मन में भाव जगायें
मोह न माया जरा, पाप न कोई करम
अपने में अपने को पा काटे है सारे भरम ....टेक
बाइस परिषह को जीता है, तत्वों का लेकर के अवलम्बन
लोक शिरोमणि आप है प्रभुवर, करता हूँ तुमको शतशत बंधन
जाना न मैंने धरम पाले हैं कितने भरम
राह बताओ मुझे काटूँगा अपने करम ....टेक

तर्ज – इन अदाओं से ये दिल बचाये...........

मोह माया से ये मन बचाये, कोई दुर्गति में न मार खाये
इतने दुःख है इन दुर्गति में, कि हर दम करे हाय–हाय ....टेक
मोह माया के कारण ही अब तक संसार में दुख पाये हुऐ
इसने ही कीनी दुर्गति है सबकी भव–भव में सबको भ्रमाये हुए [2]
छोड़ दे मोह माया का चक्कर, फिर न भव में फिरे दुःख उठाये.........टेक
तीर्थंकरो ने त्यागी थी इसको पूर्ण सुखी वो निज में हुये
निज का ही निज में आश्रय वो लेकर पूर्ण स्वयं स्वाधीन हुये [2]
त्याग अनुभव तू ये मोह माया, निज आतम को तू पा जाये ....टेक

तर्ज – पापा कहते हैं.......... कयामत से कयामत तक

ज्ञानी कहते हैं जीव ज्ञान करेगा, जीव सदा केवल ज्ञान करेगा
मगर ये तो कोई न जाने कि मेरी मुशकिल है कहाँ ....टेक
मेरा जो अपना गुण सर्वदेखो उस की भी शान्ति है अपार
सम्यक्त्व चारित्र गुणो का गुलशन, गुलशन में ध्रुव की खुशबू अपार
कर्ता बुद्धि का सर्व नाश करेगा, ज्ञान ही ज्ञान वश ज्ञान करेगा
मगर ये तो ....टेक

तर्ज – सुनाई देती है दिल............ गुलामी

तुम्हारी मूरत पे हमने देखा, गजब की समता झलक रही है
तुम्हारे अंतर की रश्मियों से अनंत सृष्टि झलक रही है .....टेक
हजारों भानुओं की प्रभा भी शर्म से मस्तक झुका रही है
तुम्हें विलोकन को इन्द्र तरसे, नव निधियां छटपटा रही है ....टेक
अनंत गरिमा है उनकी हमको, मिले नहीं जग में कोई ऐसा
पुण्य–पाप का ना होवे कीचड़, दिव्य ध्वनी यहां बरस रही है ....टेक
लाख चौरासी में आना जाना, नहीं मिली एक समय भी फुरसत
अजर अमर पद पाऐंगे हम तो गजब दामिनी दमक रही है ....टेक

तर्ज– तेरे पाँच हुए कल्याण प्रभो..............

तेरे पाँच हुए कल्याण प्रभो–2 इक बार मेरा कल्याण कर दे
अंतर्यामी, अंतर्ज्ञानी, प्रभु दूर मेरा अज्ञान कर दे ....टेक
गर्भ समय में रतन जो बरसे, उनमें से एक रतन नहीं चाहूँ
जन्म समय क्षीरोदधि जल से इन्द्रों ने किया वो नव्हन नहीं चाहूँ
जो चित्त को निर्मल शान्त करे, वही गन्धोदक मुझे दान कर दे ....टेक
धार दिगम्बर वेश किया तप, तप कर विषय विकार को त्यागा
निर्ग्रन्थों का वेश अपनाकर, निज आतम का ध्यान लगाया
अपने लिए बरसों ध्यान किया, मेरी ओर भी थोड़ा सा ध्यान कर ले .....टेक

ॐ शिखरणी ॐ

तर्ज– मौसम का बहाना है .... यलगार

वैरागी बनना है जरा देर लगेगी
मद मोह छुड़ाना है जरा देर लगेगी ....टेक
इन्द्रिय सुख ही में .... दिन रात निकलते है
संयम ही–संयम ही सजाना है जरा देर लगेगी ....टेक
हर वक्त जुबां पर वीर .... तेरा नाम रहे चाहूँ
तेरे संग–तेरे संग रंग जाना है जरा देर लगेगी ....टेक
महावीर के ही पथ पे ...... अनुभव चाहे चलना
मुक्ती को–मुक्ति को पाना है जरा देर लगेगी ....टेक

मालिनी

तर्ज- दीदी तेरा देवर दीवाना .... हम आपके हैं कौन

जैनी होके पानी न छाना, मन रे रातों को खाये खाना ....टेक
नियम ऐसा लेते, जिसे न निभाते
तो चौरासी योनि में चक्कर लगाते
पाया है ये नरभव सुहाना, मन रे रातों को खाये खाना .....टेक
ये नर भव है पाया उत्तम कुल पाया
पर भोग विषय में ही सब ही गवांया
बीता जाये अवसर सुहाना, मन रे रातों को खाये खाना ......टेक

तर्ज - देखा है पहली बार................ साजन

आया है अबकि बार तत्वों का इतना विचार
अंश भी खाली नहीं वैभव भरा है अपार
शुद्धातम से मिलने को दृष्टि गई अबकि बार ......अंश भी खाली ....टेक
परसे हटाँऊ मुझे मुझ में लगाँऊ
अब बिन मेरे मैं तो कुछ सोच न पाऊँ
ये मेरा नगर है ये मिला अवसर है,
ये मेरी आत्मा ये ही चिर अमर है ......टेक
मेरी सदा है ये अद्‌भुत निशानी,
अनादि निधन है ये मेरी कहानी
ये मेरा भवन है ये मेरा ठिकाना,
अब गई अड़चने तजदूँ परका सहारा ....टेक

तर्ज - तरे दर पै आया .... लैला मजनूं

प्रभु दर पै आया हूँ प्रभु दर्शन पाऊँगा
प्रभू दर्शन से ही मैं प्रभु सा बन जाऊँगा ....टेक
वो सबके दाता हैं, तेरे भाग्य विधाता हैं
तू सच्ची प्रीत लगा, मन बांछित फल को पा.......टेक
प्रभु के दर्शन से ही निज दर्शन होते है
प्रभुवर की वाणी सुन भव से तिर जाऊँगा ....टेक

कामनी मोहन
सृग्विणी- मणुयणाणंद -करिखवा
झूलना विजया

तर्ज - डोली चढ़के दुल्हन................

पैदल चलके राजुल वनवास चली, कैसी हसरत से नेमी की देखे गली ......टेक
दिल न माने मगर आज जाना भी है, अपने नेमी से वायदा निभाना भी है
सामने एक जिन्दगी है मगर, पीछे गुजरा हुआ एक जमाना भी है ....टेक
छोड़ के तुम तो मुझको चले ही पिया, धीर कौन बंधायेगा मेरा जिया
किस जन्म का बदला ये मुझसे लिया –2
न तो क्वांरी रही न सुहागिन बनी, मेरी नैया ही बीच भवंर में पड़ी
नाथ तुम छोड़ के जा रहे हो अभी –2 ....टेक
तुम जाते हो में क्या करूँगी यहाँ, तुमरे संग में भव से तरूँगी यहाँ
साथ ही साथ में मुक्ति पाऊँगी हा –2 ....टेक

तर्ज - कोई जब तुम्हारा हृदय............. पूर्वपश्चिम

तू दुनियां के सारे विषय छोड़ दे, जिन पन्थ से नेह तू जोड़ दे
जरा सोचले कुछ ता अपने लिए
ये नरतन मिला है मिला न रहेगा सदा के लिए .....टेक
ये दुनिया है मेला यहां पर तुझे रंगी खिलौने तो मिल जायेंगे
मगर सोच रंगी खिलौने ही ये कब तेरे मन को बहलायेंगे
यौवन का मधुमास जाने लगे, बुढ़ापे का पतझड़ जब आने लगे
जलेंगे न तब साधना के दीये
ये जीवन मिला है मिला न रहेगा सदा के लिए ....टेक
मुसाफिर सभी इक डगर के यहां हुई मोर सब ही बिछुड़ जायेंगे
मिलेगा सफर का न सामां कोई तो पंकज किये पर ही पछतायेंगे
विदा की घड़ी जबकि आने लगे, अपने भी दामन बचाने लगे
कोई भाई बन्धु न कोई प्रिये
ये बन्धन मिले है मिले न रहेंगे सदा के लिए .... टेक

ऐसी लागी लगन सब हो गए मगन, सब घड़ी-घड़ी प्रभु गुणगाने लगे।
प्रभु के दर्श किए निज के दर्श हुए, हम प्रभु के ही भक्त कहाने लगे।।

तर्ज – तुम अगर साथ देने का ....

हम अगर वीर वाणी पर श्रद्धा करें, ज्ञान के दीप जलते चले जायेंगे
गर जले ज्ञान के दीप हृदय में तो, मार्ग संयम के खुलते चले जायेंगे .... टेक
हमने पाया है मुश्किल से यह नर का तन, देव तरसे जिसे ऐसा पाया रतन
गर इसे हमने विषयों में ही खो दिया भूल पर अपनी खुद हम पछतायेंगे .... टेक
अब मिला है ये जिनधर्म जिनवर शरण, जिनवाणी मिली और ये अमृत वचन
मोह ममता से थोड़ा भी हम हटें, मार्ग कल्याण के खुद ही खुल जायेंगे .... टेक
जब नहीं सच्ची श्रद्धा तो क्या अर्थ है, इस बिना ज्ञान और आचरण व्यर्थ है
हम पुजारी बने वीतरागी के तो, कर्म बंधन भी कटते चले जायेंगे .... टेक
हम पालेंगे अपने ये जिनधर्म को, सच्ची श्रद्धा हृदय ले श्री धर्म को
अब रखना अनुभव श्रद्धा जरा, दुख जग के ये सारे कट जायेंगे .... टेक

तर्ज – झूठे वैभव में चेतन फंसे...............

झूठे वैभव में चेतन फंसे मत रहो, संग में तेरे कुछ भी नहीं जायेगा[2] ....टेक
कितने जन्मों में तुमने सहा दुख मगर, सच्चा सुख है कहां अब तक जाना नहीं
पर को अपना समझ तूने अय बाबरे, कौन हूँ में यह तूने जाना नहीं
अब भी जिनधर्म पर तू श्रद्धा करे,
खुद के ईश्वर को इक दिन तू पा जाएगा ....टेक
महिमा जिन धर्म की कुछ जाने न तू, अग्नि जल हो गई सीता के ध्यान से
खुल गया द्वार बन्द अंगुष्ठ लगते तलक, धन्य मनोरमा तेरे धर्म ध्यान से
करले श्रद्धा तू चेतन निज धर्म पर
मुक्ति रानी को एक दिन तू पा जाऐगा ......टेक

तर्ज – तूही चेतन चिदानंद चिद्रूप है.............

तूही चेतन चिदानंद चिद्रूप है चित्त में न समाये तो मै क्या करूँ
ज्ञान गुण से भरा तेरा भण्डार है कुछ समझ में न आये तो मैं क्या करूँ ....टेक
शास्त्र पाठ किया पूजा जाप किया, मन में मैं का अंहकार छोड़ा नहीं
मरकर मैं मैं करे धरकर बकरे का तन, अपना सिर भी कटाये तो मैं क्या करूँ ...टेक
झूठ चोरी कुशील व हिंसा बुरी, आत्मा का घात करने की पैनी छुरी
समझने से न समझे अगर अब भी तू, मार नरको में खाये तो मैं क्या करूँ ....टेक

मंदिर आओ भैया, पूजन करो भैया –2
थारे पाप नशें, तुम्हे पुण्य मिले –2 ....टेक

तर्ज – रमैया वस्ता भैया ....

जिनवाणी सुन भैया, जिनवाणी सुन भैया
तेरे सब कर्म कटें, तुझे सद्ज्ञान मिले ....टेक
ज्ञान की चाँदनी जिसके दिल में खिली, उसके मिथ्यात्व का सब अधेंरा गया
वीतरागी को लख वीतरागी बनो, बस समझलो कि भव–भव का फेरा गया ....टेक

तर्ज – हमने देखा जहाँ........

शेर –नदी मंजिल पे पहुँचे तो किनारे छोड़ देते हैं आये पतझड़ तो पत्ते भी डाल छोड़ देते हैं
मोहब्बत किससे करना है जरा सोचो अरे नादां, उड़े पंछी तो अपने भी ये नाता तोड़ देते है
हमने देखा जहाँ कुछ न पाया यहां, कलिया टूटी तो सारा चमन रो रहा।
जिन्दगी को जियो बन्दगी के लिए, पाया नरतन तो सपनों में क्यों खो रहा ....टेक
आसमाँ पर उड़े या जमीं पर चले, चाहे सागर से गहरा उसे खोजले
शेर –कहीं वो चाँद सितारों में नजर आता है, कहीं वो मस्त बहारों में नजर आता है
यहीं तो आदमी सपनो मे आके खोया है, बाहर ढूंढता भीतर न खोज पाता है
आईने में स्वयं को स्वयं देखले, आईना दूसरों का तू क्यों धो रहा ......टेक
मौत आई तो जीवन का अंदाज है, जिन्दगी है तो तुझको खबर ही नहीं
शेर –मौत ने जिन्दगी को घेरा है, मौत जीवन का अन्त डेरा है
मौत से डर न हो तो इन्सां को, जिन्दगी का हर पल सबेरा हो
मौत पुद्‌गल की है आत्मा की नहीं, दीप मन में जला बाहर क्या रो रहा ......टेक

तर्ज – तेरे मेरे बीच में ....

माया मोह जाल का कैसा है ये बंधन अन्जाना
मैने नहीं जाना तुमने नहीं जाना .....टेक
एक सुन महिमा दूजा दौड़ा चला आये, इसकी माया से कोई बचने न पाये
ऐसे जैसे कोई ओ...... ऐसे जैसे कोई कुछ पाना ......टेक
कितनी ही दुनियां घूमी कुछ भी ना पाया, आखिर प्रभु तेरे द्वारे ही आया
खुद सा ही ओ....... खुद सा ही हमको बनाना ....टेक

तर्ज – कर चले हम फिदा जानो तन.....

महावीर की वाणी सुनो साथियों, सुख कहां है सभी जान लो साथियों ....टेक
हिंसा करते चले आ रहे है सभी, अंहिसा को समझने की फुर्सत नहीं
आत्म कल्याण की बात समझे नहीं, इसको समझे बिना मुक्ति मिलती नहीं
है बहुत ही कठिन नर भव साथियों ....टेक
धार लो अहिंसा व्रत को तुम अभी, वीर उपदेश दिल से भुलाना नहीं
णमोकार बिना शान्ति मिलती नहीं, जिनवाणी को दिल से भुलाना नहीं
आज दे दो वचन ये सभी साथियों ....टेक

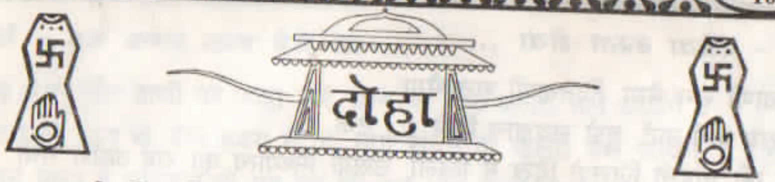

तर्ज – आगरे से घाँघरा................

जिनमंदिर के आंगने बुलाले वीरा मैं तो दर्शन करने आऊँगा
दर्शन करने आऊँगा मैं तो वंदन करने आऊँगा ....टेक
जिनमंदिर के बीचों बीच मान को स्तम्भ है
मान को स्तम्भ या में चतुर्मुखी तेरा बिम्ब है
बिम्ब में ज्योति है ज्योति में चमके वीरा ....टेक
भैया आये बहिना आये मैं कैसे रह जाऊँगा
जनम जनम के पाप कटेंगे आतम ज्योति जलाऊँगा
दर्शन करके मेरी मिट जाये सारी पीरा ....टेक

तर्ज– बचपन की मुहब्बत को.............

भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना
संभव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ–
पर नाथ कहीं तुम भी मुझको न भुला देना .....टेक
मैं भटक रहा हूँ ये कर्मों के चक्करों में
प्रभु देखते न रहना तुम आके बचा लेना ....टेक
दर दर का पुजारी मैं आया में शरण तेरी
मझधार फंसी नैया चरणों में जगह देना ....टेक

तर्ज – आयो आयो रे ....

आयो आयो रे शरण महावीर, पार करो मेरी नैया ...टेक
पाप भरी है मेरी नैया डगमग झोखा खाये
राग की बल्ली टूट गई है खेवट नजर न आए
नैया वह रही है हमारी भव तीर .....टेक
माया आर ममता की लहरें निशदिन देय हिलायें
आशा तृष्णा मांहि फंसी है मिलता नहीं किनारा
खिच रही रे कुमति के तीर .....टेक

केशरिया चावल रंग वाद्ले–2 सिद्धचक्र मंडल विधान की पूजन रच वाद्ले,
केशरिया चावल रंगवाद्ले .... टेक

तर्ज – लागी जिनवर से नजरिया...............

लागी जिनवर से नजरिया कैसी सुघड़ी
कैसी सुघड़ी स्वामी कैसी सुघड़ी ....टेक
तेरे नित दर्शन करने से पाप होत सब दूर
स्वर्ग सम्पदा छिन में मिलती कर्म होय चकचूर
मिट जाय चहुंगति की भंमरिया, कैसी सुघड़ी .....टेक
बहुत दिनों से भटकत–भटकत दर्शन पाये तेरे
सकल मनोरथ सफल भये है धन्य भाग्य भये मेरे
निरखत नैनों से सवरिया, कैसी सुघड़ी ....टेक

तर्ज – देखा–देखा रे चिदानंद रूप.............

देखा–देखा रे चिदानंद रूप, सहज सुख पायो है
भागे–भागे रे मोहादिक भाव, धर्म प्रगटायो है ....टेक
दोषों का अस्तित्व न किंचित, अनन्त गुणों का सागर
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्र रत्नों का जो रत्नाकर
पायो–पायो रे प्रभु निज धाम, हृदय उभगायो है ....टेक
नहीं बदलता घटता बढ़ता शाश्वत आतम राम
पर्यायें प्रतिसमय बदलती फिर भी ध्रुव अभिराम
पर से भिन्न पूर्ण निजभाव, शरण में पायो है ....टेक

तर्ज – ऐ मेरे दिले नादान...............

करूणा सागर भगवान मोहे पार लगा देना
तुफां है बहुत भारी मेरी नाव बचा लेना ....टेक
मोही बनकर मेने अब तक जीवन खोया
अपने ही हाथों से काटों का बीच बोया
अब शरण तेरी आया मोहे पार लगा देना ....टेक
वीरा तेरी भक्ति से सब दुख मिट जाते हैं
अज्ञान तिमिर मिटता, सुख का फल पाते है
अब द्वार खड़ा तेरे चरणों में जगह देना .....टेक

तर्ज – मनड़ो म्हारो लाग्यो................

मनड़ो म्हारो लाग्यो प्रभु दर्शन में, दर्शन में निज दर्शन में....... टेक
वीरागता देख प्रभु की मिथ्यातम विनशाऊँ
भेदज्ञान की ज्योति जलाकर आतम गुण प्रगटाऊँ
शुद्धातम को पायेंगे रे क्षण भर में ....टेक

तर्ज – *माया में फंसे इन्सान..........*

माया में फंसे इन्सान, विषयों में न बह जाना –2
चिन्मय चैतन्य निधि को भूल न पछताना ....टेक
तन धन वैभव परिजन तेरे काम न आयेंगे –2
संयोग सभी नश्वर तेरे साथ न जायेंगे
तू अजर अमर ध्रुव है यह भाव सदा लाना ...टेक
चैतन्य सदन वासी तू ज्ञान दिवाकर है –2
है सहज शुद्ध भगवन तू सुख का सागर है
अपने को जरा पहचान विषयों में न खो जाना .....टेक
लख चौरासी भ्रमते दुर्लभ नरतन पाया –2
जिनश्रुत जिनदेव शरण पुण्योदय से पाया
आतम अनुभूति बिना रह जाये न पछताना ......टेक

तर्ज – *मन जपले अरिहंता..............*

मन जपले अरिहंता, महावीरा तेरा प्यारा नाम है
महावीरा तेरा प्यारा नाम है, अतिवीरा तेरा प्यारा नाम है ....टेक
कुण्डलपुर में जन्म लियो, जग में छाया उजयारा –2
वर्धमान कह त्रिशला मां ने, पहली बार पुकारा ....टेक
काला नाग देव बन आया, बड़ा त्रिसंकट छाया –2
फेंक दिया उस काले नाग को वीरा वीर कहाया ....टेक
बिगड़ा हाथी कौन सम्हाले जनता शोर मचाये –2
वीर प्रभु ने पकड़ा हाथी अतिवीर कहलाये ....टेक
ज्ञानी ने ज्ञानी को देखा बोले ज्ञान की वाणी –2
अनुभव मुनियों ने रखा तेरा नाम सन्मति ज्ञानी ....टेक
सारे कर्म नष्ट प्रभु कीने पाया मोक्ष महल है –2
मंगल दीपावली के दिन सब महावीर गुण गाए ....टेक

तर्ज – *वीर स्वामी के भवन में...............*

वीर स्वामी के भवन में देखो जय जय जय
जय जय जय –2 हो भवन में जय जय जय ....टेक
चांदनपुर इक ग्राम है निकट नदी लगे गम्भीर
टीले से प्रगटे प्रभु जहां गैया का झरता क्षीर .....टेक
टीला देखन जब गयो पहुंचे टीला तीर
ग्वाले ने जब टीला खोदा निकले सन्मति वीर ....टेक
मैना गूजर देखन आवें, शोभा कहीं न जाय
धन्य धन्य हो प्रभु की महिमा, महिमा कहीं न जाय ....टेक

तर्ज९– *सोते–सोते में निकल...............*

सोते–सोते में निकल गयी सारी जिन्दगी
सारी जिन्दगी तेरी प्यारी जिन्दगी,
बोझा ढोते में निकल गई सारी जिन्दगी ......टेक
जनम लेत ही इस धरती पर तूने रूदन मचाया
आंखे भी न खुलने पायीं, भूख भूख चिल्लाया
रोते–रोते में निकल गयी सारी जिन्दगी ....टेक
खेल कूद में बचपन बीता यौवन पा बौराया
धर्म कर्म का मर्म न जाना विषय भोग लिपटाया
भोगों–भागों में निकल गई सारी जिन्दगी ....टेक
धीरे धीरे बढ़ा बुढ़ापा डगमग डोले काया
सबके सब रोगों ने देखो डेरा खूब जमाया
रोगों रोगों में निकल गई सारी जिन्दगी .... टेक
जिसको तू अपना समझा था वह दे बैठा धोखा
प्राण गये फिर जल जायेगा ये माटी का खोका
खोका ढोने में निकल गई सारी जिन्दगी ....टेक

तर्ज – *दिल दीवाना .... मैंने प्यार किया*

हे जग वन्दन त्रिशला नन्दन दर्श देना
तेरे द्वार खड़े प्रभु विनती सुन लेना .....टेक
कोई चढ़ाये छत्र नारियल कोई ध्यान लगाये
करे आरती पूजा तेरी ज्ञान की ज्योति जलाये
दर पे खड़े हैं दर्श दिखा दे सुन लेना ....टेक
सेठ सुदर्शन को सूली से बचा लिया था तुमने
श्रीपाल को देखो स्वामी पार किया था तुमने
भक्तों की नैया भव से पार लगा देना ....टेक

तर्ज – *होठों से छूलों तुम.........*

मैं तेरा पुजारी हूँ भक्ति का मुझे वर दो
खाली हे मेरी झोली प्रभु आज इसे भर दो .....टेक
श्रद्धा के सुमन स्वामी चरणों में तेरे अर्पण
सेवा में तेरी बीते ये मेरा तन मन व धन
आशीष मुझे देकर जीवन को सफल कर दो .....टेक
चरणों का दास तेरा कभी द्वार न छोड़ेगा
भक्ति से कभी स्वामी मुहं को नही मोड़ेगा
हर गीत नया देकर मुझे रोज नया स्वर दो ......टेक

तर्ज – *शायद मेरी शादी का..........सौतन*

सुन रे चेतन इन्द्रिय सुख में तू है भरमाया
इसलिए चारों गतियों में दुख ही दुख पाया ....
ठीक तुम आत्मा में लीन हो जाना
पुण्य और पाप छांड़े शुद्ध ध्या लेना
आत्मा मेरी आत्मा जरा शुद्ध ध्या लेना
परपद मेने अपना माना दुख ही पाया है ....टेक
अनुभव चिंतामणि रतन अनुभव है रस कूप
अनुभव मारग मोक्ष का अनुभव मोक्ष स्वरूप
आत्मा मेरी आत्मा जरा अनुभव कर लेना
पुण्य–पाप को अपना माना दुख ही पाया है ......टेक

तर्ज – *दशलक्षण त्यौहारों का.........*

दशलक्षण त्यौहारों का यह शुभ दिन आया है
इसीलिए मंदिर जी में यह पाठ रचाया है
शुभ कर्मो का पुण्य उदय जीवन में आया है ......टेक
गीत तुम धर्म के हर जगह गाना
नाम लेने में प्रभु का कभी न शरमाना
लख चौरासी भोग के हमने नरतन पाया है .....टेक

तर्ज – *आओ झूलें मेरे चेतन ....*

आओ झूलें मेरे चेतन, आतम भवन में
आतम भवन में चेतन आतम भवन में .....टेक
काहे का वहाँ वृक्ष खड़ा है, काहे झूले पड़े वामें
सम्यकदर्शन वृक्ष खड़ा है ज्ञान के झूले पड़े वामें.......टेक
काहे की वामें पट्टी पड़ी है कौन झुलावे वहाँ झुलना
चरित्र की वामें पट्टी पड़ी है अनुभव झुलावे वहाँ झुलना ....टेक

तर्ज – *तेरे मन की गंगा का ....*

भक्तों का सहारा, महावीर नाम प्यारा, तू बोल मुख से बोल
आये जाय रे चली ....टेक
बचपन खोया खेलकर में बीते दिन नादानी में
विषय भोग में बीत रहा तू हाये मस्त जवानी में
खोये रत्न अमोल आयु जाय रे चली ....टेक
जाना हो परलोक तुझे अब कुछ तो धर्म कमाले तू
काल खड़ा शिवराम हो सर पर क्यों न होश सम्हाले तू
अब तो अखियां खोल आयु जाय रे चली –2

तर्ज – *हाय हाय ये मजबूरी.................*

मैं ज्ञानानंद का दरिया हूँ अनंत गुणों से भरिया
है स्वाभाव में इतनी विभूति
तीन काल के अनंत समय में कभी–कभी नहीं होती ......टेक
मे एक शुद्ध पूर्णज्ञायक रस पर से भिन्न निराला
तीन लोक में सबसे उत्तम गुण मणियों की माला
शुद्ध रूप मेरा हो भाई उपमा कोई न होती ....टेक
गुणों का गोदाम है. मेरा शक्ति का संग्रहालय
सुख शांति का समुद्र झलके चिदानंद चैत्यालय
सिद्ध समान सदा पद मेरो तामे दृष्टि होती .....टेक

तर्ज – *साड़ी लाये न सजनवा ....*

करले जिनवर का गुण गान देखो आई शुभ घड़ी ....टेक
वीतराग सर्वज्ञ के चरणन शीश नवाय
जनम जनम के जो करम बंधे हुए नश जाए ....टेक
कई जीवों को आपने तार दिया जिनराज
मेरी ओर निहार लो सुधर जाय सब काज .....टेक

तर्ज – *ओ मोकूं महावीर की............*

ओ मोकूं महावीर की यात्रा करवादें सांवरिया
करवादे सांवरिया रे करवादे सांवरिया ....टेक
चांदनपुर एक इक ग्राम है निकट नदी गम्भीर
इक टीले पर सांझ को नित झरे गऊ का क्षीर ....टेक
झरती देखी गाय तब टीलो खोदो ग्वाल
मूला को अरज भयो जब मूरत ऐसी निकाल ....टेक

तर्ज – *नगरी नगरी द्वारे द्वारे*

पार्श्व प्रभु जी पार लगा दो मेरी ये नावरिया
बीच भवर में आन फंसी है काटो जी सावरिया ....टेक
धर्मी तारे बहुत ही तुमने एक अधर्मी तार दो
वीतराग है नाम तुम्हारा तीन जगत हितकार हो
अपना विरद निहारो स्वामी काहे की बिरतिया ....टेक
चोर भील चांड़ाल हो तारे ढील क्यों मेरी बार है
नाग नागिनी जरत उभारे मंत्र दिया नवकार है
दास तिहारा संकट में है लीजो जी खबरिया...........टेक

तर्ज - चेतन अखियाँ खोलो ना................

चेतन अखियाँ खोलो ना, तेरे पीछे लागे चोर ......टेक
मोह रूप मद पान कर रे पड़े हुए वे शुद्ध
नयना मीचे सो रहे रे हित की खोई बुद्धि ......टेक
यही दशा लख तेरी चेतन लीनों इन्द्रिय घेर
लूटी गठरी ज्ञान की रे अब क्यों कीनी देर ......टेक
उत्तम अवसर आ मिलो रें छोड़ो विषयन प्रीति
अनुभव आतम हित करो रे जाय न अवसर बीत ......टेक

तर्ज - दे दे प्यार दे .... शराबी

शेर- हम आये हैं द्वार पे प्रभु सुन लेना पुकार
लख चौरासी भटक रहे नैया का दो पार

हमें तार दे, तार दे[2], भव से तार दे
दूजा नहीं और खिवैया तेरे द्वारे आये
देखी तेरी मोहनी मूरत मन मेरा हर्षाये ....टेक
पाने को तो बहुत पाये धन और माल खजाने
मिला न तुमसा इस जग में जो ज्ञान ज्योति जलाए
वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर तेरे ही गुण गाये
मेरी नाव फंसी है भव में उसको पार लगाये ....टेक
छोड़ दे अब दुनियां सारी चरणो में ध्यान लगाले
राह अंधेरी है तेरी कर्मो ने डेरे डाले
कोई नहीं है तेरा जग में जिसको तू अपनाये
नाम प्रभु का जप ले बन्दे ये ही पार लगाये ....टेक

तर्ज - फर्स्ट टाइम देखा .... जान तेरे नाम

एक ही झलक में सारा मद खो गया, मस्तक प्रभु पद नत हो गया
ये सारा जीवन आपको ही में अर्पण करता हूँ
कुछ ना चाह है जिनवर अब तो एक तेरा नाम जपता हूँ[2] ....टेक
जब सुना ये तेरा रूप तो दर्शन के हेतु आया
इस तेरे ये शुद्ध स्वरूप ने मन वैराग्य जगाया
दुनियां से अब क्या है लेना मुझे, अब निज में रहके में ध्याऊँ तुझे ......टेक
मैंने बन कर्मों का चाकर फैरे किए है नाना
जिनवर तेरे रूप को मैने ना समझा ना जाना
चाहे कर्म करले कितने सितम छोडूगां ना अब तेरा धर्म .....टेक

हृदय में विराजो श्री भगवान भावों में विराजो श्री भगवान .....टेक

तर्ज - मैंने तेरे ही भरोसे ....

मैंने तेरे ही भरोसे भगवान सागर में नैया डाल दई
नैया डाल दई, नैया डाल दई ....टेक
काहे की तेरी नाव नवरिया काहे की पतवार
धर्म की मेरी नाव नवरिया समकित की पतवार ......टेक
को है जामें बैठन हारो को है खेवन हार
अरे आतम जामें बैठन हारो तू ही खेवनहार ......टेक

तर्ज - मैया त्रिशला तेरो लाल.............

मैया त्रिशला तेरो लाल जगत को तारण हारा रे
तारण हारा रे जगत को खेवन हारा रे ......टेक
भरी सभा में द्रोपदी साड़ी दुष्ट दुशासन खीचीं
खेचत-खेचत चीर दुशासन भुजबल हारो रे......टेक
राम चन्द ने कुण्ड खुदाया सीता को कुदवाया
अग्नि का प्रभु नीर बना और सब जग जानो रे .....टेक

तर्ज - समझो-समझो रे धर्म का सार..............

समझो-समझो रे धर्म का सार सुखी तुम होवोगे .....टेक
धरम ही मंगल ही उत्तम धर्म शरण सुखकार
धर्म करम बन्धन को टाले ले जाय मुक्ति मंझार .....टेक
पाप दुखमय सब कहें पुण्य कहें सुखकार
पुण्य भाव भी है दुखमय श्री गुरू कहे पुकार .....टेक
पाप छोड़कर पुण्य करो पर हेय बुद्धि ही धार
पुण्य पाप से भिन्न आतमा ही शिवपद दातार .....टेक

तर्ज - जाओ तुम चाहे जहाँ............नरसिम्हा

त्रिशला का प्यारा जहाँ सत्य अहिसा वहाँ
महावीर के द्वार पर झुके है जमीन आसमां .....टेक
आये जाये जग में सुख दुख की छांव व धूप
मन में है समाया बस स्वामी तेरा रूप
अहिंसा का रास्ता भी हैं तेरे ही चरणों का निशान .....टेक
निश दिन तेरे द्वारे प्रभु भक्ति हम करें
निज सम बनाओं हमको यह अर्चना करें
गणधर भी आ बोले हैं तेरी ही जय जय कार .....टेक

प्रभु एक बात म्हारा खटकी, म्हारी नैया भवंर में अटकी ....टेक

तर्ज - रोम-रोम से निकले प्रभुवर.........

रोम–रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा हां ना तुम्हारा
ऐसी भक्ति करूं प्रभु की², पाऊँ न जन्म दुबारा ....टेक
जिन मंदिर में आया जिनवर दर्शन पाया
अन्तर्मुख मुख मुद्रा को देखा आतम दर्शन पाया
जनम–जनम तक न भूलूगाँ², यह उपकार तुम्हारा ....टेक
अरहंतों को जाना आतम को पहिचाना
द्रव्य और गुण पर्यायों से जिन सम निज को माना
भेद–ज्ञान ही महामंत्र है², मोह तिमिर क्षयकारा ....टेक

तर्ज - जनम-जनम का साथ है.........

जनम–जनम तक साथ देगा धर्म हमारा जिन धर्म हमारा
अगर न सम्हले इस जीवन में फिर न मिले दुबारा ....टेक
सत्य अहिंसा वाणी कह गये वीर हमारे
पर घर छोड़ के मानव अब तो निज घर आरे
हिंसा चोरी झूठ परिग्रह², तुझको नहीं गंवारा ....टेक
कई जन्मों का पुण्य मिला तब मानव जन्म है पाया
उस पर भी जिनवाणी और जिनवर का दर्शन पाया
सत् संयम को मन में रखले², खुले मुक्ति का द्वारा ....टेक
सेठ सुदर्शन जी ने देखो जैन धर्म अपनाया
सच्ची श्रद्धा से शूली का सिंहासन बन आया
अनुभव सच्ची श्रद्धा रखले², भव का मिले किनारा ....टेक

तर्ज - चेतन लख अपना संसार.........

चेतन लख अपना संसार
यह संसार जान जड़ इसमें विषयों की भरमार ....टेक
तू मालिक अपनी दुनियां का देखत जाननहार
गुण अनन्त साथी है तेरे अनुपम सुख भण्डार ......टेक
लख निज को निज में है तेरा भरा हुआ भण्डार
अन्तर आतम दर्शन करके हो जावे भव पार ....टेक

मैं डोलूं वन वन डोलूं पिया जाय चढ़े गिरनार जी, मुझे छोड़ गये हैं सावरियां ......टेक

तर्ज - निरखों अंग-अंग जिनवर..........

निरखों अंग–अंग जिनवर के जिनसे झलके शांति अपार ......टेक
चरण कमल जिनवर कहें घूमा सब संसार
पर क्षण भंगुर जगत में निज आत्म तत्व ही सार
यातें पदमासन विराजे जिनवर झलके शांति अपार ....टेक
अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्म तत्व दरशाय
जिन दर्शन कर निज दर्शन कर सतगुरू वचन सुहाय
याते अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर झलके शांति अपार ....टेक

तर्ज - कौन दिशा में लेके..........नदिया के पार

वृथा तूने काहे को खोई रे उमरिया
नेक करले भजन–नेक करले पूजन, सुन प्राणी रे ....टेक
नौ दस मास गर्भ में रहकर पाये दुख अनेक हो
बालपना तूने खेल गवांया खेले–खेल अनेक हो
इन खेलों में फस न जाना, न करना इन्हें प्रीत रे
भूल न जाना कही अपनी डगरिया ....टेक
गई जवानी आया बुढ़ापा विषयों में फंस जाय हो
मात पिता और भाई नारी मतलब के सब यार हो
इन भोगो में फंस न जाना, न करना इन्हें प्रीत रे
भूल जाना कहीं मोक्ष डगरिया ....टेक

तर्ज - मेरा मन डोले.........

मेरा मन नाचे, मेरा तन नाचे, मेरे दिल में हर्ष अपार रे
अब देख विरागी मूरतिया ....टेक
रागी द्वेषी देव जगत में मैने देखे सारे
वीतराग हो एक तू ही जो भव सागर से तारे ....टेक

तर्ज - मैंने प्रभु के चरण पखारे ....

मैने प्रभु के चरण पखारे
जनम जनम के संचित पातक तत्क्षण ही निरवारे ....टेक
प्रासुक जल के कलश श्री जिन प्रतिमा उपर डारे
वीतराग अरहंत देव के बोलूं जय जय कारे ....टेक
चरणाम्बुज स्पर्श करत ही छाये हर्ष अपारे
पावन तन मन नयन भये सब दूर भये अंधियारे ....टेक

मैया निज शुद्धातम सब जगत में मंगल कारी है, मंगल कारी है जगत में आंनद कारी है

तर्ज - झिल मिल सितारों का............

निश दिन प्रभु तेरे दर्शन को आयें, तेरी मूरतिया ही मन भाये
तोड़ के सारे बन्धन तेरी शरण में आये ....टेक
जीवन की राहों में मेरे छाया अंधियारा है
तेरे बिना अब तो मेरा कौन सहारा है
जाऊँ न अब बिन दर्शन पाये ....टेक
रोती चन्दनबाला को प्रभु तूने ही उबारा है
दुखियारे उस श्री श्रीपाल को तूने ही तो तारा है
हम सब भी मिल तेरी शरण में आये ....टेक

तर्ज- तेरा साथ है कितना प्यारा ....

कितना प्यारा तेरा ये द्वारा यहीं गुजारूँ जीवन सारा
तेरे दरश की लगन में हमें आना पड़ेगा तेरे दर पे दुबारा ......टेक
तेरे दर पे जो गया, पाने को दीदार प्रभु जी
दुनियां ने जो ना दिया, तुझसे मिला वो ज्ञान प्रभु जी
तेरे दर से, सब कुछ पाया, तूने दिया सहारा ......टेक
सच्चा तेरा द्वार है, झूठा सब संसार प्रभु जी
मारग मुक्ति का मिला जिनवाणी सुन सार प्रभु जी
प्रभु दर्शन से, निज दर्शन पा, खोलूं मुक्ति का द्वारा ......टेक

तर्ज - करलो इन्द्र ध्वज का पाठ...........

करलो इन्द्र ध्वज का पाठ आई मंगल घड़ी
आई मंगल घड़ी आई सुखद घड़ी ......टेक
मध्य लोक के चार शतक अट्ठावन जिन ग्रह पूजों
सभी अकृत्रिम शाश्वत जिन चैत्यालय को नित पूजों ......टेक
जिन मंदिर में पाठ हो रहा सब मिलकर के आओ
जिन मंदिर में आ करके निज मंदिर में रम जाओ ......टेक

तर्ज - एक डाल पर तोता बैठा........

वीर प्रभु की जय जय बोलो आज सभी से कहना
त्रिशला माता ललना जायो, आयी खुशी की रैना, बोलो है ना ......टेक
आज बधाई बाजे देखो त्रिशला जी के द्वारे
शहनाई के स्वर भी गूजें देखो प्यारे प्यारे
तीन लोक में मंगल छाया, सुनलो मेरी बहना, बोलो है ना ......टेक
इन्द्र इन्द्राणी आये देखो मन ही मन मुस्काए
नत मस्तक हो प्रभु चरणों में जीवन सफल बनाये
मिल कर हम सब प्रभु गुण गायें, नर नारी का कहना, बोलो है ना ......टेक

तर्ज - मै वैभव पाया रे ....

मै वैभव पाया रे निज शुद्धातम सार में ......टेक
दर्शन ज्ञान अनन्त लखाया वीर्य अनन्त सुपाया
सुख सागर में ऐसा देखा ओर न छोर दिखाया
मन हर्षाया रे, निज शुद्धातम सार रे ....टेक
तीन लोक का वैभव मुझको फीका आज दिखावे
अगुरूलघु प्रभुता जिन निरखी और न कछु सुहावे
मोह छलाया रे, निज शुद्धातम सार में ....टेक
जगे नाथ पुरूषार्थ सु अनुपम निज में ही रम जाऊँ
आधि—व्याधि—उपाधि रहित में परम समाधि पाऊँ
निज रूप सुहाया रे, निज शुद्धातम सार में ......टेक

तर्ज - गाड़ी खड़ी रे खड़ी रे तैयार ....

गाड़ी खड़ी रे खड़ी रे तैयार चलो रे भाई शिवपुर को ......टेक
वीतराग भगवान का करता हूँ गुणगान
निज स्वरूप को जानकर बन जाऊँ भगवान ......टेक
त्याग—त्याग सब ही कहें त्याग न जाने कोय
राग—द्वेष के त्याग बिन त्याग न सच्चा होय ......टेक
देव—देव सब ही कहें देव न जाने कोय
वीतराग सर्वज्ञ ही देव जो सच्चा होय ......टेक

तर्ज - हमारे पार्श्व जिनेश महान...

हमारे पार्श्व जिनेश महान...
भव दुख हर्ता शिव सुख कर्ता, त्रिभुवनपति गुणवान ....टेक
विघ्न विनाशक संकट नाशक स्वपर प्रकाशक भान
शुक्ल ध्यान धर तुमने पाया, स्व—पर प्रकाशक ज्ञान ....टेक
परकृत सर्व उपद्रव नाशक सुनो विनय धर ध्यान
सर्व अमंगल हरो हमारे, मंगलमय भगवान ....टेक

कैसो सुन्दर अवसर आयो रे आयो रे
सिद्धचक्र का पाठ देखो हमने रचाया रे।
हमने रचाया, तुमने रचाया, सबने रचाया रे ......टेक

तर्ज – म्हारों सांचो साथी रे...............

म्हारों सांचो साथी रे म्हारा महावीर है
मेरो सुख दातार मेरो महावीर है
मेरो प्रभु है महान, याके गाऊँ गुणगान, मेरो महावीर है
बोलो महावीर की जय, बोलो वीतराग की जय........ टेक
शुद्धातम और पंचगुरू जग में शरना दोय
मोह उदय जिय के वृथा आन कल्पना होय
मेंरो आतम है महान, जाके गाऊँ गुणगान..........टेक
पर का कुछ नहीं चाहता चाहूँ अपना भाव
निज स्वभाव में थिर रहूँ मेटो सकल विभाव
मेरो तारण हार मेरो महावीर है ....टेक

तर्ज – आओ-आओ जी जैन जन.........

आओ–आओ जी जैन जन सारे, प्रभु जी निर्वाण गये
गाओ–गाओ जी सकल नर नारि प्रभु जी शिव थान गये ....टेक
धन्य–धन्य त्रिभुवन के स्वामी परम प्रतापी नेता
सिद्धारथ सुत त्रिशला नंदन जय जय कर्म विजेता ....टेक
केवलज्ञान ज्योति विस्तारी दोष समूल नशाये
दे उपदेश अन्नत अधम जन भव से पार लगाये ....टेक
अविचल अजर अमर अविनाशी निजानंद पदधारी
पावापुर से मोक्ष पधारे, नित प्रति धोक हमारी ....टेक

तर्ज – पल्ला लटके गोरी का ....

वीर भजले रे भाया वीर भजले
जरा सो कहणो म्हारो मान ले तू वीर भजले ....टेक
मोह माया में भूल रहो तू कर रहो थारी म्हारी
ज्ञान धरम री बात कहे जद लागे ताने खारी ....टेक
मुटठी बांध्या आया रे जग में हाथ पसारयां जासी
जरा धरम री करले कमाई आहीं आड़े हासी ....टेक
छोटी मोटी बणी रे हवेल्यां अढै पड़ी रह जासी
दो गज कफन रो टुकड़ो थारो आखिर साथ निभासी ....टेक

मुनि श्री कुन्द–कुन्द आचार्य ज्ञान धन अचल बताओ है
अचल बताओ है ज्ञान धन अचल बताओ है ....टेक

तर्ज – चलो-चलो रे ड्राइवर गाड़ी..........

करो–करो रे प्रभू की पूजन होले–होले
प्रभू की भक्ति में म्हारो मन डोले ....टेक
थारा दर्शन के कारण में बड़ी दूर से आया
सुन–सुन थारी महिमा भैया दौड़ा–दौड़ा आया
आओ–आओ रे प्रभू के आगे होले–होले ....टेक
थारे रंग में रंगी चुनरियां दूजा रंग नहीं लावे
थारे रंग में ऐसा डूबा सारी दुनियां गावे
गाओ–गाओ रे प्रभू के गुण होले–होले ....टेक
जिन मंदिर में सब नर–नारी थारा ही गुण गावें
तन मन से तेरी भक्ति करके वीरा तुझे मनावें
नाचो–नाचो रे प्रभू के आगे होले–होले ....टेक

तर्ज – मुझे पीने का शोक नहीं.........

आजा मंदिर में रोक नहीं, आजा भव–भव बचाने को
कर्म बंधन मिटाने को, आजा भव–भव बचाने को ....टेक
लाखों में हजारो में एक अकेली तेरी आत्मा
आत्मा का तू ध्यान लगा होगी वो होगी परमात्मा
क्या तूने भुला डाला आत्मा के ठिकाने को ....टेक
खोई है तेरी आत्मा विषयों में जो तू सुख माने
विषयों में जो सोता रहे, कैसे आतम को पहिचाने
कैसे समझायेगा कोई, विषयों के दीवाने को ....टेक

आओ रे आओ रे ज्ञानानंद की डगरिया[१]
नेक आओ रे सभी, गुण गाओ रे सभी, में तो चेतन रसिया[२] ......टेक

देखो सिद्धचक्र का पाठ जगत में मंगलकारी है
मंगल कारी है जगत में आनंद कारी है ....टेक

भाईयो आयो सभी मिल महावीर की पूजन करने को
पूजन करने को कर्म जन्जीर कतरने को ....टेक

करले रत्नात्रय पूजन जासे रत्नात्रय प्रगटाय
रत्नात्रय प्रगटाय जासे जन्म–मरण मिट जाय .....टेक

★ ★ ★

ओ मोकूं सिद्धचक्र का पाठ रे करवादे सांवरिया
करवादे सांवरिया सिद्ध बन जाऊँ सांवरिया .....टेक

★ ★ ★

आनंद आयो रे श्री सिद्धचक्र के पाठ में,
आनंद आयो आनंद आयो मन हर्षायो रे......टेक

★ ★ ★

अपना शुद्धातम भगवान देखो मंगलमयी
मंगलमयी देखो आंनदमयी ......टेक

★ ★ ★

आयो आओ रे हमारो बडो भाग्य कि हम आये दर्शन को
आये दर्शन को आये पूजन को .....टेक

★ ★ ★

करले सिद्ध चक्र का पाठ जासे सिद्ध प्रभु बन जाय
जासे सिद्ध प्रभु बन जाय जासे मिथ्या तिमिर नशाय ....टेक

★ ★ ★

प्यारी लागे मुझे आत्मा की बात बड़ी प्यारी लागे ....टेक

★ ★ ★

वीर स्वामी के भवन में देखो कैसी जय जय जय
कैसी जय जय जय ये देखो कैसी मंगलमय ....टेक

★ ★ ★

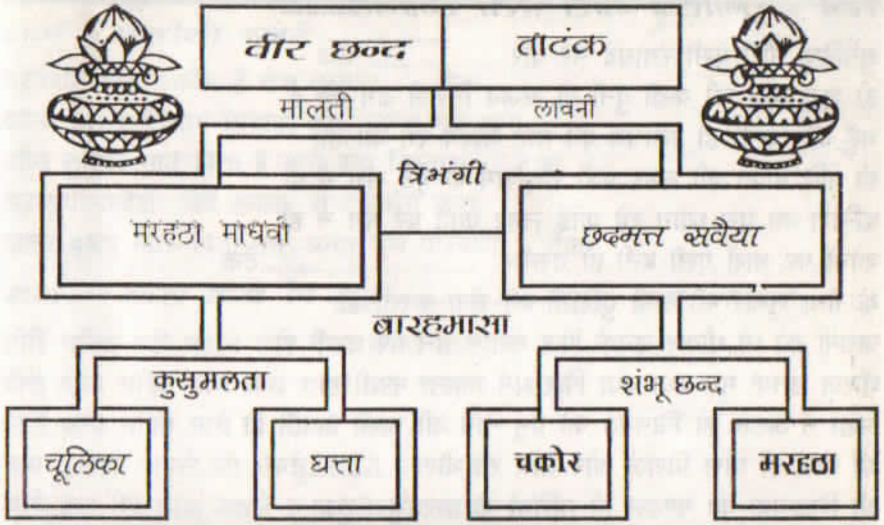

तर्ज - इक दिल के टुकड़े हजार हुये.....

भव–भव के दुखड़े अपार राहे, कभी यहां गिरा कभी वहा गिरा
गतियों में अकेला भ्रमत फिरा, कभी यहां गिरा कभी वहा गिरा.........टेक
शुभ कर्म उदय हो जाने से मानव का जीवन पाया था
जीवन के थपेड़े लगते ही कभी यहां गिरा कभी वहा गिरा ....टेक
मल मूत्र भरे उस बिस्तर पर बचपन की वे घडियाँ बीती
पैरों के बल जब खडा हुआ कभी यहां गिरा कभी वहां गिरा ....टेक
मदमस्त जवानी आते ही मैं भूल गया सब अपनापन
तरुणाई की मदहोशी में कभी यहां गिरा कभी वहां गिरा ....टेक
यौवन की हरियाली बीती, और शुष्क बुढापा आ धमका
काया का पतझड़ खूब हुआ, कभी यहां गिरा कभी वहां गिरा ....टेक
झूंठे विषयों में फंस करके जीवन को तमाशा कर डाला
था रतन वही कंकड बनकर कभी यहां गिरा कभी वहा गिरा ....टेक

तर्ज - अहो निहारे अद्भुत महिमा.......

अहो निहारे अद्भुत महिमा निज ज्ञायक भगवान की
जिसके आश्रय से ही प्रगटे ध्रुव पदवी निर्वाण की ....टेक
जिसमें नहीं संयोग वियोगा नहीं अवकाश विकल्पों का
दर्श मात्र से होय नाश मिथ्या संकल्प विकल्पों का
निर्विकल्प चैतन्य मात्र आनंदमयी गुण खान की ....टेक

युग युग तक ये गीत धर्म के गाते रहेंगे! हम तुम ....टेक

तर्ज - चुनरिया मोरी ऐसी रंगायदे........

चुनरिया मोरी ऐसी रंगायदे मेरे वीर ....टेक
हो शुद्ध हाथ की कती बुनी वो अजब निराले ढंग की है
चहुँ ओर लगी हो रत्नत्रय की गोट तिरगें रंग की हो
हो पति भक्ति की लहर पड़ी सत् धर्म के बूटे संग में हो
बन्दिश का पूरा ध्यान रहे कोई लहर कही पर भंग न हो
कोनों पर चारों ऐसी बनी हो. तस्वीर ....टेक
वो मैना सुन्दर सी रानी दुखियों की सेवा करती हो
जख्मों को धो धोकर उनके फिर मरहम उन पर धरती हो
धीरज उनके मन बंधा बंधा फिर धर्म भावना भरती हो
श्रद्धा में अटल हो जिनमत को प्रभु नाम की माला जपती हो
श्री पाल हों पास विराजे ओर सात सौ वीर ....टेक
श्री सिद्धचक्र का मण्डल हो मणियों के द्वारा पुरा हुआ
भक्ति में अपने जिनवर की हो मैना का मन भरा हुआ
हो यन्त्र – हवन के पानी का कलशा भी सन्मुख धरा हुआ
एक चित्र में भैया दिखलाना सबका ही संकट टरा हुआ
दिखाना ये भी तन की मिटी थी कैसे पीर ....टेक

तर्ज - फूलों सा चेहरा तेरा.......................अनाड़ी

ओंकारमयी वाणी तेरी जिनधर्म की शान है
समवशरण देख के, शांत छवि देख के, गणधर भी हैरान है ......टेक
स्वर्ण कमल पर आसन है तेरा, सौ इन्द्र कर रहे गुणगान है
दृष्टि है तेरी नासा के उपर, सर्वज्ञता ही तेरी शान है
चाँद सितारों में, लाख हजारों, में तेरी यहां कोई मिशाल नहीं है
चार मुख दिखते, समवशरण में, स्वर्ग में भी ऐसा कमाल नहीं है
जग में है महिमा तेरी, गूँज रहा नाम है ....टेक
सारे जहां में फैली ये वाणी, गणधर ने गूंथी इसे शास्त्र में
सच्ची विनय से श्रद्धा करें तो, ले जाती है मुक्ति के मार्ग में
कषायें मिटाऐ, राग को भगाऐ, इसके श्रवण से ये शांति मिली है
सुख का ये सागर, आत्म में रमणकर, आत्म बगिया में मुक्ति मिली है
सारे जहाँ में फैलाया ज्ञान का भण्डार है ....टेक

ओ साथी रे धर्म बिना भी क्या जीना
चारों ही गतियों में भोगों में विषयों में, चैन कहीं भी मिले ना, धर्म बिना .....टेक

तर्ज - परदेशी प्यारे ....

परदेशी प्यारे ! कौन है देश तुम्हारा ......टेक
कौन असल में ग्राम तुम्हारा कौन जगह घर द्वारा
कौन तुम्हारे मात पिता है करों रूप विस्तारा ......टेक
असंख्य परदेशी गाँव हमारा, सम्यग्दर्शन द्वारा
ज्ञाता दृष्टा मात–पिता मम, अनंत गुण परिवारा ......टेक

तर्ज - गोरी कब से हुई ....फूल बने अंगारे

तोरि भक्ति बड़ी महान वीरा देजा भक्ति दान
वीरा देजा भक्ति दान आये शरण तेरी नादान ......टेक
पापी आये भक्ति गाये वो भी तो तिर जाये
नाम तुम्हारा जपले जो भी मुक्तिपुरी को जाय
आये द्वार तेरे आज रखले तू भक्तों की लाज ......टेक

तर्ज - दुनियाँ में रहें चाहे.........

दुनियाँ में रहें चाहे दूर रहें जो खुद में समाये रहते हैं
सब काम जगत का किया करें, नहिं प्यार किसी से करते है ......टेक
वह चक्रवर्ती पद भोग करें पर भोग में लीन नहीं होते
वह जल में कमल की भांति सदा घरबार बसाये रहते हैं ......टेक
कभी नर्क वेदना सहते है पर मगन रहें निज आतम में
वे स्वर्ग सम्पदा पाकर भी रूचि उससे हटाये रहते हैं ......टेक
है धन्य धन्य वे निर्मोही जिन शान्ति दशा है प्रकटाई
शिवराम चरण में उनके सदा, हम शीश झुकाये रहते हैं ......टेक

तर्ज- जैन धर्म के हीरे मोती...........

जैन धर्म के हीरे मोती मै बिखराऊँ गली–गली
ले लो रे कोई प्रभु का प्यारा, शोर मचाऊँ गली–गली ......टेक
दौलत के दीवाने सुन लो, इक दिन ऐसा आऐगा
धन दौलत और रूप खजाना पड़ा यही रह जाऐगा
सुन्दर काया मिट्टी होगी चर्चा होगी गली–गली ....टेक
क्यों कहता तू मेरी–मेरी, तज दे उस अभिमान को
झूठे झगडे छोड़ के प्राणी, भज लें श्री भगवान को
जग का मेला दो दिन का है अंत में होगी चला चली ......टेक

वीतरागी देव तुम्हारे, जैसा जग मे देव कहाँ
मार्ग बताया है जो तुमने, कह न सका कोई और यहाँ ......टेक

तर्ज - जिसको तू खोज रहा..........

जिसको तू खोज रहा बन्दे वह मालिक तेरे अंदर है
बाहिर के मंदिर कृत्रिम है सच्चा मंदिर तो अंदर है ....टेक
ले जल, चन्दन अक्षत आदि तू किसकी पूजा करता है
सचमुच जिसकी पूजा करता वह दिव्य देव तो अंदर है ....टेक
धोने को अपना पाप मैल, तू तीरथों बीच भटकता है
जिसमें सब पाप मैल धुलता वह विमल तीर्थ तो अंदर है ....टेक
बिना लक्ष की दौड़ धूप कुछ भी परिणाम न लायेगी
वह बाहिर कैसे मिल सकती जो चीज आपके अंदर है ....टेक

तर्ज - जीवन में शांति न..........

जीवन में शांति न जो लाता, वह धर्म नहीं वह धोखा है
जीवन में क्रांति न जो लाता वह कर्म नहीं वह धोखा है ....टेक
मन्जिल की आशा से राही पथ पर जब दौड़ा जाता है
जो मार्ग न मंजिल को पाता वह मार्ग नहीं वह धोखा है ....टेक
बैठा है खाना खाने को भोजन भी नाना विधि करे
जो क्षुधा शांति नहीं कर पाता, वह खाद्य नहीं वह धोखा है ....टेक
चंदन है सन्त वही सच्चा जो आत्म ज्ञान और ध्यान रखे
जो माया में फंसता जाता है वह सन्त नहीं वह धोखा है ....टेक

तर्ज- पैसे की पहचान यहां ....

सुख का मित्र जहान यहां, दुख दर्द का साथी कोई नहीं
तू समझ अरे नादान यहां सगा संगाती कोई नहीं ....टेक
हरी डाल पर तोता बैठा, करता मौज बिहारी है
सूखा तरुवर उड़ गया तोता, छिन में प्रीत बिसारी है
दुनियां मतलब की सारी, बिन स्वारथ साथी कोई नहीं ....टेक
तू जिनको अपना मान रहा, नहीं काम तेरे कोई आयेंगे
मरण समय तेरी काया को वो छिन में आग लगाऐंगे
महल अटारी नारी प्यारी साथ में साथी कोई नहीं ......टेक
जब काल अचानक आऐगा, सब ठाठ पड़ा रह जाऐगा
नहीं साथ में कुछ भी जाऐगा, तू रोयेगा पछताऐगा
शिवराम धर्म ही साथ चले, बिन धर्म के साथी कोई नहीं ......टेक

आशाओं का हुआ खातमा दिली तमन्ना धरी रही
चेतन राजा हुआ रवाना प्यारी काया पड़ी रही ....टेक

तर्ज - शुभ कर्मों से पुण्य........

शुभ कर्मों से पुण्य अशुभ से पाप कहाता आया है
दोनों में आकुलता रहती दोनो में भरमाया है ....टेक
एक लोह श्रृंखला अगर, तो दूजी बेडी सोने की
दोनो बंधन के कारण है दोनो बोझा ढोने की
पाकर आज गर्व क्या करता कल है बारी खोने की
जो हंसता है उसको ही फिर चिन्ता होती रोने की
जीवन का पट क्षणिक कहीं पर धूप कहीं पर छाया है ....टेक

तर्ज - जितना देखेगा बाहर ....

जितना देखेगा बाहर में उतना होगा हैरान तू
तुझ में दुख का अस्तित्व नहीं क्यों व्यर्थ अरे परेशान है तू ......टेक
ज्यों सींग नहीं खरगोशों के जग भर में कहीं देखे जाते
पर में तेरा सुख लेश न त्यों खुद ही अनंत सुख खान है तू ......टेक
ज्यों मृग दौड़े आगे दिखता कोरा भ्रम पानी नहीं मिले
त्यों विषय सुख मृग तृष्णा सम, क्यों मूढ गमावे जान है तू ......टेक
अहो आत्मन अब भ्रम छोड़ो निज ज्ञानानंद स्वभाव लखो
पर्याय दृष्टि अब गौण करो अनुभव कर खुद भगवान है तू ....टेक

तर्ज - दृष्टि हो बस अपने...............

दृष्टि हो बस अपने प्रभु पर, रत्नत्रय पर चल
मुक्ति तेरे पग चूमेगी, आज नहीं तो कल ....टेक
स्व को जानो स्व को मानो स्व को अब पहिचानो
छिपी हुई है आतम ज्योति उसको अब पहिचानो
एक बार निज आतम रस का, सेवन करता चल ....टेक
मानुष भव यह जीवन पाया आतम ज्योति जगाले
ज्ञान उजाले में आकर के अपनी निधि को पाले
तू है नित्य निरंजन चेतन, शिव रमणी पथ चल ....टेक

तर्ज - कबूतर जा जा...........मैंने प्यार किया

रे प्राणी आ आ आ रे प्राणी आ आ आ
पारस प्रभु के दर पे आके पारस तू बन जा ....टेक
मन ही मन पारस की पूजा तो करता रहता हूँ मैं
प्रभु भक्ति की शक्ति को अब तो समझ चुका हूँ मैं
शिवपुर अपने साथ ले जाना, मन ही नहीं लगता ....टेक

तर्ज - मेरा रंग दे बसन्ती चोला............शहीद

है मनुष्य जन्म अनमोला, है तेरा जन्म अनमोला
बार बार मिलना मुश्किल है, सुन ले ज्ञानी भोला ....टेक
मनुष्य जन्म का मिलना प्यारे नहीं अरे आसान है
इसको भोग विषय में खोवे, तू तो बड़ा नादान है
इसकी तूने कदर न जानी, समझ अरे मन मोला ....टेक
चिन्तामणी इक रत्न अमोलक तूने आज ये पाया
काग उड़ावन खातिर इसको क्यों तू फैंक गमाया
किंचित सुख के कारण हाय, खोय रहा नर चोला ....टेक
नरतन को तो सुरपति तरसे, देख जरा तू ध्यान दे
भैया इसको सफल बना, निज को निज में तू जान ले
वरना लख चौरासी में फिर, खायेगा झकझोला ....टेक

तर्ज - जिस पिंजरे पर इतरा करता..........

जिस पिंजरे पर इतरा करता वह तेरे साथ न जायेगा
तेरा प्यारा पिंजरा पीछे, यहाँ जलाया जायेगा ....टेक
साबुन तेल सुगन्ध लगाकर बदला सुन्दर बाना
मैल रात दिन झरे बदन से इसका भेद न जाना
नौ—नौ द्वारा मैल के इसमें यही धरा रह जायेगा ....टेक
ऊँचें अदभुत महल बनाऐ जोड़ा माल खजाना
यहाँ से जाना इक दिन सबको क्या निर्धन क्या राणा
तेरा प्यारा रूपया पैसा, पड़ा यही रह जायेगा ....टेक
जन्म—जन्म का पुण्य मिला तब मिला ये नरतन प्राणी
उसमें भी जैनधर्म—जैनकुल और मिली जिनवाणी
निज आतम का अनुभव करले, नहीं तो फिर पछतायेगा ......टेक

तर्ज - कौन विरोधी कौन सहायक...........

कौन विरोधी कौन सहायक, तू स्वतंत्र सुख धाम है
पर का पल्ला छोड़ जीव तू सहज शुद्ध निष्काम है ......टेक
देह आत्मा दोनों का तो, एक जगह पर वास है
इसमें उनकी स्वयं योग्यता कौन किसी का दास है
लोटा एक दूध पानी, दोनों का उसमें वास है
किन्तु हुआ जल रूप दूध कब वह अपने में खास है
हो जड़ रूप देह तू चेतन, द्रव्य आत्मा राम है
पर का पल्ला छोड जीव तू सहज शुद्ध निष्काम है ......टेक

तर्ज - आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं.................

आओ भाई तुम्हें सुनाऐं, गाथा आतम राम की
जिससे तड़क—तड़क गिर पड़ती, कर्मो की संतान भी
बन्दे आतमराम, बन्दे आतमराम, ...टेक
जड़ चेतन छह द्रव्य विश्व में न्यारे—न्यारे रहते हैं
पुदगल धर्म—अधर्म काल आकाश इन्हें जड़ कहते हैं
चेतन ज्ञान विशिष्ट वस्तु है जड़ में ज्ञान नहीं रहता
आदि रहित है अंत रहित है जड़ चेतन की यह सत्ता
यही विश्व में रहे रहेंगे रहना इनका काम भी ....टेक
होता नहीं विनाश कभी पर्याय बदलती रहती है
अरे तरंगित सरिता जैसे अविकल बहती रहती है
उठती है कल्लोल उसी में विलय उसी में हो जाती
पर सरिता तो अपने पथ पर शाश्वत ही बहती जाती
पल पल उलट—पलट करता अणु—अणु सत्ता का त्राण भी ....टेक

तर्ज - चाँदी की दीवार न तोड़ी.................. विश्वास

ममता की पतवार न छोड़ी आखिर के दम तोड़ दिया
इक अनजाने राही ने शिवपुर का मारग छोड़ दिया ....टेक
नर्क में जिसने भावना भाई मानुष तन को पाने की
भेष दिगम्बर धारण करके मुक्ति पद को पाने की
लेकिन देखो आज ये हालत ममता के दीवाने की
चेतन होकर पर द्रव्यों से कैसा नाता जोड़ लिया ....टेक

तर्ज - है प्रीत यहां की रीति सदा ....पूरब-पश्चिम

निज आतम देव को भजले तू यह भव से पार लगायेगा
स्वाधीन सहज अरु निजाधीन सुख तुझको यही पिलायेगा
हो .... हो ....टेक
काला गोरा जिसे दुनियां कहे यह पुदगल रूप नहीं मेरा
बिन्मूरत चिन्मूरत ज्ञायक बस यही अरूपी रूप मेरा
इस रूप में जो मदमस्त रहे— 2 सुख शान्ति — 2 में गोते खायेगा ......टेक
कितनी करूणा आचार्यो को आतम वैभव बतला जो दिया
कितना उपकार है गुरूवर का मंथन निकाल हमको वो दिया
अब वह पुरूषार्थ हमें करना—2 जो मुक्ति — 2 तक पहुँचायेगा ......टेक

अरे मन ! आतम को पहिचान
मिल जुल संग रहत पुद्गल के ज्यों तिल तेल मिलान ......टेक

तर्ज - अपने घर को देख..........

अपने घर को देख बाबरे, सुख का जहाँ खजाना रे
क्यों पर में सुख खोज रहा है क्यों पर का दीवाना रे ......टेक
ये माटी के खेल खिलौने, माटी तन की रानी है
माटी का तन, माटी का मन, माटी की राजधानी रे ......टेक
चिन्तामणि सा नरभ पाया, कल्पवृक्ष सा जिनवृष रे
गंवा रहा है रत्न अमोलक क्यों विषयों में फंस फस रे
बिखर जायेगा एक दिन तेरा, सारा ताना बाना रे ......टेक
घूम लिए हैं चारों गति में, अब तो निज का ध्यान करो
जहर हलाहल बहुत पिया है अब समता रस पान करो
सहजानदी रूप तुम्हारा, सारा जग बेगाना रे ......टेक

तर्ज - जैन धर्म है हमको प्यारा.........

जैन धर्म है हमको प्यारा, हम इसके अनुयायी है
पुण्य भाव में धर्म मानना, सबसे बडी हैरानी है
ज्ञानदीप ले चल[2], बनकर रहो अचल
सम्यक दर्शन, सम्यकज्ञान, सम्यकचारित्र कर, आ ....टेक
चारों गतियों से टकराये, नरको के दुख झेले हैं
थावर विकलत्रय पशुगति आदि के पहने चोले हैं
जिनवर सच्चा बोल रहा है तत्व सभी आजाद है
ज्ञानदीप ले चल[2], बनकर रहो अचल, सम्यकदर्शन ....टेक
हम है शाश्वत आदि अंत तक हम भगवनसम ज्ञानी है
हम निज से है निज के कारण निज के कर्तावानी है
उपादान से कार्य हमारा कर्ता पर अभिमानी है
ज्ञानदीप ले चल[2] बनकर रहो अचल, सम्यकदर्शन .... टेक

तर्ज - देख तेरे संसार हालत ....

चिदानन्द चैतन्य प्रभु का, कर ले तू गुणगान
कितना अवसर मिला महान .... टेक
कठिन–कठिन से नरभव पावे, विषयों में तू इसे गमावे
धर्म भावना कभी न लावे, यातें जग में दुख ही पावे
छोड़ सभी जगजाल को अब तू, कर ले आतम ध्यान .... टेक
सम्यग्दर्शन जब हो जावे आत्म ज्योति सहज दिखलावे
केवलज्ञान इसी से पाये स्वयं सिद्ध सुख शाश्वत पावे
कर्म शत्रु को मार भगा तू बन जा रे भगवान .... टेक

तर्ज - परम दिगम्बर मुनिवर.........

परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है
आनंद उल्लसित होता है हो.... सम्यग्दर्शन होता है .... टेक
वास जिनका वन उपवन में, गिरि शिखर के नदी तटे
वास जिनका चित्त गुफा में आतम आनंद में रमे .... टेक
कंचन कामिनी के त्यागी, महा तपस्वी ज्ञानी ध्यानी
काया की माया के त्यागी तीन रतन गुण भंडारी .... टेक
परम पावन मुनिवरों के पावन चरणों में नमूँ
शांत मूर्ति सौख्य मुद्रा, आनंद धारा में रमूँ .... टेक

तर्ज - माटी का घर छोड़.............

माटी का घर छोड़ आत्मा हो गई आज पराई रे
डोला देखे जीयरा डोले, नैन नीर भर लाई रे .... टेक
छोड चला घर बार यही पर पुण्य और संग पाप गया
कर्मों की जंजीर न टूटी मिला एक संताप नया
भव सागर में डगमग करने नैया फिर–फिर आई रे .... टेक
पुण्य अगर सौभाग्य उदय से नरतन इसने पाया है
मोक्ष नगर को जाने का एक अंतिम अवसर आया है
भूला भूला विषय फांस में नर्क गति फिर पाई रे .... टेक

तर्ज - आया कहाँ से कहाँ है जाना............

आया कहाँ से कहाँ हैं जाना ढूंढले ठिकाना चेतन ढूढले ठिकाना .... टेक
इक दिन तेरा गोरा तन ऐ मिट्टी में मिल जायेगा
कुटुम्ब कबीला खड़ा रहेगा कोई बचा न पायेगा
नहीं चलेगा कोई बहाना, ढूढले ठिकाना .... टेक
जब तक तन में सांस है चलती सब तुझको अपनायेंगे
जब न रहेंगे प्राण ये तन में देख तुझे घबरायेंगे
कहीं तो तुझको पडेगा जाना, ढूंढ ले ठिकाना .... टेक
सदगुरू जगा रहे है चेतन सुन भव से तर जायेगा
सम्यग्दर्शन ज्ञान से चेतन दुख सारा मिट जायेगा
सच्चे सुखों का ये हैं खजाना, ढूढले ठिकाना .... टेक

सिद्धचक्र की पाठ हो रहा ......
हृदय हर्षित होता है, आनंद उल्लसित होता है
हो .... आतम दर्शन होता है ....टेक

तर्ज - जरा सामने तो आओ छलिए..........

जरा सुनले ओ चेतन राजा, भव भव रुलने में क्या सार है
तूं बन जा बने तो परमात्मा, तेरी आत्मा में शक्ति अपार है .... टेक
लोभ पाप का बाप चेतन जो, क्यों राग करे और दुःख भरे
ज्ञान कसौटी परख चेतन नित, मत छलियों का विश्वास करे
ठगा जाने की यहाँ भरमार है, इन्हें जीते तो बेडा पार है .... टेक
नरतन का स्वभाव चेतन जो, आँख लगी न फिर हाथ लगे
कर आतम रसपान चेतन जो, जनम गये और मरण गये
मोक्ष महल, का ये ही द्वार है, वीतरागी है बनना सार है .... टेक

तर्ज - तन पिंजरे के अंदर बैठा..........

तन पिंजरे के अंदर बैठा, आतम राम कहे
पिंजरा दिन दिन होत पुराना पछीं वही रहे .... टेक
इस पिंजरे के नौ दरवाजे ना सांकल न ताला
खुले हुऐ पिंजरे में रहता पंछी उडने वाला
पिंजरा जन्में पिंजरा पनपे पिंजरा जले वहे .... टेक

तर्ज - देखो लोगों चली लाड़ली........

आत्मनगर में ज्ञान की गंगा, जिसमें अमृत वासा है
सम्यकदृष्टि भर–भर पीवें, मिथ्यादृष्टि प्यासा है ....टेक
सम्यकदृष्टि समता जल में नित ही गोते खाता है
मिथ्यादृष्टि राग द्वेष की आग में झुलसा जाता है
समता जल का सिंचन कर ले जो सुख शांति प्रदाता है .... टेक
पुण्य पाप को धर्म मानकर के संसार बढाता है
राग बन्ध की गुत्थी को यह कभी न सुलझा पाता है
जो शुभ फल में तन्मय होता वह निगोद को जाता है .... टेक
मानुष भव दुर्लभ ये पाकर आतम ज्योति जगानी है
ज्ञान उजेले में आ करके अपनी निधि उठानी है
है तू शुद्ध निरंजन चेतन शिव रमणी का वासा है .... टेक

तर्ज - तू धरले दिगम्बर चोला..........

तू धरले दिगम्बर चोला, तू धरले दिगम्बर चोला
इस चोले को पहिन के निकला, कुंद–कुंद मुनि बोला .... टेक
आदिनाथ से महावीर तक, महावीर से कुंद–कुंद तक
कुंद–कुंद से टोडरमल तक, सबने यही बोला .... टेक

तर्ज - समझ आत्मा के स्वरूप..........

समझ आत्मा के स्वरूप को, अगर मुक्ति पद पाना रे
इसके जाने बिना किसी का होगा नहीं ठिकाना रे .... टेक
देख कभी खुद के समुद्र को, क्यों सरिता पर भूला है
मोती की पहिचान नहीं इसलिए सीप पर फूला है
निरख आत्मा को सुदृष्टि से क्या यह दशा तुम्हारी है
कंचन मालिक आज काँच के खातिर बना भिखारी है
निधि तुम्हारे पास तुम्हारी कहीं न बाहर जाना रे .... टेक

तर्ज - देखो देखो जी कलयुग.......

देखो देखो जी कलयुग के हाल लगे न मन मंदिर में .... टेक
आगम और शास्त्र छोड़ के उपन्यास है पढ़ रहे
धरम करम को बिल्कुल भूले मन को मारग गढ़ रहे
ऐसी चल रहे चाल कुचाल, लगे मन मंदिर में .... टेक
बहुऐं बिटियां, सासें, नंदे, जब मंदिर में आवे
कौनऊ तो घर को दुख रोवे, चुगली कोऊ लगावे
इतई बैठ बनावें कढी दाल, लगे न मंदिर में .... टेक

तर्ज - जय जयकार करो मत........

जय जयकार करो मत केवल कुंद–कुंद भगवान की
पद चिन्हों पर चलो चाह हो तुम्हें अगर निर्वाण की .... टेक
नहीं बजाओ सिर्फ घंटियाँ, नहीं जोर से नाद करो
तुम हो कौन यहां क्यों आये क्या करना है याद करो
कौन तुम्हारा तुम हो किसके पूछो अपने आप से
कौन तुम्हारे साथ चलेगा किसको किस पर छाप दे
बिना आत्म श्रद्धान न होगी महिमा गुरू के ज्ञान की .... टेक
कुन्द–कुन्द ने कहा भला कब गुरू तुझे भव पार करेंगे
गुरू तो गुप्त ज्ञान दर्शन में फिर कैसे उद्धार करेंगे
खुद का खुदा बसा खुद ही में खुद–खुद की पहिचान की
वही भक्त सच्चा गुरूवर का, महिमा जिसको निज ज्ञान की .... टेक

कहा मानले ओ मेरे भैया, शांति जीवन बनाना अब सार है
तू बन जा बने तो परमात्मा मेरी आत्मा की मूक पुकार है .... टेक

पूजा पाठ रचाऊँ मेरे भैया आतम ध्यान लगाऊँगा
महावीर के दर्शन करने जिन मंदिर में आऊँगा .... टेक

तर्ज - जिया बेकरार है............

आनंद अपार है, भक्ति का प्रसार है
देखो सिद्धचक्र की कैसी जय जयकार है .... टेक
मंगल पूजन लेकर स्वामी आया तेरे द्वार जी
गुण गाता हूँ सिद्धचक्र का होगा बेडा पार जी .... टेक
पर परिणति में अब तक भटका शरण कहीं न पाया जी
तारण–तरण विरद सुन जिनवर सिद्ध शरण में आया जी .... टेक

तर्ज - यदि भला किसी का कर.........

यदि भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना
अमृत न पिलाने को घर में तो जहर पिलाने से डरना .... टेक
यदि घर न किसी का बना सको, तो झोपडियाँ न जला देना
यदि मरहम पट्टी कर न सको तो खार नमक न लगा देना .... टेक
यदि दीपक बनकर जल न सको तो अन्धकार भी मत करना
यदि फूल नहीं बन सकते हो, तो कांटे बन न विखर जाना .... टेक
मानव बनकर सहला न सकों, तो दिल न किसी को दुखा देना
यदि देव नहीं बन सकते हो, तो दानव बनकर मत मरना .... टेक

तर्ज - मेरा नम्र प्रणाम है............

मेरा नम्र प्रणाम है मेरा नम्र प्रणाम है
जग के उन सब मुनिराजों को मेरा नम्र प्रणाम है .... टेक
मोक्ष मार्ग पर अतिंम क्षण तक चलना जिनको इष्ट है
जिन्हें अच्युत कर सकता पथ से कोई विघ्न अनिष्ट है
एक दृष्टि से देखा करते, गर्मी वर्षा ठण्ड जो
तृप्त उष्ण लू रिम झिम वर्षा शीत तरंग प्रचंड जो
जिनकी हो निस्वार्थ साधना जिनका तप निष्काम है .... टेक
मन में किंचित हर्ष न लाते, सुन अपना गुणगान जो
और न अपनी निंदा सुनकर करते हैं मुख ग्लान जो
जिन्हें प्रतीत एक सी होती स्तुतियाँ और गालियाँ
सिर पर गिरती सुमनावलियाँ चलती हुई दुनालियाँ
दोनों समय शांति में रहना, जिनका शुभ परिणाम है .... टेक

वीर प्रभु के गुण नहीं गाये, जग से प्रीत लगाये, तुझे क्या हो गया है
जिनवाणी की गंगा तज कर, विषय कींच में जाये, तुझे क्या हो गया है .... टेक

वीतराग प्रभु है हमारे, शांति मूरतिया तू देख बार-बार .... टेक

तर्ज - आपा नहीं जाना तूने............

आपा नहीं जाना तूने कैसा ज्ञान धारी रे ....टेक
देहाश्रित कर किया आपको मानत शिव मगचारी रे
निज निवेद बिन घोर परीषह, विफल कही जिन सारी रे ....टेक
शिव चाहें तो द्विविधकर्म तैं, कर निज परिणति यारी रे
दौलत जिन निज भाव पिछान्यौ तिन भव विपति विदारी रे ....टेक

तर्ज - बार बार कब मिला..........

बार बार कब मिला किसी को, सोच समझ कुछ बाबरे
पुण्य उदय से नरतन पाया चूक न जावे दाँव रे ....टेक
किसका हाथी किसका घोडा किसकी मोटर रेल जी
पड़ा रहेगा बोरी बिस्तर किसका किससे मेल जी
आज महल में ऐश कर रहा कल हो जाती जेल जी
यह संसार दुरंगा अदभुत कर्म खिलाते खेल जी
देह विनाशी ममता फांसी तू अविनाशी राव रे ....टेक
पर का अवलंबन दुखदाई निज का निज में नूर हो
में अरस अरूपी अविनाशी यह श्रद्धा भरपूर हो
भेद ज्ञान की जले रोशनी, मोह अंधेरा दूर हो
संशय भगे जगे पुरषार्थ कर्म शिला चकचूर हो
सम्यग्दर्शन एक दवा है जो भरती भव घाव रे ....टेक

तर्ज - मर-मर जाय शरीर.........

मर–मर जाय शरीर आत्मा कभी नहीं मरता है
कारण मिथ्याभाव सदा ये जन्म मरण करता है ....टेक
स्वर्गो में भी देव नरक नारकी दुख भरता है
पशुगति में पशु होय मनुष्य में तृष्णा से जलता है ....टेक
चौरासी लाख योनि सदा चोला बदला करता है
मैथुन भय आहार परिग्रह का सेवन करता है ....टेक
विषय चाह में दहे सुख का लेश नहीं भरता है
बिन आतम के ज्ञान सदा संसार कला करता है
उसका ही जीवन सफल यहां जो आत्म ज्ञान करता है ....टेक

स्वाँस–स्वाँस में सुमिरन करले, करले आतम ज्ञान रे
न जाने किस स्वाँस में बाबा, मिल जायें भगवान रे .... टेक

पूजा हो रही रे, आ सिद्धों के दरबार में, पूजा हो रही रे ....टेक

तर्ज - जिया बेकरार है............

आनंद अपार है, भक्ति का प्रसार है
देखो सिद्धचक्र की कैसी जय जयकार है .... टेक
मंगल पूजन लेकर स्वामी आया तेरे द्वार जी
गुण गाता हूँ सिद्धचक्र का होगा बेड़ा पार जी .... टेक
पर परिणति में अब तक भटका शरण कहीं न पाया जी
तारण–तरण विरद सुन जिनवर सिद्ध शरण में आया जी .... टेक

तर्ज - यदि भला किसी का कर..........

यदि भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना
अमृत न पिलाने को घर में तो जहर पिलाने से डरना .... टेक
यदि घर न किसी का बना सको, तो झोपडियाँ न जला देना
यदि मरहम पट्‌टी कर न सको तो खार नमक न लगा देना .... टेक
यदि दीपक बनकर जल न सको तो अन्धकार भी मत करना
यदि फूल नहीं बन सकते हो, तो कांटे बन न विखर जाना .... टेक
मानव बनकर सहला न सकों, तो दिल न किसी को दुखा देना
यदि देव नहीं बन सकते हो, तो दानव बनकर मत मरना .... टेक

तर्ज - मेरा नम्र प्रणाम है............

मेरा नम्र प्रणाम है मेरा नम्र प्रणाम है
जग के उन सब मुनिराजों को मेरा नम्र प्रणाम है .... टेक
मोक्ष मार्ग पर अतिंम क्षण तक चलना जिनको इष्ट है
जिन्हें अच्युत कर सकता पथ से कोई विघ्न अनिष्ट है
एक दृष्टि से देखा करते, गर्मी वर्षा ठण्ड जो
तृप्त उष्ण लू रिम झिम वर्षा शीत तरंग प्रचंड जो
जिनकी हो निस्वार्थ साधना जिनका तप निष्काम है .... टेक
मन में किचिंत हर्ष न लाते, सुन अपना गुणगान जो
और न अपनी निंदा सुनकर करते हैं मुख ग्लान जो
जिन्हें प्रतीत एक सी होती स्तुतियाँ और गालियाँ
सिर पर गिरती सुमनावलियाँ चलती हुई दुनालियाँ
दोनों समय शांति में रहना, जिनका शुभ परिणाम है .... टेक

वीर प्रभु के गुण नहीं गाये, जग से प्रीत लगाये, तुझे क्या हो गया है
जिनवाणी की गंगा तज कर, विषय कींच में जाये, तुझे क्या हो गया है .... टेक

वीतराग प्रभु है हमारें, शांति मूरतिया तू देख बार-बार .... टेक

तर्ज - आपा नही जाना तूने............

आपा नहीं जाना तूने कैसा ज्ञान धारी रे ....टेक
देहाश्रित कर किया आपको मानत शिव मगचारी रे
निज निवेद बिन घोर परीषह, विफल कही जिन सारी रे ....टेक
शिव चाहें तो द्विविधकर्म तैं, कर निज परिणति यारी रे
दौलत जिन निज भाव पिछान्यौ तिन भव विपति विदारी रे ....टेक

तर्ज - बार बार कब मिला...........

बार बार कब मिला किसी को, सोच समझ कुछ बाबरे
पुण्य उदय से नरतन पाया चूक न जावे दाँव रे ....टेक
किसका हाथी किसका घोडा किसकी मोटर रेल जी
पड़ा रहेगा बोरी बिस्तर किसका किससे मेल जी
आज महल में ऐश कर रहा कल हो जाती जेल जी
यह संसार दुरंगा अदभुत कर्म खिलाते खेल जी
देह विनाशी ममता फांसी तू अविनाशी राव रे ....टेक
पर का अवलंबन दुखदाई निज का निज में नूर हो
मैं अरस अरूपी अविनाशी यह श्रद्धा भरपूर हो
भेद ज्ञान की जले रोशनी, मोह अंधेरा दूर हो
संशय भगे जगे पुरषार्थ कर्म शिला चकचूर हो
सम्यग्दर्शन एक दवा है जो भरती भव घाव रे ....टेक

तर्ज - मर-मर जाय शरीर.........

मर–मर जाय शरीर आत्मा कभी नहीं मरता है
कारण मिथ्याभाव सदा ये जन्म मरण करता है ....टेक
स्वर्गो में भी देव नरक नारकी दुख भरता है
पशुगति में पशु होय मनुष्य में तृष्णा से जलता है ....टेक
चौरासी लाख योनि सदा चोला बदला करता है
मैथुन भय आहार परिग्रह का सेवन करता है ....टेक
विषय चाह में दहे सुख का लेश नहीं भरता है
बिन आतम के ज्ञान सदा संसार कला करता है
उसका ही जीवन सफल यहां जो आत्म ज्ञान करता है ....टेक

स्वाँस–स्वाँस में सुमिरन करले, करले आतम ज्ञान रे
न जाने किस स्वाँस में बाबा, मिल जायें भगवान रे .... टेक

पूजा हो रही रे, आ सिद्धों के दरबार में, पूजा हो रही रे ....टेक

तर्ज - है प्रीति जहाँ की रीति.............पूरब-पश्चिम

सब जैन धर्म की जय बोलो हम गीत उसी के गाते है
जो विश्व शान्ति का प्रेरक है हम उसकी बात सुनाते है
हो हो ....हो हो .... टेक
यह सत्य अहिंसा ब्रम्हचर्य का पाठ हमें सिखलाता है
अज्ञेय परिग्रह त्याग हमें मानव बनना सिखलाता है
है पंच महाव्रत सार जगत[2] ये शास्त्र ! ये शास्त्र सभी बतलाते हैं .... टेक

तर्ज - फूल तुम्हे भेजा है...............

चिदानंद चिद्रूप आत्मन, निज का अनुभव किया करो
सब संकल्प विकल्प तोड़के, सुखमय जीवन जिया करो .... टेक
आत्मानुभव होते हैं तत्क्षण, सम्यकदर्श प्रगट होता
महापाप मिथ्यात्व नशाता मुक्ति मार्ग शुरू होता
पर से हो निवृत स्वयं में, सहज तृप्त नित रहा करो .... टेक
अंतरात्मा कहलाते जब, निज सन्मुख दृष्टि होती
तभी बने कार्य परमातम जब निज में थिरता होती
बस हो सर्व विकल्पों से निज में ज्ञायक यह लखा करो .... टेक

तर्ज - जो जो देखी वीतराग..............

जो जो देखी वीतराग ने सो–सो होसी वीरा रे
अनहोनी होसी नहिं जग में, काहे होत अधीरा रे .... टेक
समयो एक बढ़े नहिं घटसी जो सुख दुख की पीरा रे
तू क्यों सोच करै मन मूरख, होय व्रज ज्यों हीरा रे .... टेक

तर्ज - बाबुल की दुआऐं लेती जा.........

ओ चेतन निज की ओर लखो, तुझे शाश्वत सुख भंडार मिले
पर की न तनिक भी प्रीति रहे, निज में ही ऐसा सार मिले .... टेक
पर तो क्षणभंगुर संयोगी स्व तू चेतन शाश्वत प्रभु है
निज की अनुभूति परम शीतल, क्षणभर में भव की तपन बुझे .... टेक
पूर्णत्व स्वयं ही मैं दिखता इच्छा में कभी उत्पन्न न हो
ज्ञानी जन निज ज्ञायक को ही चिन्तामणी कल्पतरू सु कहें .... टेक
है सर्व समागम आज मिले, छोड़ो प्रमाद पुरूषार्थ करो
बस निज आश्रय से ही तुझको आनंदमयी शिव राज्य मिले......... टेक

> *अपने कर्मों का फल सबको, स्वयं भोगना पड़ता है*
> *बुरा होय चाह भला होय, जो निश्चित है वही होता है .... टेक*

तर्ज - कहाँ-कहाँ तक भटक.........

कहाँ–कहाँ तक भटक चुके हो, कौन–कौन से गाँव में
अब तो आकर बैठो भैया, रत्नत्रय की नाव में .... टेक
नर्को की सुधि भूल गये क्या जहाँ न सुख का नाम था
मारकाट में उमर बिताई पल भर नहीं विराम था
भूख प्यास की विकट वेदना से फिरता बौराया था
इसी तरह से तड़प–तड़प कर अपना प्राण गंवाया था
चल कुमार्ग पर डाल रहे फिर वहीं बेड़ियाँ पाँव में .... टेक
एक स्वाँस में अठ दस बिरियाँ जन्मा मरा निगोद में
भूल गये वो सारी खबरें, इस आमोद प्रमोद में
छेदन–भेदन भूख प्यास के दुख तिर्यंच गति में पाये
अन्त समय स्वर्गो में रोये सुख न कभी भोग पाये
जहाँ मोक्ष का मार्ग सुलभ है अब आये उस ठांव में .... टेक
मगर यहां भी चला रहे फिर ढर्रा वहीं पुराना है
पर को अपना मान रहे हो वह निज को विसराना है
धन दौलत और ठाठ बाट सब यहीं पडे रह जायेंगे
दो क्षण में सब छूट जायेंगे जब यम राजा आयेंगे
फिर ये अवसर नहीं मिलेगा जो चूके इस दांव में .... टेक

तर्ज - पिया पिया रटते रटते..........

जन्म मरण का तोड के बंधन चलो चले उस पार सखे
वीतरागता की सत्ता का शाश्वत सत्य प्रकाश सखें .... टेक
कालवली का नहीं पदार्पण है सयोंग वियोग नहीं
कोई रोगी नहीं जहां पर किसी तरह का रोग नहीं
मन की व्यथा सुनायें किसको जहाँ न ऐसा दर्द सखे .... टेक
इंद्रियों का अधिपत्य नहीं है, जहाँ न योगो का बंधन
मिथ्यामति के भय से निकले, जहाँ न दुखियों का कुन्दन
नहीं उठाना पडे जहाँ पर कोई भी भवपार सखे .... टेक

> **पाप पुण्य की धूप छाँव में हुआ बहुत हैरान रे**
> **शुद्धातम को क्यों नहिं ध्याता स्वंय सिद्ध सुखखान रे .... टेक**

> मौकों कहां ढूंढे रे वन्दे मैं तो तेरे पास में
> न मंदिर में न मस्जिद में न काशी कैलाश में .... टेक

तर्ज - रामचन्द्र कह गये सिया से..........

एक लगन ही मेरे लागी ध्याऊँ आतमराम को
निज ज्ञायक प्रभु आश्रय से ही पाऊँ मैं शिवधाम को .... टेक
मोही बनकर जीवन खोया, झूठे जग जंजाल मे
अंधा हो विषयन में धायो भ्रमत फिरो संसार में
साँचो मारग मिलो न अब तक परम धरम कल्याण को .... टेक
धन्य घड़ी धनि दिवस आज में जिनवर दर्शन पाया है
श्री गुरू का उपदेश श्रवण कर आतम तत्व सुझाया है
अब तो निज में ही रम जाऊँ सब जग से निष्काम हो .... टेक
अन्तर के पट खुले आज निज प्रभुता पडी दिखाई है
संशय विभ्रम मोह छुड़ाओ सम्यक तृप्ती सुपाई है
रही जरूरत अब न किसी की स्वयं पूर्ण गुणधाम हो .... टेक

तर्ज - जनम-जनम तन धरने वालो..........

जनम–जनम तन धरने वालो, अपने से अनजान रे
बसे देह के देवालय में देव तनिक पहचान रे ....टेक
तीरथ–तीरथ भटका पाया द्वार नहीं शिवधाम का
नयन मूंदकर ध्यान किया कब अपने आतम राम का
शुद्धातम की शरण तरण तारण उसको पहिचान रे ....टेक
जग प्रपंच यह निज वैभव के कुशल लुटेरे जान लो
कृत्रिम कर्माधीन देह भी साथ न देगी जान लो
तू अभेद अविनाशी अपना जगा भेद विज्ञान रे ....टेक

तर्ज - मंदिर जी में चलो............

मंदिर जी में चलो मित्रजन, पूजन भजन रचावेंगे
पूजन भजन रचावेंगे, जिनजी के गुण सब गावेंगे ....टेक
जिन दर्शन ते पाप जावें अनुभव आवे आतम को
भेद विज्ञान उदै हो घट में चेतन पावे शिवपुर को ....टेक
शान्ति छवि के दर्शन से हो शान्ति अपने भावो में
दुखिया का दुख दूर होवे सुख पावे वह निज मन में ....टेक

ओ सोने वाले अब तो जरा जाग रे
कर्म तेरे पीछे लगे भाग रे ....टेक

चेतन तू तिहु काल अकेला
नदी–नाव संयोग मिले ज्यों, त्यों कुटुंब का मेला .... टेक

तर्ज - तेरी प्यारी प्यारी सूरत को..........

तेरे ज्ञान स्वरूपी आतम को दुर्गति में न जाना पड़े ! सुनो चेतन ....टेक
नरकगति जब जाता है जाते ही दुख पाता है
छेदन भेदन ताड़न तापन, भूख प्यास चिल्लाता है
अब वैतरणी के दुख से डरो, दुर्गति में न जाना पड़े ! सुनो चेतन ....टेक
जिसने मायाचार किया, गति तिर्यंच में जन्म लिया
लट चिंवटी भौरां मृग हाथी, गाय बैल कभी शेर हुआ
भाई मूक पशु कुन्दन तो सुनो कहिं फिर से न जाना पड़े ! सुनो चेतन ....टेक
पुण्य उदय से नरतन पाया, सुरगति में भी जन्म लिया
भोग रोग में रमा रात दिन आतम का नहिं ध्यान किया
अब अंत समय के दुख से डरो, दुर्गति में न जाना पड़े ! सुनो चेतन ....टेक
अब तो चेत रे अनुभव भैया जन्म अमोलक बीत रहा
रत्नों का पिण्ड आत्मा तू खुद, जड़ पत्थर में मुग्ध फिरा
बिन ज्ञान ध्यान होगा कैसे, जिन आगम की शरण गहो ! सुनो चेतन ....टेक

तर्ज - चेतन को मिला जब नरतन..........

चेतन को मिला जब नरतन तो फिर होश में आना भूल गया
इस हाट में बारा बार हुआ निज हाट में आना भूल गया ....टेक
इस भूल में इतना फूल गया कि ब्याज के बदले मूल गया
ममता ठगनी ने ऐसा ठगा कि अपना विराना भूल गया ....टेक
अविरत कषाय अरू योगों से दिन रात जो पाप के बंध लिये
नरकों में ऐसी मार सही कि गुजरा जमाना भूल गया ....टेक
हीरा पन्ना माणिक मोती ये सब पुदगल की पर्यायें
कंकड पत्थर पर मुग्ध हुआ आतम का खजाना भूल गया ....टेक

तर्ज - आत्म तत्व का करा दिया.........

आत्म तत्व का करा दिया जग को सच्चा दर्शन है
कुन्द कुन्द आचार्य श्री को सौ सौ बार नमन है ....टेक
सीमंधर की श्री वाणी को जैसा सुना उतारा
समयसार नियमसार में सार भर दिया सारा
आपा पर का भेद जानकर पायें मोक्ष चमन है ....टेक
जैन धर्म के सही समर्थक पथ निर्देशक प्यारे
तत्व प्रेमी भूल नहीं सकते उपकार तुम्हारे
ऐसे पर उपकारी गुरू को सौ सौ बार नमन है ....टेक

मैं तो आया तेरे दरबार, वीरा तेरे दर्शन को ....टेक

तर्ज - कंकड पत्थर गलें लगाये.............

कंकड पत्थर गलें लगाये, हीरे को ठुकराये, तुझे क्या हो गया है
पुदगल से तू रास रचाऐ, आतम को विसराये, तुझे क्या हो गया है ....टेक
कुछ तो समझ बाबरे, जाना कहाँ था कहाँ जा रहा
तरसे जिसे देवता भी, विषयों में तन वह गवाँ रहा
पारसमणि को हाथ में लेकर, उससे काग उडाये, तुझे क्या हो गया है ....टेक
जिस दिन खुलेगा पिंजडा तेरा पखेरू उड़ जाऐगा
लाया था साथ क्या रे, खोले ही मुट्ठी चला जाऐगा
सोना चाँदी महल अटारी, कुछ की साथ न जाऐ, तुझे क्या हो गया है ....टेक
प्राणी अभी भी समय अन्तर भी अखियाँ खोल लो
विषयों का रस छोड़ अंतर में आतम रस घोल लो
यह मानव पर्याय है दुर्लभ, हाथ न तेरे आऐ, तुझे क्या हो गया है ....टेक

तर्ज - जल से गलता रवि से जलता..........

जल से गलता रवि से जलता, कमल जगह छूट जाने से
मित्र शत्रु हो जाय जगत में अशुभ कर्म के आने से ....टेक
पार्श्वनाथ स्वामी को देखो ध्यान धरा जाकर वन में
कमठ जीव ने देख–देख के रोष किया अपने मन में
बड़ा किया उपसर्ग कमठ ने, कंकड पत्थर बरषाये
भूल गये वे देव जिन्होंने पन्द्रह मास रतन व बरसाये
तीर्थंकर भी नहिं छूटे हैं, अशुभ कर्म फल पाने से ....टेक
नारायण वो कृष्ण जिन्होंके चक्र सुदर्शन साथ चले
आयु कर्म जब हुआ है पूरण एक तीर पर प्राण हरे
महावीर यो कहें कोई न बचा बाल विष खाने से ....टेक

तर्ज - हे नर ज्ञानी ....

हे नर ज्ञानी तू तो आतम ज्ञानी
राग–द्वेष पुदगल की संपत्ति, निहचै शुद्ध निशानी ....टेक
जाय नरक पशु नरगति में यह परजाय विरानी
सिद्ध स्वरूप सदा अविनाशी, मानत विरले प्रानी ....टेक
सार पदारथ है तिंहु जग में नहिं क्रोधी नहिं मानी
दौलत सो घर मांहि विराजे लखि हूजे शिवथानी ....टेक

> *भगवान आतमा आनंद घन है, चेतन उस पर दृष्टि कर*
> *शांत स्वरूप को लक्ष्य में ले, हो जाऐंगे सब संकट हर ....टेक*

तर्ज - देखा जब अपने अंतर........

देखा जब अपने अंतर में कुछ और नहीं भगवान हूँ मैं
पर्याय भले हो दीन हीन अंदर से प्रभुतावान हूँ मैं
चैतन्य प्राण से जीवित नित, इन्द्रियवल स्वासोच्छवास नहीं
हूँ आयु रहित शिव अजर अमर, सच्चिदानंद गुणखान हूँ मैं ....टेक
आधीन नहीं संयोगो के, पर्यायों से अप्रभावी हूँ
स्वाधीन अखंड प्रतापी हूँ निज से ही वैभववान हूँ मैं
सामान्य विशेषों सहित विश्व, प्रत्यक्ष झलक जावे क्षण में
सर्वज्ञ सर्वदर्शी आदिक सम्यक निधियों की खान हूँ मैं ....टेक
तृप्ति आंनदमयी प्रगटी जब देखा अंतर नाथ को मैं
नहीं रही कामना अब कोई बस निर्विकार निष्काम हूँ मैं ....टेक

तर्ज - बडी देर भई नन्द लाला............खानदान

ओ वीर नाम की माला, तू क्यों न जावे मतवाला
जिसका सुमरण करने से सब, कटे कर्म जंजाला रे ....टेक
खुद जीवो जीने दो सबको, पाठ यही सिखलाया था
स्याद्वाद सिद्धान्त सुना कर, मतो का भेद मिटाया था
आतम से परमातम होना जिसका तत्व निराला रे ....टेक
अपने किऐ को खुद ही भोगे, कोई नहीं फलदाता है
जैसे कर्म कमाये कोई, वैसा ही फल पाता है
बन्द उदय का कर्म बताया वीर अहिंसा वाला रे ....टेक
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, गुण अनंत भंडारी है
वीर महा अतिवीर ससन्मति वर्द्धमान सुखकारी है
पंच नाम ये भक्त जपे जो, उसका भाग्य विशाला रे ....टेक

तर्ज - हम तुम चोरी से............धरती कहे पुकार

दरश तेरा पाया है, ये दिल हर्षाया है
कैसा सुहाना दरबार, ये देखो आज है लगा हुआ ....टेक
एक बार जो आया है, भगवन तेरे द्वारे
वो निहाल हो जाता है, और छूटे झंझट सारे
कुछ ऐसा है असर, है, असर, तेरे दरबार का ....टेक
ऐसी शान्ति क़ी मूरत न और कहीं भी पाई
जिसने ध्याया तुमको उसने है शान्ति पाई
पायेगा तू मजा, तू मजा शिव दरबार का ....टेक

तर्ज - हम तुम चोरी से............

परिग्रह डोरी से, झूठ और चोरी से, पापी बने है हूजुर
अरे ये बंधन है कर्म का ....टेक
पर नारी पर धन पर इस मन को लुभायके
भोगों पे ललचाया क्यों खुद को भुलायके
पायेगा ये सजा ये सजा तू पाप भार का ....टेक
देखो तुम जो आये क्या करतब है तुम्हारा
इंसा बनके देखो दो दीनों को सहारा
पायेगा ये दुआ ये दुआ दीनों के प्यार का ....टेक

तर्ज - अहसान तेरा होगा .... जंगली

तेरे दर्श को आऐ है हम सब, प्रभु दर्श हमें कर लेने दो
ये प्यास भरे है नैन मोरे इन नैनों को जल भर लेने दो ....टेक
जग से मनवा की प्रीत हटी, स्वारथ का हमें संसार मिला
इस जहर भरी दुनिया से निकल आराम हमें कर लेने दो ....टेक
एक सहारा हमको तेरा, और सहारा हमें कोई नही
मेरी नैया है डगमग डोल रही, भव सिन्धु से इसे तर लेने दो ....टेक

तर्ज - तेरे हुस्न की क्या तारीफ - लीडर

जिन धर्म की क्या तारीफ करूँ, यह धर्म अनादि कहाता है
इस बात को सत्य समझ लेना, यह धर्म मुक्ति का दाता है.........टेक
जिन धर्म से होता मन पावन जिन धर्म महा भवदधि तारण
कोई नीच अधर्मी पापी भव से, तिर जाता कर इसको धारण
जिनवाणी सुनने पढने से, जिन धर्म समझ में आता है.........टेक
जब पाप धरणि पर छाता है मानव दानव बन जाता है
जीवो और जीने दो सबको, यह जैन धर्म सिखलाता है
पाये जो रतन जिन धर्म शरण वह भव सागर तिर जाता है ....टेक

महावीर तुम्हारा यश गाने, इक भक्त द्वार पर आया है
अनुभव को पार उतारो अब, गुण गाने तेरा आया है ....टेक

मुनिवृन्द कह गये जिया रे जो देगा सो पायेगा
मुट्ठी बांधे आया जग में हाथ पसारे जायेगा..........टेक

जब एक रतन अनमोल है तो, फिर रत्नाकर कैसा होगा
जिसकी चर्चा ही है सुन्दर, तो वो कितना सुन्दर होगा ....टेक

तर्ज - इस रंग बदलती दुनिया में..............राजकुमार

ये दुनियां सराये फानी है, यहां दिल का लगाना ठीक नहीं
दिन चार की ये जिन्दगानी है, यहां घर का बसाना ठीक नहीं ....टेक
कहां रावण से बलवान गये, कहां दारा सिकन्दर हिटलर से
आज रही न उनकी निशानी है यहां रोब जमाना ठीक नहीं ....टेक
छल कपट से धन को कमा करके तू काहे तिजोरी भरता है
ये दौलत साथ न जाती है यों पाप कमाना ठीक नहीं ....टेक
क्या माता पिता सुतनारि अरे, सब स्वार्थ के ये साथी है
क्यों ममता इनसे ठानी हैं ये मोह बढ़ाना ठीक नहीं ....टेक

तर्ज - बैठ अकेला दो घड़ी.........

बैठ अकेला दो घड़ी भगवान का गुण गाया कर
मन मंदिर में ऐ जिया तू झाड़ू रोज लगाया कर ....टेक
सोने में तो रैन गुजारी, दिन भर करता पाप रहा
इसी तरह बरबाद जिन्दगी करता अपने आप रहा
छोड़ कुसंगति को जरा, सत्संग में तू जाया कर ....टेक
अनुभव इस जीवन का पाना बच्चों का कोई खेल नहीं
जन्म जन्म के शुभ कर्मो का होता जब तक मेल नहीं
नर भव को धन्य बनाना है तो उत्तम कर्म कमाया कर ....टेक

तर्ज - सुन चेतन प्यारे.........

सुन चेतन प्यारे साथ न चलती काया ....टेक
बालपने में खेला खाया जोवन ब्याह रचाया
अर्ध मृतक वत् जरा अवस्था यो ही जन्म गँवाया ....टेक
मानुष भव को सुरपति तरसें बड़े कठिन अब पाया
अब यह खोवे फिर न पावे बार–बार समझाया ....टेक

हे कुन्द-कुन्द आचार्य कह गये, जो निज आतम ध्यायेगा
पर से ममता छोड़ेगा, निश्चय भव से तिर जावेगा ......टेक

कितने ही शीतल बन जाओ, खेलो अथवा आग से
मिलता रहा मिलेगा सबको, अपने अपने भाग्य से ......टेक

मैं सच्चा वीर उपासक हूँ, अब दर्शन उनका पाना है
रहते है जहां पर वीर प्रभु, अब मुझे वहीं पर जाना है ......टेक

तर्ज - आओ बच्चो तुम्हें ....

जिनवाणी को नमन करो, यह वाणी है भगवान की
इस वाणी को नमन करो, यह वाणी है कल्याण की
वन्दे जिनवरम्, वन्दे गुरूवरम् ....टेक
इसके पूत सपूत अनेकों कुन्द–कुन्द जैसे ज्ञानी
खुद भी तरे अनेकों तारे मुक्ति कला के वरदानी
महावीर की वाणी है गुरू गौतम ने इसको धारी
सत्य धर्म का पाठ पढ़ाती भक्तों को है हितकारी
सब मिल करके नमन करो, यह वाणी केवलज्ञान की ....टेक
शुद्धातम है सिद्ध स्वरूपी जिनवाणी बतलाती है
शुद्ध ज्ञानमय चिदानंदमय बार–बार समझाती है
द्रव्य–भाव नोकर्म है न्यारे प्रगट प्रत्यक्ष दिखाती है
स्वसंवेदन से अनुभव में भी प्रमाणता आती है
मोह नींद से आई जगाने भव्य जनों के काम की ....टेक

मेरा जैन धर्म अनमोला, मेरा जैन धर्म अनमोला
इसी धर्म में वीर जिनेश्वर, मुक्ति का पंथ टटोला ....टेक

मैं ज्ञायक हूँ ये विकल्प भी स्वानुभूति में बाधक है
निर्विकल्प निज आराधन हो मुक्ति मार्ग का साधक है .....टेक

किस दिन ये पापी मन पावन होगा, पापों से बचता जीवन होगा
भेष दिगम्बर साधु जैसा साधन होगा ....टेक

कर दो भव पार है, नैया मझधार है
चौबीसों जिनराज जी, तेरा ही आधार है ....टेक

सुन्दरी

तर्ज - तुम कब तक घूमोगे संसार..............

तुम कब तक घूमोगे संसार माँ, चलो चालें चेतन जी दरबार माँ ....टेक
अनादि काल से घूम रहा है, पर में तू सुख को खोज रहा है
जहां सुख का नहीं है ठिकाना ....टेक
सिद्ध समान स्वभाव है चेतन, जड़ कर्मों से भिन्न है चेतन
स्व सन्मुख पर्याय प्रगटाओ ना ....टेक
अब तक जीवन ऐसा बिताया, संसार को ही है तूने बढ़ाया
आज पुण्य उदय है हमारा ....टेक
मृत्यु महोत्सव की तैयारी करले, ममत्व को तजकर समता को धरले
तेरे पास है सुख का खजाना ....टेक

तर्ज - ज्ञानमयी चेतन तुझे जग......

ज्ञानमयी चेतन तुझे जग से क्या काम, मोक्ष तेरी मंजिल है ध्रुव तेरा धाम ....टेक
पल–पल की भूल तूझे पल–पल रूलायें, भव–भव में भटका के दुख ही दिलायें
सतगुरू की वाणी को सुनो आतमराम ....टेक
इस जग में तेरा कोई नहीं है सहारा, कर–कर ममत्व दुख पाया अपारा
फिर भी तू करता क्यों उन्हीं में मुकाम ....टेक
चेतन स्वयं ही तू सुख का निधान है, दुख का कारण तुझे तेरा अज्ञान है
मैं तो प्रभु सुखमय हूँ ऐसा कर ध्यान टेक
मंजिल को पाने का हर दम यतन हो मुक्त रूप प्रभुता की प्रतिक्षण लगन हो
शीघ्र ही मिलेगा तुझे शाश्वत शिवधाम

तर्ज - आतम ही महान जग म ....

आतम ही महान जग में आतम ही है महान ...टेक
अनादि काल से स्व को भूला, भूल रहा इसलिए भव झूला
पाया दुख महान जग में आतम ही है महान ....टेक
निज आतम का ध्यान जो धरता, मुक्ति सुन्दरी को वो वरता
प्रगटे केवलज्ञान स्वयं में आतम ही है महान ....टेक
मुश्किल से ये नरभव पाया, धन–दौलत और सुन्दर काया
अचल धरले ध्यान स्वयं में आतम ही है महान ....टेक

तर्ज - एक दो तीन चार .... तेजाब

आतम में आतम में आतम में आतम में आनंद अपार
देखो भैया निज में रमके आतम में बहती है, अमृत की धार ....टेक
जो निज में रमता वह खुद को पाता
अनादि कर्म बंधन को है नसाता
करलो आतम का ज्ञान, आतम में बहती है, अमृत की धार........टेक
अनंत गुणों की खान है आत्मा
अंनत शक्तियों का भंडार आत्मा
सिद्ध समान है ये, आतम में बहती है, अमृत की धार ....टेक
वीर प्रभु ने ध्याया है आत्मा
गणधर के ज्ञान में आया है आत्मा
धरलो आतम का ध्यान, आतम में बहती है, अमृत की धार....टेक

तर्ज - मेरा सनम सबसे प्यारा..........

मेरा प्रभु सबसे न्यारा है सबसे न्यारा है'
ये हम सबको बडा प्यारा है बडा प्यारा है' ....टेक
मुख पे सदा प्रभु नाम रहे, जिनके भजन से ही काम रहे
जिन जैसा जबलों हीं हो जाऊँ मैं, आतम में ही लीन हो जाऊँ मैं
भव से हो छुटकारा है, सबसे न्यारा है ......टेक
सर्व कर्म प्रभु नाश किए, वीतराग भगवंत हुऐ
आतम को अनुभव से जाना जभी, परमातम पद पाया तभी
खुला मुक्ति का द्वारा है सबसे न्यारा है ......टेक

चाह नहीं

चाह नहीं ज्ञानी बनकर अपना नाम कमाने की
चाह नहीं पण्डित बनकर जग में यश फैलाने की
चाह यही बस मुझको जिनवाणी की बात सुनाने की
जिनवाणी की वेदी पर सन्यास मरण कर जाने की

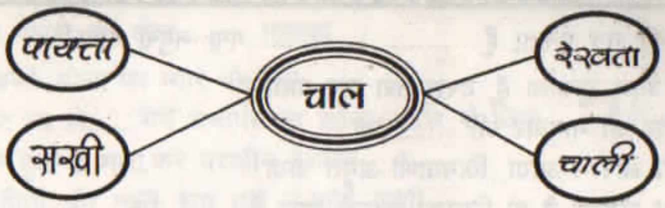

तर्ज - तेंरो सब संकट मिट जाय.............

तेरो सब संकट मिट जाय, दर्शन सोनागिरि के कर लें ....टेक
उपर की वंदना करले, नीचे की वंदना कर लें
परिकम्मा लेऊ लगाय ....टेक
आठ द्रव्य बनाओ भारी, पूजा कर न्यारी न्यारी
पूजो श्री चंदा प्रभु महाराज ....टेक
5II करोड मुनि मोक्ष गये हैं, पद रज को छोड गये है
प्यारे नंग अनंग कुमार ....टेक
हम भी आतम को ध्यावें, परमातम पद को पावें
बन जाऐं भक्त नहीं भगवान ....टेक

तर्ज - जे मानुष तन को पाय...........

जे मानुष तन को पाय, चेतन धरम भूल मत जइयो ....टेक
तुम जिन मंदिर को जइयो, दर्शन करके सुख पइयो
लगइयो वीर प्रभु से ध्यान, चेतन धरम भूल मत जइयो ....टेक
तुम नमोकार उर लइयो, फिर शास्त्र में ध्यान लगइयो
जिनवाणी पै धर ध्यान, चेतन धरम भूल मत जइयो ....टेक

तर्ज - मेरा बाबू छैल छबीला .... घर द्वार

तेरा दो दिन का यहां मेला, तू तो जायेगा
कर ले भलाई, धर्म कमाई, फिर पछतायेगा ....टेक
मोह माया में फंस के भूल गया सब भैया
नाम प्रभु का जप ले सुख पावे दिन रतियां
ध्यान लगा ले, प्रभु गुण गाले, तू तिर जायेगा ....टेक
देखो दुनियां बेगानी तू क्यों करता नादानी
ना कोई संग न साथी दो दिन के राजा रानी
जीवन तेरा, पाप ने घेरा, क्या ले जायेगा ....टेक

चेतन कर लेना शुभ काम, जासे आगे शुभ गति होवे
जासे आगे शुभ गति होवे, जासे जनम-मरण नहीं रोवे ....टेक

तर्ज-प्यार की धुन सुनाता हूँ ....गंगा जमुना सरस्वती

नित उठ शीश झुकाता हूँ, दरश तेरा जब पाता हूँ
सन्मति वीर जी महावीर जी² ....टेक
आस लगी और मैं आया, जिनवाणी अमृत पाया
ऐसा ध्यान लगाया है हो जिनवर तुझको पाया है ....टेक
दृष्टि आपकी हो जाये, भटके हुऐ वो बच पाये
ऐसी लगन लगाऊँगा, कि भव सागर से तिर जाये ....टेक

तर्ज - रे मन कर लो आतम ज्ञान............

रे मन कर लो आतम ज्ञान उमरिया रह गई थोड़ी ....टेक
तुम विदेह क्षेत्र को जइयो, सीमंधर प्रभु सो कहियो
दर्शा दो समयसार, उमरिया रह गई थोडी ....टेक
प्रभु अंनत चतुष्टय पाया, मेरा मन भी ललचाया
में पाऊँ चिद अविकार ....टेक
जो जैनी कुल को पावं, और आतम ज्ञान न पावें
उसका जीवन बेकार ....टेक

तर्ज - रेशमी सलवार............ नया दौर

भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का
मजा कहा नहीं जाये इस कगांली का ....टेक
बच्चा हो या बच्ची उसे निंदिया आये अच्छी
पास न होवे लंगोटी उसे चिन्ता हो फिर किसकी
न भय रखवाली का ....टेक
धन्य दिगम्बर साधु नग्न हो वन में रहते
खडे–खड़े इकबार हाथ में भोजन करते
काम क्या थाली का ....टेक
तज के सारी दुविधा को जो निज आतम को ध्यावे
धन्य जन्म है उनका जो शिव आनंद को पावे
मुक्तिपुर वाली का ....टेक

तर्ज - बिन पूजन पड़े न चैन......

बिन पूजन पड़े न चैन, अहो शिवदेवी के ललना ....टेक
पशुअन की दया विचारी,तज ब्याह गये गिरनारी
धारी मन दीक्षा धार, अहो शिव देवी के ललना ....टेक
तुम तीन लोक के स्वामी, दुख मेटो अन्तरयामी
तुमसा बन जाऊँ भगवान, अहो शिवदेवी के ललना ....टेक

तर्ज - दिल दीवाने का डोला........ तहलका

भव फेरा करते डोला पर प्यार के लिए
मैनें अन्तर्पट ना हो....... मैनें अन्तर्पट ना खोला उद्वार के लिए ....टेक
पर प्यार में दुख है भारा,करे पराधीन बेचारा²
सुत मात–पिता और नारी, सगं चले न कोई साथी
ये नरभव है हो........ ये नर भव है अनमोला भव पार के लिए ....टेक
थोड़े दिन की जिन्दगानी, धन दौलत रूप जवानी²
सभी नश्वर है ये प्राणी, निज आतम अमर कहानी
निज का अनुभव कर हो....... निज का अनुभव कर भाई भगवान के लिए ....टेक

तर्ज - घर आया मेरा परदेशी..........

चाह मुझे है दर्शन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ....टेक
वीतराग छवि प्यारी है, जग जन को मनहारी है
मूरत मेरे भगवन की, वीर चरण स्पर्शन की ....टेक
हाथ पे हाथ धरे ऐसे, करना कुछ न रहा जैसे
देख दशा पद्मासन की, वीर चरण स्पर्शन का ....टेक
जो शिव आनंद चाहो तुम, इन सा ध्यान लगाओ तुम
विपत हरे भव भटकन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की.........टेक

तर्ज - लोगो ने कहा है.................

सतों से सुना है, जिनवाणी में लिखा है, सब ने यही कहा है–2
कि ध्यान करने वाले कभी डरते नहीं
जो डरतें है वो ध्यान करते नहीं ....टेक
सर्प गले में डलवादो, चाहे आगी लगवा दों
राहों में विछादो काटें, चाहे सूली चढ़वा दो
ध्यानी तो बढते है, बढते ही रहते है।
सबसे कह उठते है, ...ध्यान....... टेक
सर्पो के घर बन जाये, बेलों से तन ढक जाये
बाहुबली सा ध्यानी केवल ज्ञान बिना न थक पाये
ध्यानी कब रूकते है, ध्यान में रहते है
हम सबसे कह उठते है ....ध्यान.......टेक

आये आत्मा अकेली, जाये आत्मा अकेली
ये सब स्वारथ के है साथी इनको छोड़ रे ....टेक

करियो इन्द्रध्वज का पाठ चदौंवा झालरदार लइयों ....टेक

तर्ज- मेरा नाम चमेली ....

तू तो आत्मा अकेला, तेरे पर का नहीं झमेला
तू है चिदानंद अलबेला शक्तिबान रे ....टेक
तुम सब राग–द्वेष को छोड़ो, अब कर्मो से नाता तोड़ो
खुद को निज स्वभाव में जोड़ो बेडा पार है ....टेक
क्यो तू मोह में मतवाला, तू तो चेतन शुद्व निराला
पियो निज रस का ही प्याला खुद अपार है ....टेक
तू तो अंनत चतुष्टय धारी, तेरी जड़ से लीला न्यारी
स्वयं चेतन गुण भंडारी खुद भगवान है ....टेक
जिसने लिया आत्म रस गटका, उसका मिटा जगत का खटका
फिर वह जग में कभी न अटका सिद्व समान है.........टेक

तर्ज - मन में सोच विचार.............

मन में सोच विचार बुल बुला पानी का
दो दिन में उड़ जायेगा नशा जवानी का..... टेक
ये जीवन तेरा ऐसे, पानी में बताशा जैसे
जब मार पड़गी यम की, तब प्राण बचेंगे कैसे
तेरे अभिमानो का .... टेक
उठ जाय न अब कर देरी, क्यूं करता मेरी मेरी
यह सुन्दर काया तेरी, बन जायेगी खाक की डेरी
तेरी मनमानी का........ टेक
यह पिजड़ा हुआ पुराना, इससे पक्षी उड़ जाना
महावीर सुमर अब प्यारे, ये मौका हाथ न आये
तेरी जिन्दगानी का....... टेक

हे जीव!
जो सोच रहा दिन रात वह पूरा न होगा
सोचते ही सोचते ये जीवन पूरा होगा
भूत भविष्य की बात छोड़ क्या रखा इनमें
वर्तमान करले ठीक शिवपुर का मारग दिखाई देगा

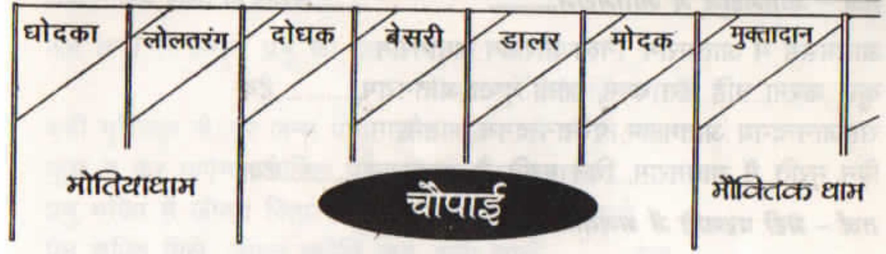

तर्ज - पहिना गये श्री महावीर..............

पहिना गये श्री महावीर गजरा ज्ञान को
ये गजरा सती सीता ने पहिनो², भयो अग्नि कुण्ड को नीर ....टेक
ये गजरा सती सोमा पहिनो², देखो हुआ नाग का हार ....टेक
ये गजरा सती द्रोपदी ने पहिनो², बड़ो बीच सभा में चीर ....टेक

तर्ज - हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम...............

हूँ स्वतंत्र निशचल निष्काम, ज्ञाता दृष्टा आतमराम ....टेक
मैं वह हूँ जो है भगवान, जो मैं हूँ वह है भगवान
अन्तर वही ऊपरी जान, वे विराग वह राग वितान ....टेक
मम स्वरूप है सिद्व समान, अमित शक्ति सुखज्ञान निधान
किन्तु आश वश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ....टेक
सुख–दुख दाता कोई न आन, मोह–राग–रूप दुख की खान
निज को निज पर को पर जान, फिर दुख का नहीं लेश निधान ....टेक
होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम
दूर हटो परकृत परिणाम ज्ञायक ....टेक

तर्ज - धन्य धन्य जिनधर्म हमारो............

धन्य धन्य जिनधर्म हमारो, भव सागर से तारण हारो
धन्य जिनेश्वर धन्य जिनागम, धन्य–धन्य ध्रुवधाम हमारो ....टेक
देव शास्त्र गुरू तीन रतन पा, धन्य बनो नर जन्म हमारो ....टेक
वीतराग सर्वज्ञ देव लखि, सम्यक दर्शन उर में धारो ....टेक
द्वादशांग जिनवाणी हृदय धरि, भेद विज्ञान कला विस्तारो ....टेक
परम दिगम्बर मुनिवर वन्दूँ, सम्यक चारित्र रत्न हमारो ....टेक

झूठी दुनियाँ की उलझन में पड़ गयो रे
गजब कियो चेतन गजब कियो रे......टेक

तर्ज – आतमराम मैं आतमराम..........

आतमराम मैं आतमराम, नित्य निरंजन आतमराम
कुछ करना नहिं मेरा काम, ज्ञाता दृष्टा आतमराम ....टेक
सहजानन्दमय आतमराम, परमानन्दमय आतमराम
बिन मूरति मैं आतमराम, चिन मूरति मैं आतमराम ....टेक

तर्ज – मेरी परणति में भगवान.........

मेरी परणति में भगवान प्रकट हो जावे आतम ज्ञान ....टेक
मम स्वरूप अत्यन्त मनोहर, ध्रुव अखण्ड आनंद सरोवर
निश दिन रहे उसी का ध्यान, प्रगट हो जावे आतम ज्ञान ....टेक
कर आराधन निज स्वभाव का, भय मैंटू दुखमय विभाव का
करलूं निज पर का कल्याण, प्रगट हो जावे आतम ज्ञान ....टेक
जिसने निज आतम आराधा, दूर हुई उसकी सब बाधा
प्रगटा उसको मोक्ष महान, प्रगट हो जावे आतम ज्ञान ....टेक

तर्ज – निजपुर में आज..........

निजपुर में आज मची रे होरी ....टेक
उमगि चिदानंद जी इत आये, इत आई सुमती गोरी ....टेक
समकित केसर रंग बनाओ, चारित की पिचकारी रे ....टेक
देखन आये बुधजन भीगे, निरख्यो ख्याल अनोखी रे ....टेक

तर्ज – क्यो न ध्यान लगावे..........

क्यो न ध्यान लगावे वीर से बाबरिया
जाना देश पराये झमेला दो दिन का...........टेक
जीवन तेरा है इक सपना, इस दुनियाँ में कोई न अपना
हंस अकेला जाय वीर से ....टेक
जो तुमको है सबसे प्यारा, मृत देख तुझे होगा न्यारा
कोई न संग में जाय वीर से ....टेक
सत्गुरू सुनले यह समझावे, धर्म बिना कोई काम न आवे
निज आतम पहचान वीर से ....टेक

चिकने घड़े हम है भैया चिकने घड़े
क्रोध मान माया लोभ मोह से मढ़े, हम है भैया चिकने घड़े ॥
जिनवाणी को सुनें नाहि, सुनें भी तो माने नाहि
तत्काल झाड़कर होत है खड़े, हम है भैया चिकने घड़े ॥

तर्ज – अब लगा ले लगन.........

अब लगा ले लगन, प्रभु का करले भजन, चेत प्राणी
बीत जाये तेरी जिन्दगानी ....टेक
बड़ी मुश्किल से नर जन्म पाया, और पाकर के यों ही गमाया
कुछ न कर पाऐगा, आखिर पछतायेगा, सुन अज्ञानी ....टेक
प्रभु भक्ति में जीवन बिताले, यहां आकार के धर्म कमाले
प्रेम शक्ति मिले, जीवन ज्योति जगे, भव्य ज्ञानी ....टेक

तर्ज – जहाँ मोक्ष गये प्रभु.........

जहाँ मोक्ष गये प्रभु पार्श्व रे भैया, चलो तो दर्शन कर आवें
ऐ जी चलो तो दर्शन कर आवे, मिल चलो तो वंदन कर आवें ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को जन्म भयो, और बरसे रत्न अपार ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को नव्हन भयो, पाण्डुक शिला के बीच ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को तप भयो, और अश्व वन के बीच ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को ज्ञान भयो, और अश्व वन के बीच ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को मोक्ष भयो, सम्मेद शिखर के बीच ....टेक

तर्ज – मंदिर हमारे में आ.........

मंदिर हमारे में आ जइयो, टीले बाले बाबा
टीले बाले बाबा, ओ टीले बाले बाबा ....टेक
जैसो क्षीर झरो गैया को, वैसी ही धारा दिखाय जइयो, टीले बाले बाबा ....टेक
जैसों सपनों ग्वाले को दीनों, वैसो ही सपनों दै जइयो, टीले वाले बाबा ....टेक
जैसों मान रखो ग्वाले को, वैसो ही मान रखाय जइयो, टीले बाले बाबा ....टेक

तर्ज – खाली पुद्गल पड़ा...........

खाली पुदगल पड़ा रह जायेगा, जब चेतन अकेला उड़ जायेगा ....टेक
छूटेगी दौलत खजाने की सारी, मात पिता बहन पुत्र और नारी ....टेक
संग प्रेमी नहीं कोई जायेगा ....टेक
माटी के पुतले को तू क्यों सजाये, मलमल के साबुन तेल लगाये
इक पल में बिखर जायेगा ....टेक

अद्‌भुत प्रभुता वाले है, प्रभुवर हमारे-२
वीतरागता धारें है, प्रभुवर हमारे-२
देखन जानन हारे है, प्रभुवर हमारे-२

तर्ज - आतमराम मैं आतमराम..........

आतमराम मैं आतमराम, नित्य निरंजन आतमराम
कुछ करना नहिं मेरा काम, ज्ञाता दृष्टा आतमराम ....टेक
सहजानन्दमय आतमराम, परमानन्दमय आतमराम
बिन मूरति मैं आतमराम, चिन मूरति मैं आतमराम ....टेक

तर्ज - मेरी परणति में भगवान..........

मेरी परणति में भगवान प्रकट हो जावे आतम ज्ञान ....टेक
मम स्वरूप अत्यन्त मनोहर, ध्रुव अखण्ड आनंद सरोवर
निश दिन रहे उसी का ध्यान, प्रगट हो जावे आतम ज्ञान ....टेक
कर आराधन निज स्वभाव का, भय मैंटू दुखमय विभाव का
करलूं निज पर का कल्याण, प्रगट हो जावे आतम ज्ञान ....टेक
जिसने निज आतम आराधा, दूर हुई उसकी सब बाधा
प्रगटा उसको मोक्ष महान, प्रगट हो जावे आतम ज्ञान ....टेक

तर्ज - निजपुर में आज..........

निजपुर में आज मची रे होरी ....टेक
उमगि चिदानंद जी इत आये, इत आई सुमती गोरी ....टेक
समकित केसर रंग बनाओ, चारित की पिचकारी रे ....टेक
देखन आये बुधजन भीगे, निरख्यो ख्याल अनोखी रे ....टेक

तर्ज - क्यो न ध्यान लगावे..........

क्यो न ध्यान लगावे वीर से बाबरिया
जाना देश पराये झमेला दो दिन का............टेक
जीवन तेरा है इक सपना, इस दुनियाँ में कोई न अपना
हंस अकेला जाय वीर से ....टेक
जो तुमको है सबसे प्यारा, मृत देख तुझे होगा न्यारा
कोई न संग में जाय वीर से ....टेक
सत्‌गुरू सुनले यह समझावे, धर्म बिना कोई काम न आवे
निज आतम पहचान वीर से ....टेक

चिकने घड़े हम है भैया चिकने घड़े
क्रोध मान माया लोभ मोह से मढ़े, हम है भैया चिकने घड़े ॥
जिनवाणी को सुनें नाहि, सुनें भी तो माने नाहि
तत्काल झाड़कर होत है खड़े, हम है भैया चिकने घड़े ॥

तर्ज - अब लगा ले लगन..........

अब लगा ले लगन, प्रभु का करले भजन, चेत प्राणी
बीत जाये तेरी जिन्दगानी ....टेक
बड़ी मुश्किल से नर जन्म पाया, और पाकर के यों ही गमाया
कुछ न कर पाएगा, आखिर पछतायेगा, सुन अज्ञानी ....टेक
प्रभु भक्ति में जीवन बिताले, यहां आकार के धर्म कमाले
प्रेम शक्ति मिले, जीवन ज्योति जगे, भव्य ज्ञानी ....टेक

तर्ज - जहाँ मोक्ष गये प्रभु..........

जहाँ मोक्ष गये प्रभु पार्श्व रे भैया, चलो तो दर्शन कर आवें
ऐ जी चलो तो दर्शन कर आवे, मिल चलो तो वंदन कर आवें ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को जन्म भयो, और बरसे रत्न अपार ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को नव्हन भयो, पाण्डुक शिला के बीच ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को तप भयो, और अश्व वन के बीच ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को ज्ञान भयो, और अश्व वन के बीच ....टेक
जहाँ पार्श्व प्रभु को मोक्ष भयो, सम्मेद शिखर के बीच ....टेक

तर्ज - मंदिर हमारे में आ..........

मंदिर हमारे में आ जइयो, टीले बाले बाबा
टीले बाले बाबा, ओ टीले बाले बाबा ....टेक
जैसो क्षीर झरी गैया को, वैसी ही धारा दिखाय जइयो, टीले बाले बाबा ....टेक
जैसों सपनों ग्वाले को दीनों, वैसो ही सपनों दै जइयो, टीले वाले बाबा ....टेक
जैसों मान रखो ग्वाले को, वैसो ही मान रखाय जइयो, टीले बाले बाबा ....टेक

तर्ज - खाली पुद्‌गल पड़ा..........

खाली पुदगल पड़ा रह जायेगा, जब चेतन अकेला उड़ जायेगा ....टेक
छूटेगी दौलत खजाने की सारी, मात पिता बहन पुत्र और नारी ....टेक
संग प्रेमी नहीं कोई जायेगा ....टेक
माटी के पुतले को तू क्यों सजाये, मलमल के साबुन तेल लगाये
इक पल में बिखर जायेगा ....टेक

अद्‌भुत प्रभुता वाले है, प्रभुवर हमारे-२
वीतरागता धारें है, प्रभुवर हमारे-२
देखन जानन हारे है, प्रभुवर हमारे-२

तर्ज - वीर नाम सुखदाई ....

वीर नाम सुखदाई, भजन करो भाई, यह जीवन दो दिन का ....टेक
यह संसार माटी का पुतला, बूंद पड़े गल जाई ....टेक
धन माया और माल खजाना, संग चले न पाई ....टेक
कोठी बंगले महल अटारी, यही पड़े रह जाई ....टेक
बेटा बेटी कुटुम्ब कबीला, मरघट तक पहुँचाई .....टेक
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप, यह जिय के सुखदाई ....टेक

तर्ज - प्रभु रथ में हुये सवार.....

प्रभु रथ में हुये सवार, नक्कारा बाज रहा ..... टेक
क्या ठुमक ठुमक रथ चलता है, ये छत्तर शीश पर हिलता है
क्या छाई आज बहार, नक्कारा बाज रहा ......टेक
किस छवि से नाथ विराज रहे नासा दृष्टि से छाज रहे
अद्‌भुत बाजे सब बाज रहे, सब बोले जय जय कार ....टेक

तर्ज - जिन मंदिर में धर्म...........

जिन मंदिर में धर्म महोत्सव, छाया हर्ष महान रे पावें पथ निर्वाण रे ......टेक
हिल मिल कर सब भक्ति रचावें, हरष हरष प्रभु के गुण गावें
करे भेद विज्ञान रे ....टेक
प्रभु की वाणी सुने सुनावें, मोह महातम दूर भगावें
करें स्वपर कल्याण रे ....टेक

तर्ज - तुम सुनो श्री महावीर.........

तुम सुनो श्री महावीर, हरो भव पीर, करो भव पारा
है तुम बिन कौन हमारा ....टेक
तुम दीनानाथ कहाते हो, दीनों के कष्ट मिटाते हो
हम आपके है आधीन करो, करो निस्तारा ....टेक
दुनियां में कोई न मेरा है, बस एक सहारा तेरा है
तुम ही ने स्वामी सबका कष्ट निवारा ....टेक

तर्ज - चन्द्र प्रभु भगवान.........

चन्द्र प्रभु भगवान, अरज मेरी सुन लेना .... टेक
सब सुख धारण भव दुख कारण, तारज तरण जिहाज .... टेक
भव–भव मैं फिरूं भटकता, मौकों पार लगाओ ...... टेक
तुम समान या जग के माहीं, और न दूजा नाथ ...... टेक
अनुभव की अब अरज यही है, भव भय होऊ सहाय ...... टेक

तर्ज - मोक्ष परम पद पायेंगे ....

मोक्ष परम पद पायेंगे, अब नहीं चक्कर लगायेंगे
जिनवर के गुण गायेंगे, जिनवर हम बन जायेंगे ....टेक
अपना जग में कुछ भी नही है, शुद्व आत्म को ध्यावेंगे,
परम मोक्ष पद पावेंगे ....टेक
धन शरीर परिवार अथिर है, चेतन में रम जायेंगे,
अब जग में नहीं भरमायेंगे ....टेक
भोग विषय सब दुख के कारण, इनसे पीछा छुटायेंगे,
अब नहीं चक्कर लगायेंगे ....टेक
भेद विज्ञान की साधना करके, वीतराग बन जायेंगे,
अब नहीं चक्कर लगायेंगे ....टेक

तर्ज - तेरे दर्शन से जिनराज..........

तेरे दर्शन से जिनराज, अशुभ परिणाम गए सब आज ....टेक
जिसने तेरा शरणा लीना, उसने जन्म सफल निज कीना
सुधरे सारे उसके काज, अशुभ परिणाम गये सब आज ..... टेक
जिसने तुझसे नेहा जोड़ा, आवागमन का फन्दा तोड़ा
नहीं रहा कर्म मोहताज, अशुभ परिणाम गये सब आज ..... टेक

तर्ज - त्रिशला के नंद कुमार ....

त्रिशला के नंद कुमार, मेरी टेर सुनो अब सावलियाँ ....टेक
नरगति सुरगति भटकत डोला, अमर भयो न मेरो चोला
सुख दुख सहे अपार ....टेक
लख चौरासी मॉहि फिरा हूँ, जन्म लिया कई बार मरा हूँ
चारों गति मंझार ....टेक
बड़े भाग्य से अवसर आया, पुण्य उदय से नरतन पाया
आया तेरे द्वार ....टेक
दिल में सोच समझले प्राणी, नरतन सफल करो सब प्राणी
मिले न बारम्बार ....टेक

तर्ज - कैसे करूँ गुणगान..............

कैसे करूँ गुणगान प्रभुजी तेरा कैसे करूँ गुणगान
पर से भिन्न स्व से अभिन्न, देखी चीज महान ....टेक
सारी पृथ्वी कागज बनाऊँ, समुद्रजल की स्याही लाऊँ
सारे वनस्पति की कलम बनाऊँ, अरे पूरा हो न बखान ....टेक

तर्ज - प्रभु नाम जपले नहीं तो........

प्रभु नाम जपले नहीं तो पछतायेगा
माटी का खिलौना माटी में मिल जायेगा ....टेक
सुन्दर रूप देखकर फूला, धन योवन के मद में भूला
एक दिन हंस अकेला उड़ जायेगा ....टेक
पत्नी पति पिता और माता, सखी सुमित्र सहोदर भ्राता
पल भर में नाता सभी से छूट जायेगा ....टेक
हीरा सा जन्म गवांय दिया सोय–2, फिर पछतायेगा दीवाना बना रोय–2
चिदानंद ऐसा जनम नही पायेगा ....टेक

तर्ज - सांची जोतो वाली माता .... आशा

जय जय जय जिनवाणी माता SS SS तेरी जय जयकार
तूने मुझे जगाया मां जिनवाणीये, मैं विषयों में सोया था जिनवाणीये
माँ जिनवाणीये मां जिनवाणीये मां जिनवाणीये ....टेक
नरक निगोद में कष्ट उठाया, पशु बनकर मैंने मार उठाया
देव बना फिर भी सुख न पाया–2 तूने सुख बतलाया मां जिनवाणीये ....टेक
तूने सच्चा धर्म बताया, आत्म तत्व का मर्म बताया
वीतराग का मार्ग बताया–2 स्वयं सिद्व बतलाया मां जिनवाणीये ....टेक
अरे प्रेम से बोलो–जय जिनवाणी, बच्चे बोलो–जय जिनवाणी
बूढ़े बोलो–जय जिनवाणी, सब मिल बोलो–जय जिनवाणी, जय जिनवाणी SS SS

तर्ज - महावीर की वाणी है............

महावीर की वाणी है, जिनवाणी हमारी
जिनवाणी हमारी जिनवाणी हमारी ....टेक
श्री जिनवर से भेंट करावें, जग को मुक्ति मार्ग दिखावें
मोह का नाश करावें रे, जिनवाणी हमारी ....टेक
शुद्वातम से प्रीति लगावे, जड़ चेतन को भिन्न बतावे
भेद विज्ञान करावे रे, जिनवाणी हमारी ....टेक

तर्ज - मेरे मन मंदिर में..............

मेरे मन मंदिर में आन पधारो महावीर भगवान ....टेक
भगवन तुम आनंद सरोवर, रूप तुम्हारा महामनोहर
निशदिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान.........टेक
भक्त जनों के कष्ट निवारे, आप तरें हमको भी तारे
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान ....टेक

तर्ज - रघुपति राघव राजा राम.............

पारस नाम पारस नाम मेरे प्रभु का पारस नाम ....टेक
हे सुखकारी परहितकारी, जगहितकारी महिमा भारी
निशदिन जपते तेरा नाम, मेरे प्रभु का पारस नाम ....टेक
वामानंदन कर्म निकंदन, भवभव भंजन जनम निरंजन
भक्त जनों के तुम अभिराम, मेरे प्रभु का पारस नाम ....टेक
दे उपदेश भविक जन तारे, सिद्वालय में आप विराजे
हम भी पहुँचे शिवपुर धाम, मेरे प्रभु का पारस नाम ....टेक

तर्ज - म्हारे अंगना में आये...........

म्हारे अंगना में आये मुनिराज, हमारो मन नाच्चे है –2
नाच्चे है भैया नाच्चे है –2 म्हारे ह्वदय विराजे कुंद–कुंद
हमारो मन नाच्चे है ....टेक
मुनिवर हमको प्यारा लागे, कुंद कुंद हमको मन भावे
समयसार का सार बताया, सच्चा मुक्ति मार्ग बताया
अब हम भी – 2 बनेगें मुनिराज ....टेक
धन्य–धन्य है भाग्य हमारे, कुन्द–कुन्द है साथ हमारे
पच परमागम प्रभु ने रचाया, भगवान आत्मा हमको बताया
अब हम भी –2 बनेंगे भगवान ....टेक

तर्ज - कैसे बनी कैसे बनी...........

पार लगा पार लगा, पार लगा भव पार लगा
हम आये तेरे द्वारे पार लगा ....टेक
हमने सुना सती मैना को तारा, श्री पाल को पार लगाया
सबके कर्मो को तू ही भगा ....टेक
हमने सुना सती सोमा को तारा, नाग का तुमने हार बनाया
चमत्कार से दिया जगा ....टेक
अनुभव ये जीवन यू ही गवांया, वीर चरणों में न ध्यान लगाया
कटे भव थारो मन मन में लगा ....टेक

तर्ज - धुन रे धुनिया अपनी धुन............

धुन रे धुनिया अपनी धुन, निज की धुन में पाप न पुण्य ....टेक
तेरी रूई में चार विनोले, क्रोध मान अरू माया लोभ
पहले इनको चुन–चुन–चुन, धुन रे धुनिया अपनी धुन ....टेक
बाहर से अब मन को मोड़ो, राग द्वेष मद की जड़ खोदो
निज को निज में गुन–गुन–गुन, धुन रे धुनिया अपनी धुन ....टेक

तर्ज – चाल म्हारा भायला...........

चाल म्हारा भायला तू जिनमंदिर में आज रे
वीर प्रभु का दर्शन करके, सफल करो अवतार रे ....टेक
शुद्धातम की बात बतावें, हरेक जीव को शुद्ध बतावें
पाओ आतम ज्ञान रे, चाल म्हारा भायला ....टेक
आतम चर्चा यहां है चलती, भेद ज्ञान की कला है मिलती
एक यही सुखकार रे, चाल म्हारा.......टेक
मंगल उत्सव आज यहां पर, सिद्धचक्र का पाठ यहां पर
आओं सब नर नार रे, चाल म्हारा ....टेक

तर्ज – शिवपुर की पकड़ो डगरिया........

शिवपुर की पकड़ो डगरिया, चालो भैया मोक्ष नगरिया
मोक्ष नगरिया, सिद्धों की नगरिया, सिद्धो की नगरिया, अपनी नगरिया
शिवपुर की पकड़ो ....टेक
चार गति में अब न रूलेंगे, सिद्ध शिला पर हम सब मिलेंगे
आनंद की छाये बदरिया, चालो भैया मोक्ष नगरिया ....टेक
मुनियों का मारग भाने लगा है, रत्नत्रय का रंग आने लगा है
ज्ञान की होगी गर्गरिया, चालो भैया मोक्ष नगरिया ....टेक

तर्ज – दुनियां बनाने वाले..............

मोह की महिमा देखो, क्या तेरे मन में समाई
तूने अपनी ही महिमा भुलाई, तुझे अपनी ही महिमा न आई ....टेक
काहे अरिहंतो के कुल को लजाया, काहे जिनवाणी मां का कहना भुलाया
काहे मुनिराजों की सीख न मानी, सिद्ध समान शक्ति हरकत बचकानी
अपने ही हाथों अपने, घर में ही आग लगाई ....टेक
काहे अपनाये तूने माटी के ढेले, हीरा पन्ना या माणिक रूप अलबेले
पुदगल अचेतन से प्रीति बढ़ाई, काहे भिखारी बनके झोली फैलाई
रघुकुल के राम तूने, काहे को रीति गमाई ....टेक
समवशरण में जिनवरेन्द्रों ने गाया, सौ–सौ इन्द्रो के मध्य सबको समझाया
अपनी शुद्धात्मा को भगवन बताया, भव्यो ने समझा अंदर अनुभव में आया
जानो और देखो चेतन, इसमें ही तेरी भलाई ....टेक

घर घर आनंद छायो-2 मंगल महोत्सव मनाओ-2 ॥ टेक ॥
सिद्धचक्र की पूजा कीनी, निज ज्ञायक की सुध है लीनी
निज में ही निज को पायो जो पायो ॥ टेक ॥

तर्ज – भूला है स्वयं आतम को..............

भूला है स्वयं आतम को, जो भुलाने के काबिल नहीं है
आत्मन आया अवसर सुनहरा, चूक जाने के काबिल नहीं है ....टेक
मूढ़ काया को प्रतिदिन सजाता, नाना भूषण बसन नित पहनाता
एक दिन छूट जाएगी निश्चित, ममता करने के काबिल नहीं है ....टेक
पाप को छोड़ पुण्य में आता, मानकर धर्म उसमें भ्रमाता
पर अरे बंध का ये भी कारण, मुक्ति मारग के काबिल नहीं है ... .टेक
एक ही मंगलोत्तम शरण है, ज्ञायक प्रभु निश्चय तारण तरण है
होता स्वमेव सब परिणमन है, चिन्ता करने के काबिल नहीं है ....टेक
सुन समझ चेत निज को समझ ले, मात्र ज्ञायक हूँ स्वीकार करले
कैसा सुन्दर समागम मिला है, जो गवाने के काबिल नहीं है ....टेक

तर्ज – मंत्र जपो नवकार ....

मंत्र जपो नवकार मनुवा, मंत्र जपो नवकार
पंच प्रभु को वन्दन करलो, परमेष्ठी सुखकार ....टेक
अरहंतो का दर्शन करके, शुद्धातम का परिचय करलो
शिव सुख साधन हार मनुवा, मंत्र जपो नवकार..... .....टेक
सब सिद्धों का ध्यान लगालो, सिद्ध समान स्वयं को ध्यालो
मंगलमय सुखकार मनुवा, मंत्र जपो नवकार ....टेक
आचार्यो को शीश नवाओ, निर्ग्रन्थों का पथ अपनाओ
मुक्ति मार्ग आराध्य मनुवा, मंत्र जपो नवकार ....टेक
उपाध्याय से शिक्षा लेकर, द्वादशांग को शीश नवाकर
जिनवाणी उर धार मनुवा, मंत्र जपो नवकार ....टेक
सर्व साधु को वंदन करलो, रत्नत्रय आराधन करलो
जन्म मरण क्षयकार मनुवा, मंत्र जपो नवकार ....टेक

तर्ज – अहो ज्ञायक देव महान.........

अहो ज्ञायक देव महान, लखिए अंतर में ....टेक
गुण पर्याय की शोभा न्यारी, अनंत शक्ति आनंदकारी
गुण अंतत की खान, लखिए अंतर में ....टेक
सिद्ध सदा जिसको अनुभवते, गणधर जिसकी महिमा करते
मंगलमयी भगवान, लखिए अंतर में
छै द्रव्यों में मैं तो अकेला, एक अखण्ड अभेद अमेला
अनुपम चीज महान, लखिए अंतर में ....टेक

तर्ज – मोहे भावे न भैया...........

मोहे भावे न भैया थारो देश, रहूँगा मैं तो निज घर में ....टेक
मोहे न भावे यह महल अटारी, झूठी लागे मोहे दुनियाँ सारी
मोहे भावे नगन सुभेष, रहूँगा मैं तो निज घर में ....टेक
हमें यहां अच्छा नहीं लगता, यहां हमारा कोई न दिखता
मोहे लागे यहां परदेश, रहूँगा मैं तो निज घर में ....टेक
कब पाऊँगा निज में थिरता, मैं तो इसके लिए तरसता
मैं तो जाऊँगा सुख के धाम, रहूँगा मैं तो निज घर में ....टेक

तर्ज – ग्वालियर नगर में सिद्धचक्र पाठ...........................

ग्वालियर नगर में सिद्धचक्र पाठ, जय जय सिद्ध भगवान रे ....टेक
हरष–हरष नर नारी आये, सिद्धचक्र का पाठ रचाये
गायें मंगल गान रे ....टेक
पुष्प और रत्नों की वरषा, सुरपति करते हरषा–हरषा
देव करे जयकार रे ....टेक
सिद्धों का गुणगान करेंगे, सिद्ध समान हैं हम भी बनेंगे
पाएंगे मोक्ष महान रे ....टेक

तर्ज – मेरी प्यारी बहनिया................. सच्चा झूठा

बीती जाये उमरिया, तू भजले सांवरिया, पारस प्रभु के चरणों में आजा
भैया आजा शरण में तू आजा ....टेक
पारस प्रभु तेरे संकट हरेंगे, सिद्ध मनोरथ तेरे करेंगे
जरा भक्ति का भाव तू अपना दिखाजा ....टेक
नाग और नागिनी जिसने उभारे, नवकार देकर जीवन सुधारे
भये धर्णेन्द्र पदमा नागराज ....टेक
पारस प्रभु को न दिल से भुलाओ, शिवराम आत्म को शुद्ध बनाओ
आपे में अपने को प्यारे रमाजा ....टेक

तर्ज – जिनवाणी मां ....

जिनवाणी मां, जिनवाणी मां, जयवन्तो मेरी जिनवाणी मां ....टेक
नित्य बोधिनी मां जिनवाणी, स्वपर विवेक कराती वाणी
मिथ्या भ्रांति नशाती वाणी, ज्ञायक प्रभु दर्शाती वाणी ....टेक
जो हित चाहो भविजन प्राणी, पढ़ो सुनो ध्यावो जिनवाणी।
स्वानुभूति से करो प्रमाणी, शिवपथ की है यही निशानी ....टेक

तर्ज – नाम प्रभु का बोले रे.....................

नाम प्रभु का बोल रे मूरख, नाम प्रभु का बोल
पल पल छिन छिन बीता जाये जीवन ये अनमोल ....टेक
कुछ भी नहीं यहां पर तेरा, करता फिरता मेरा–मेरा
ये दुनियां है रैन–बसेरा, देख तो आंखें खोल ....टेक
समय पड़े कोई काम न आये, सब कुछ पड़ा यहीं रह जाये
इस दुनियां की चाल दुरंगी, समझ ढोल की पोल ....टेक
प्रभु चरणों में प्रीति लगाले, अपने में तू प्रभू को पाले
वहीं तो बेड़ा पार करेंगे, बोल ब्रोल जय बोल ....टेक

तर्ज – होली खेले मुनिराज...........

होली खेले मुनिराज शिखर वन में रे अकेले वन में
मधुवन में, मधुवन में आज मची रे होली मधुवन में ....टेक
चैतन्य गुफा में मुनिवर बसते, अनन्त गुणों में केली करते
एक ही ध्यान रमायें वन में, मधुवन में ....टेक
ध्रुवधाम ध्येय की धूनी लगाई, ध्यान की धधकती अग्नि जलाई
विभाव का ईंधन जलावें वन में, मधुवन में ....टेक
हमें तो पूर्ण दशा ही चहिये, सादि अनंत का आनंद लहिये
निर्मल भावना भाई वन में, मधुवन में ....टेक
ऐसे मुनि को वन्दन करते, शीश चरण में उनके धरते
भव से पार लगाऐ वन में, मधुवन में ....टेक

तर्ज – वीर गये निर्वाण...................

वीर गये निर्वाण आओ मंदिर में ....टेक
कार्तिक श्याम अमावस प्यारी, वीर मुक्ति की तिथि सुखकारी
गौतम पायो ज्ञान आओ मंदिर में ....टेक
इन्द्र महोत्सव करने आये, रत्नों के फिर दीप जलाये
चल गया पर्व महान आओ मंदिर में ....टेक
आओ हम भी भक्ति रचावें, मिल लड्डू निर्वाण चढ़ावें
करें वीर यशगान आओ मंदिर में ....टेक

मंगल महोत्सव महान, आनंद छाया है मन में
छाया है मन में छाया है मन में
आतम प्रभु है महान, आनंद छाया है मन में ....टेक

तर्ज – मेरी जान जाये तो ....

मेरी जान जाय तो जाय, मेरा शील धर्म प्रभु नहीं जाय ....टेक
देखो बहनों सीता सती ने, पाले शील अपार ....टेक
अग्नि कुण्ड का नीर हुआ है, और देव करे जयकार ....टेक
सती सोमा ने शील जो पाला, और हुआ नाग का हार ....टेक
इसको पालो बहिना मेरी, हो जाय जग से पार ....टेक

तर्ज – ये शाश्वत सुख का प्याला........

ये शाश्वत सुख का प्याला, कोई पियेगा अनुभव वाला ....टेक
ध्रुव अखण्ड है आनंद कंद है, शुद्ध बुद्ध चैतन्य पिण्ड है
ध्रुव की फेरो माला ....टेक
ध्रुव का रस तो ज्ञानी पावें, जन्म—मरण का दुख मिटावें
ध्रुव का धाम निराला ....टेक
ध्रुव की शरणा जो कोई जावें, दुष्ट कर्म को मार भगावें
ध्रुव का पंथ निराला ....टेक

तर्ज – भजो रे मन..............

भजो रे मन श्री अरहंत महान ....टेक
अष्टादश दोषों से विरहित, राजत केवलज्ञान ....टेक
छयालीस गुणधारी स्वामी, निजानंद रसपान ....टेक
परमौदारिक देह सुपावन, त्रिभुवन पति श्री मान ....टेक
स्वयं बुद्ध सर्वज्ञ जिनेश्वर, वन्दूं नित धर ध्यान ....टेक

तर्ज – शुद्धातम शुद्धातम ....

शुद्धातम शुद्धातम, अनुपम है शुद्धातम
जयवन्तों शुद्धातम, शुद्धातम शुद्धातम ....टेक
षटकारक से भिन्न शुद्ध है, सदा अरूपी एक बुद्ध है
सहज स्वयं में पूर्ण पिछाना, अदभुत महिमावंत सुजाना ....टेक
अदभुत भाव आज मैं पाया, दिव्य तत्व दृष्टि में आया
करना कुछ भी नहीं दिखाता, सहज सुख सागर लहराता ....टेक
अदभुत से भी अदभुत प्यारा, चित् चिन्तामणि प्रभु हमारा
अब भव त्रास न मुझे सतावे, एक रूप अनुभव में आवे ....टेक

जान लिया मैं जान लियो, आपा प्रभु मैं जान लियो
परमेश्वर मैं सेवक को भ्रम, एक छिनक में दूर कियो ....टेक

तर्ज – बन्नो तेरी अंखियाँ............अग्निसाक्षी

ये नरतन पाया तूने प्राणी
ये नरतन पाया .....हो.....2 तूने प्राणी, तू ध्या निजआतम सुन ले ज्ञानी ....टेक
अति पुण्य उदय से शुभ गति पाई, और जैनकुल पाया तूने प्राणी ....टेक
जैनकुल पाया तूने प्राणी, जिनधर्म ये पाया है सुखदानी ....टेक
जैन धर्म ये पाया है सुखदानी, गुरू अरू पाई है जिनवाणी ....टेक
पाई जिनवाणी मोक्ष दानी, स्वपर का अनुभव करले प्राणी ....टेक

तर्ज – अपना ही रंग मोह रंग ....

अपना ही रंग मोह रंग प्रभुजी, आतम का रंग मोह रंग प्रभुजी
रंग दो रंग दो रंग दो प्रभु जी ....टेक
ज्ञान में मोह की धूल लगी है, धूल लगी है प्रभु धूल लगी है
इससे मुझको छुड़ा दो प्रभुजी ....टेक
रत्नत्रय रंग तुमरा सरीखा, तुमरा सरीखा प्रभु तुमरा सरीखा
इससे मोकों सजा दो प्रभु जी ....टेक
सेवक शरण गही जिनवर की, गही जिनवर की गही आतम को
जन्म—मरण दुख मिटा दो प्रभुजी ....टेक

तर्ज – रंग मां रंग मां..................

रंग मां रंग मां रंग मां रे, प्रभु थारा ही रंग मां रंगि गयो रे ....टेक
आया मंगल दिन मंगल अवसर, भक्ति मां थारी हूँ नाच रहो रे ....टेक
आतम देव को अंतर में देख्या, सुख—सरोवर उछाल रहो रे ....टेक
भाव भरी हम भावना ये भाये, आप समान बनाय लीज्यो रे..............टेक
आज हमारो उपयोग पलटयो, चैतन्य—चैतन्य भास रहो रे ....टेक

तर्ज – आओ भवि जिनवर की भक्ति..................

आओ भवि जिनवर की भक्ति करेंगे, भक्ति करेंगे वाणी सुनेंगे ....टेक
वीर प्रभु ने केवल पायो, छियासठ दिन नहिं अवसर आओ
श्रावण वदी एकम दिन पावन करेंगे ....टेक
परम्परा दिगम्बर से आई वाणी, आज भी सुनायें यहां सम्यकज्ञानी
वाणी को सुनकर तत्व निर्णय करेंगे ....टेक
तत्वों के निर्णय से सम्यक्त्व पाकर, ज्ञानमयी चारित्र अपनाकर
शुक्लध्यान द्वारा परमात्मा बनेंगे ....टेक

शांतिमयी शांतिमयी, मूरत देखी शांतिमयी ....टेक

तर्ज - दो हंसों का जोड़ा..............

मां जिनवाणी ज्ञायक बताय दियो रे, आनंद भयो भारी आनंद भयो रे
सविनय शीश नवाय रहो रे, आनंद भयो भारी ....टेक
काल अनादि से भ्रमता फिरता, जन्म जन्म में बहु दुख सहता
अब सब दुक्ख पलाय गयो रे, आनंद भयो भारी ....टेक
पर अबलंवन छोड़ जो देखा, निज का वैभव प्रत्यक्ष देखा
सम्यक रत्नत्रय प्रकटाय रहो रे ....टेक
अब न कामना कोई बांकी, निज महिमा सर्वोत्तम आंकी
स्वयं सिद्ध दरशाय दियो रे ....टेक

तर्ज - अनुभव बिन आतम.........

अनुभव बिन आतम मिलत नईयां
मिलत नईयां, दिखत नईयां ....टेक
मोह महामद पियो अनादि, तत्व ज्ञान बिन भटकत वादि
ममता संग समता मिलत नईयां ....टेक
देह कर्म से चेतन न्यारा, अपना चेतन सबसे प्यारा
बिन पानी के नाव चलत नईयां ....टेक

तर्ज - सुन रे जिया चिरकाल............

सुन रे जिया चिरकाल गया, तूने छोड़ा न अबतक प्रमाद, जीवन थोड़ा रहा .....टेक
जिनवाणी कहती हैं तेरी कथा, तूने भूल करी सही भारी व्यथा
अब करले स्वयं की पहिचान, जीवन थोड़ा रहा ....टेक
जीव तत्व तू है परम उपादेय, अजीव सभी है ज्ञान के ज्ञेय
निज को निज, पर को पर जान, जीवन थोड़ा रहा ....टेक
शाश्वत चेतन रूप ध्रुव अमल है, अचल अखण्ड अविनाशी विमल है
अब तो कर ले सम्यक श्रद्धान, जीवन थोड़ा रहा ....टेक

तर्ज - चप्पा चप्पा चरखा चले...........माचिस

ज्ञायक प्रभु को लखो—2, ज्ञायक प्रभु को लखो, ज्ञायक होके रहो ....टेक
निज में ज्ञायक प्रभु जी रहते, अनंत गुणों मे केली करते
निज का भान करो ....टेक
अनुभव तुम भी निज को ध्याओ, मुक्ति वधू को तुम पा जाओ
सिद्ध समान बनो ....टेक

जिन पूजन सब कर लेना, जिन मंदिर में आयके
मंदिर में आयके प्रभु गुण गायके, जिन पूजन .... टेक

तर्ज - सावन का महिना.............

जिनवर तू है चंदा और में हूँ चकोर
दर्शन तेरा पाकर स्वामी झूम उठा मन मोर ....टेक
अष्ट कर्मो को तूने मार भगाया, अज्ञानियों को तूने ज्ञान सिखाया
कर्मो का तेरे आगे चले न कोई जोर ....टेक
संसार को है निस्सार माना, निज में ही निज का प्रभु पहिचाना
में भी निज को जानू निज से लगाऊं जोर ....टेक

तर्ज - हुआ इन्द्रध्वज का पाठ..........

हुआ इन्द्रध्वज का पाठ, हिल मिल नृत्य करो ....टेक
भाई भी आये बहिना भी आयी, इन्दध्वज की पूजा रचाई
और गाया है मंगल गान, हिल मिल नृत्य करो ....टेक
अवसर बड़ा सुहाना आया, अपने आतम को अब पाया
और पावें सम्यक ज्ञान, हिलमिल नृत्य करो ....टेक
सिद्ध समान हम सब बनेंगे, सच्ची श्रद्धा को पालेंगे
और काटेंगे भव के फन्द, हिलमिल नृत्य करो ....टेक

तर्ज - तुम्हीं हो माता ......

वरदान तुमसे प्रभु ये पाऊँ, तुम्हें न इक पल कभी भुलाऊँ ....टेक
करूं हमेशा में तेरी पूजा, भक्ति सिवा न हो काम दूजा
गुरूजनों के गुणो को गाऊँ, तुम्हें न एक पल कभी भुलाऊँ ....टेक
पढ़ूं हमेशा में जैन आगम, हो संतजन का सदा समागम
सत्संग तज के कहीं न जाऊँ, तुम्हें न एक पल कभी भुलाऊँ ....टेक
परदोष कहने को मैं मोन धारूँ, वचन सुहित के सदा ऊचारूँ
निजात्मा का स्वरूप ध्याऊँ, तुम्हें न एक पल कभी भुलाऊँ ....टेक

तर्ज - परदेशियों से न अखियां मिलाना................जब-जब फूल खिले

मनुष्य जन्म को यू न गंवाना[2], मनुष्य जन्म का कठिन है पाना ....टेक
बचपन तूने खेल में खोया, विद्या कल्प वृक्ष नहीं बोया
जीवन भर हो फिर पछताना..............टेक
उमर जवानी आई जो तेरी, पांव में पड़ गई नारी की बेड़ी
ग्रहस्थ धरम को निभाना न जाना ....टेक
मोह ने ऐसा फंदा है डारा, दान और कर्म विसारा
छोड़ा नहीं हाय पाप कमाना ....टेक

तर्ज – आजा तुझको पुकारे मेरे गीत............नीलकमल

मेरे अंगना आए वीर रे
देखो पलने में झूले महावीर रे, महावीर रे, ओ मोरे अंगना ....टेक
चैत सुदी तेरस अवतारे, क्षेत्र कुण्ड में स्वामी पारे
मात त्रिशला, तात सिद्धारथ, पुलक भरे दृग नीर रे ....टेक
याद करे महा सुन्दर सपने, पुनि पुनि लाल लगी वो लखने
सकल मनोरथ, राय सिद्धारथ, गुण गावे प्रभु वीर रे ....टेक
इन्द्र इन्द्रणी मिल खुशियां मनावें, श्रद्धा से सब मिल मंगल गावें
दर्शन करलो, वंदन कर लो, मेंटे भव–भव पीर रे ....टेक

तर्ज – साँची कहूँ तोरे आवन से ....नदियां के पार

साँची कहूँ तोरे दर्शन से हमरे, जीवन में आनंद अपार प्रभुजी
दिव्य ये ज्योति कर्मो को खोती, चमकित है आप उद्धार प्रभुजी ....टेक
तुम्हरी ये वाणी चर्णों की पूजा–2, तेरे जैसा कोई न दूजा – 2
अब हमने जाना कि दर्शन से कैसे, होते है कितने उद्धार प्रभुजी ....टेक
अघ नाशक प्रभु दर्श तिहारे–2, आत्मा मेरी तुमको पुकारे–2
कष्टों को तारो संकट निवारो, आये है हम तेरे द्वारे प्रभुजी ....टेक
ये मन था कर्मो का डेरा–2, जब से मिला प्रभु दर्शन तेरा –2
दृष्टि बदल गई कुमति निकल गई, करमन के लागी कटार प्रभुजी...........टेक

तर्ज – पुजारी ....

पुजारी ! हृदय के पट खोल
कोई गावे कोई रोवे, उनसे तू मत बोल ....टेक
तू न किसी का कोई न तेरा, नाहक करता मेरा तेरा
तूझे पड़ी है क्या दुनियां की, मत रस में विष घोल ....टेक
तेरे घर में है परमातम, बना मूढ़ मत भूले आतम
तेरे घर में छिपा हुआ है, तेरा रतन अमोल ....टेक

तर्ज – रंग बरसे भींगे चुनर वाली............सिलसिला

रंग बरसे ले ले पूजन थाली रंग बरसे
जिन मंदिर में धूम मची है, प्रभुजी की पूजा खूब रची है
बोलो रे जयकार, जिया हरषे रंग बरसे ....टेक
झूम–झूम के प्रभु गुण गायले, प्रभुजी की पूजा भक्ति करायले
आओ मिल नर नारी, जिया हरषे रंग बरसे ....टेक

तर्ज – मुझ दुखिया की सुनले पुकार.........

मुझ दुखिया की सुनले पुकार, भगवन वीर प्रभो ....टेक
चारों गति में दुख बहु पाया, काल अनादि दुख में गंवाया
में आया तेरे दरबार, भगवन वीर प्रभो ....टेक
सद् उपदेश दे लाखों तारे, अंजन जैसे अधम उबारे
अब मेरी ओर निहार, भगवन वीर प्रभो ....टेक

तर्ज – महावीरा झूले पलना......

महावीरा झूले पलना, नेक होले झोका दीजो
नेक होले झोका दीजो –2 ....टेक
कौंन के घर तेरा जन्म भया है, कौन ने जाये ललना ....टेक
सिद्धार्थ घर तेरो जन्म भयो है, त्रिशला ने जाये ललना ....टेक
काहे का तेरो बना रे पालना, काहे के लागे फुन्दना ....टेक
अगर चन्दन का बना रे पालना, रेशम के लागे फुन्दना ....टेक
पैर में घुँघरू हाथ में झुझना, आंगन में चाले चलना ....टेक
अन्दर से बाहर ले आवे, बाहर से अन्दर ले जावे
नजर न लग जाये ललना ....टेक

तर्ज– जिन पूजन करले...........

जिन पूजन करले, ये ही जगत में सार ......टेक
बडा पुण्य अवसर यह आया, श्री जिनवर का दर्शन पाया
जिन भक्ति करले ......टेक
बडा पुण्य अवसर यह आया, उत्तम कुल सत्संग भी पाया
व्रत संयम धर ले ......टेक
बडा पुण्य अवसर यह आया, साधर्मी जन मेला पाया
तत्व चर्चा कर ले ......टेक

तर्ज – करले आतम ज्ञान.........

करले आतम ज्ञान, परमातम बन जइये
करले भेद विज्ञान, रे ज्ञानी बन जइये ....टेक
जग झूठा और रिश्ते झूठे, रिश्ते झूठे नाते झूठे
साचों हैं आतमराम, परमातम बन जइये ....टेक
देह भिन्न है आतम भिन्न है, राग भिन्न है ज्ञान भिन्न है
आतम को पहिचान, परमातम बन जइये ....टेक

तर्ज – गा रे भैया गा रे भैया ....

गा रे भैया गा रे भैया, गा रे भैया गा
प्रभु गुण गा तू समय न गंवा ....टेक
किसको समझे अपना प्यारे, स्वारथ के सब रिश्ते सारे
फिर क्यों प्रीत लगाये, ओ भैया जी ....टेक
मिट्टी की यह नश्वर काया, जिसमें आतम राम समाया
उसका ध्यान लगा ले, ओ दादा जी ....टेक
स्वारथ की दुनियां को तजकर, निश दिन प्रभु का नाम जपा कर
सम्यग्दर्शन पाले, ओ काका जी ....टेक

तर्ज – वीर प्रभु का है कहना.........

वीर प्रभु का है कहना, राग में जीव तू मत फंसना ....टेक
अनादि काल से रूलता है, दृष्टि पर में करता है
अब ना ये गलती करना, राग में जीव तू मत फंसना ....टेक
तन मंदिर में देव है तू, ज्ञायक को पहिचान ले तू
समयसार पर तू चलना, राग में जीव तू मत फंसना ....टेक
तू तो गुणों का सागर है, पूर्णानंद महाप्रभु है
निज में ही दृष्टि करना, राग में जीव तू मत फंसना ....टेक

तर्ज – होय-होय के प्रभु जी का.........

होय–होय के प्रभु जी का दर्श किया ²
म्हारे पाप कटे, म्हारे पुण्य मिले, और खुले मुक्ति का द्वार
कि प्रभु जी का दर्श किया.........टेक
तेरे द्वारे पे आके शान्ति मिले, तेरे दर्शन से ज्ञान ज्योति जले
अब पाऊँगा–पाऊँगा तुम सम पद अविकार ....टेक

तर्ज – निज घर में अब चलो..........

निज घर में अब चलो चलते हैं, अवसर आया आज रे ....टेक
वीर प्रभु तुमको समझावे, भगवान आत्मा गाना गावे
जागो तुम भगवान रे.........टेक
घर की माता तुझे सुलावे, जिनवाणी मां तुझे जगावे
जागो आतम राम रे ....टेक
मोह नींद में क्यों तू सोया, स्व को भूला बहुत तू रोया
करले निज पहिचान रे ....टेक
मोह महामद पीते–पीते, पर घर फिरत बहुत दिन बीते
आजा घर भगवान रे ....टेक

तर्ज – जैन मंदिर हमको..........

जैन मंदिर हमको लागे प्यारा 2 ....टेक
धर्म केतु सुख हेत देत गुन, अक्षय पुण्य रतन भण्डारा ....टेक
कहूँ पूजन कहूँ भजन होत है, कहूँ बरसत श्रुतरस धारा ....टेक
ध्यानारूढ़ विराजत है जहाँ, वीतराग प्रतिबिम्ब उदारा ....टेक
भागचन्द वहां चलिए भाई, तजि के गृहकारज अघ भारा ....टेक

तर्ज – छोटा सा मंदिर बनायेंगे...........

छोटा सा मंदिर बनायेंगे, वीर गुण गायेंगे
वीर गुण गायेंगे, महावीर गुण गायेंगे ....टेक
कंधो पे लेकर चाँदी की पालकी, प्रभु जी का विहार करायेंगे ....टेक
हाथों में लेकर सोने के कलशा, प्रभु जी का नव्हन करायेंगे ....टेक
हाथों में लेकर द्रव्य की थाली, पूजन विधान रचायेंगे ....टेक
हाथों में लेकर श्री जिनवाणी, पढ़ेंगे और सबको पढ़ायेंगे ....टेक
वीतराग विज्ञान पाठशालाऐं खोलकर, तत्वों का ज्ञान करायेंगे ....टेक
श्रद्धा में लेकर वस्तु स्वरूप, आतम का अनुभव करायेंगे ....टेक
चारित्र में लेकर शुद्धोपयोग, मुक्तिपुरी को जायेंगे ....टेक

तर्ज – प्रभुजी मैंने अवगुण...............

प्रभुजी मैने अवगुण बहुत करे ....टेक
जब से पांव धरो धरती पर, लाखों जीव मरे ....टेक
मात पिता की सेवा न कीनी, त्रिया ओर चले ....टेक
दान पुण्य मैंने कछु न कीनों, लाखों जोड़ धरे ....टेक
जब लों कलम चली कागज पे, दस के बीस करे ....टेक
पूजा पाठ मैंने कबहूँ न कीनी, नहि जिन वैन सुने ....टेक
पाप पुण्य की बांध गठरिया, सिर पे लाध चले ....टेक

तर्ज – तुम्हारी महिमा को भगवान......

तुम्हारी महिमा को भगवान, कौन गा सकता है इंसान ....टेक
तुमने राग द्वेष को टाला, जिससे मिला तुम्हें उजियाला
जब तुम बने पवित्र महान ....टेक
तू है भव दुखियों का त्राता, आत्मिक सुखमय जीवन दाता
तेरा जग में व्यापक ज्ञान ....टेक
कर दे उर का दूर अंधेरा, तुमको नमस्कार है मेरा
भगवन कर वह कृपा प्रदान ....टेक

तर्ज – देख तेरे संसार की हालत.........

फंसा हुआ क्यों इस दुनियां में, हे पगले इन्सान
तू अपना निज स्वरूप पहिचान[2]
मतलब की दुनिया है मूरख, क्यों करता अभिमान
तू अपना निज स्वरूप पहिचान[2] ....टेक
दुनियां की यह झूठी माया, क्षण भंगुर है तेरी काया
यह सब है संयोगी छाया, फिर तू इनमें क्यूं भरमाया
कुछ भी तेरे साथ न जाये, झूठी तेरी शान ....टेक
तेरे जैसे लाखों आये, लाखों इस मिट्टी ने खाये
दुर्लभ नरभव बीता जाये, गया वक्त नहीं वापस आये
अब भी जीवन सफल बना ले, करले निज कल्याण ....टेक

तर्ज – मैं आया रे तेरे दरबार.........

मैं आया रे तेरे दरबार, वीरा मेरे भाग्य जगे
मेरे भाग्य जगे, मेरे भाग्य जगे ....टेक
चिन्तामणि सम नरतन पाया, माया ममता में विसराया
तेरा ध्यान किया–निज ज्ञान हुआ, है हम सब तुमरे समान ....टेक
प्रभु के दर पर रोज आवेंगे, आतम अनुभव नित्य करेंगे
ज्ञान ज्योति खिले–मन शांति मिले, हम सुने रोज जिनवाणी ....टेक
वीर प्रभु सा हम भी बनेंगे, निज आतम का ध्यान धरेंगे
निज ध्यान धरें–सब कर्म झरें, और जायेंगे भव के पार ....टेक

तर्ज – मुझको ये तेरी बेवफाई.............. बेवफा सनम

जिनवर भक्ति मिलकर गायेंगे, जनम–जनम के पाप नशायेंगे ....टेक
अनंत चतुष्टय धारी प्रभुवर, वीतराग सर्वज्ञ है जिनवर
ध्यान लगा के तुमसा बन जायेंगे ....टेक
केवल ज्ञान आपने पाया, ज्ञान सूर्य जग में है आया
वाणी सुन प्रभु ज्ञान को पायेंगे ....टेक
जीवों को उपदेश दिया है, निज में निज का प्रभु बसा है
निज अनुभव से निज को पायेंगे ....टेक

नहीं जानी[2] जिन धर्म की महिमा नहीं जानी
नहीं मानी नहीं मानी सद्गुरू की शिक्षा नहीं मानी .....टेक
अपना ही श्रद्धान तू करले, भेदज्ञान कर सयंम धरले
ज्ञानानंद हैं सुखदानी ....टेक

तर्ज – जप ले प्रभु का नाम............

जप ले प्रभु का नाम, जग से पार उतर ले
छोड़ जगत जंजाल, निज आतम को भजले ....टेक
मानुष भव उत्तम कुल पाया, अबतक जीवन व्यर्थ गवाँया
संयम से नहीं नाता जोड़ा, विषयों से क्यों मुख नहीं मोड़ा
सत्य समझ उर धार, संयम धारण कर ले ....टेक
सात तत्व का निर्णय कर ले, जीव–अजीव स्वरूप समझ ले
सम्यक श्रद्धा जब मन लाये, कर्म बन्ध ढीले पड़ जाये
अपना सच्चा रूप समझकर, दुविधा हर ले ....टेक

तर्ज – मेरी परिणीत में आनंद अपार.........

मेरी परिणीत में आनंद अपार नाथ तेरे दर्शन से ....टेक
मूरति प्रभु कल्याण रूप है, स्वानुभूति की निमित्त भूत है
भेद विज्ञान हो सुखकार, नाथ तेरी वाणी से ....टेक
अनादि काल का मोह नशाया, निज स्वभाव प्रत्यक्ष लखाया
प्रभु मोह नशे दुखकार, शुद्धातम दर्शन से ....टेक
तोड़ सकल जग द्वंद फंद प्रभु, मैं भी निज में रम जाऊँ विभु
भाव यही अविकार, नाथ तेरे दर्शन से ....टेक

तर्ज – चेतो चेतन निज में ....

चेतो चेतन निज में आओ, अन्तर आत्मा बुला रही है ....टेक
जग में अपना कोई नहीं है, तू तो ज्ञानानंद मयी है
एक बार अपने में आजा, अपनी खबर क्यों भुला दई है ....टेक
निश्चय से तू सिद्ध प्रभु सम, कर्मोदय से धारे है तन
स्यादवाद के इस झूले में, जिनवाणी मां झुला रही है ....टेक
मोह राग को तोड़ो छोड़ो, निज स्वभाव से नाता जोड़ो
ब्रम्हानंद जल्दी तुम चेतो, मृत्यु पंखा झुला रही है ....टेक

तर्ज – राही राम नाम नित बोल..........

राही राम नाम नित बोल
परदेशी यहां रहना कितना, क्यों रस में विष घोल ....टेक
तेरे घट में तेरा भगवन, भटक रहा है क्यों मूरख मन
शक्ति अपनी व्यर्थ खो रहा, क्यों न ह्रदय टटोल ....टेक
देखन हारा जानन हारा, महिमा जिसकी का नहि पारा
जिसके ही रहते है जग में, अस्थिर तन का मोल ....टेक

तर्ज - हमने तो घूमी चार गतियाँ............

हमने तो घूमी चार गतियाँ, न मानी जिनवाणी की बतियाँ ....टेक
नरकों में दुख ही दुख पाये, खण्ड–खण्ड यह देह कराये
पायो न चैन दिन रतियाँ ....टेक
पशुतन पाके बोझ उठाओ, भूख प्यास से बहु अकलाओ
असुअन से भींग गई अखियाँ ....टेक
फिर दुर्लभ मानुष तन पायो, माया ममता में बिसरायो
लीनी न अपनी सुरतियाँ ....टेक
पुण्य उदय से सुरगति पायी, मरण समय माला मुरझाई
मर के भये पेड़ पतियाँ ....टेक
बिन सम्यक घूमा तन धारी, अपने को पहिचान पुजारी
सतगुरू की मानो सुरतियाँ ....टेक

तर्ज - जिन देख मगन भयों.........

जिन देख मगन भयो मेरो मनुवा ....टेक
शुभ को उदय भयो अब मोहे, अशुभ जलें जैसे सूखे पतवा ....टेक
तीन लोक के नाथ निहारे, नग्न दिगम्बर जाके तनवा ....टेक
दौलतराम दोहु कर जोड़े, नित उठ गावत तेरो गुणवा ....टेक

तर्ज - तेरे दर्शन से भगवान.........

तेरे दर्शन से भगवान, हुआ मुझको आनंद महान ....टेक
जिसने तेरा ध्यान लगाया, उसने मोक्ष पदारथ पाया
कर लिया आत्म कल्याण, हुआ मुझको आनंद महान ....टेक
मुझको शांति छवि दिखलाई, भगवन यह मेरे मन भाई
तेरा दर्शन सुख की खान, हुआ मुझको आनंद महान ....टेक

तर्ज - घड़ि-घड़ि पल-पल..............

घड़ि–घड़ि पल–पल छिन–छिन निश–दिन
प्रभुजी का सुमिरन कर ले रे ....टेक
प्रभु सुमरें ते पाप कटत हैं, जनम मरण दुख हर ले रे ....टेक
मन वच काय लगाय चरन चित, ज्ञान हिये बिच धरले रे ....टेक
दौलतराम धर्म नौका चढ़ि, भव सागर तै तर ले रे ....टेक

मंदिर में बैठे है देव प्यारी लागे मूरत ....टेक
अष्ट कर्मो का नाश किया है, सिद्ध शिला सिंहासन मिला है
सिद्ध शिला शिरमौर ....टेक

तर्ज - मैं आवारा एक बंजारा .... संगीत

महावीर पधारे भैया आज बुलाओ बाजे शहनाई
म्हारा प्रभुजी कुण्डलपुर वाला, त्रिशला का प्यारा–प्यारा लाल
गाओ रे गाओ सब भाई ....टेक
सिद्धारथ राजा के नंदन, वन्दन शत शत बार
जय जय बोलो सब भाई ....टेक
देव देवियां रतन वरषावे, बजे दुंदुभी सार
नाचो रे नाचो सब भाई ....टेक

तर्ज - मंत्र जपो नवकार..........

मंत्र जपो नवकार, मनुवा मंत्र जपो नवकार
पांच पदों के पैतीस अक्षर, है सुख के आधार ....टेक
अरिहन्तों का सुमिरण करले, सिद्ध प्रभु का नाम तू जपले
आचार्य सुखकार ....टेक
उपाध्याय के मन को ध्याले, सर्व साधु को शीश नवाले
होवे भव से पार ....टेक
रोग शोक को दूर भगावे, जन्म जरा मृत दोष मिटावे
भव दुख भंजन हार ....टेक
(णमोकार मंत्र तेज राग में बोलना है।)

तर्ज - जब चले आत्माराम............

जब चले आत्माराम, छोड़ धन धाम जगत से भाई
जग में न कोई सहाई ....टेक
तू क्यों करता तेरा मेरा, नहीं दुनियां में कोई तेरा
जब काल आय तब सबसे होय जुदाई ....टेक
सम्यक्त्व सुधा का पान करो, निज आतम का ही ध्यान धरो
यू बाज रही यमराजा की शहनाई ....टेक

तर्ज - मुनिवर आज मेरी ....

मुनिवर आज मेरी नगरी में आऐ है
चलते फिरते तीरथ पाये है ....टेक
हाथ कमण्डल बगल में पीछी है, मुनिवर पर सारी दुनिया रीझी है
दर्शन करके हो .... दर्शन कर नर नारी हरषाये है ....टेक
नग्न दिगम्बर मुनिवर प्यारा है, जैन धर्म का ये ही तो सहारा है
कुन्द–कुन्द स्वामी जी हो .... कुन्द–कुन्द स्वामी जी ज्ञान वरषाये है ....टेक

तर्ज – रिम झिम उड़े रे गुलाल...........

रिम झिम उड़े रे गुलाल, वीरा जी तेरे आँगन में
ज्ञान की उड़े रे गुलाल, वीरा जी तेरे आँगन में ....टेक
म्हारा प्रभु जी गर्भ में आया, बरसे रतन अपार ....टेक
माता जी देखें सोलह सपने, अर्थ बतावे सिद्धार्थ ....टेक
म्हारे प्रभु जी का दर्श हुआ रे, छाई खुशियां अपार ....टेक
वीर प्रभु सा हम भी बनेंगे, पायेंगे सिद्ध पद राज ....टेक

तर्ज – अब ना छुपाऊगाँ .... दिल तेरा आशिक

मंदिर में आऊँगा–दर्शन पाऊँगा, चरणों में तेरे में–शीश झुकाऊँगा
हो रही जय जय कार हो महावीरा तेरी ....टेक
कुण्डलपुर में जन्म भयो, त्रिशला घर आनंद भयो
मन में अति हरषाये, मंगल गीत सुनाए
दर्शन जो पाऊँगा–भव से तिर जाऊँगा, भव से तिर के मैं सच्चा सुख पाऊँगा
धूम मची रे चहुँ ओर, हो महावीरा तेरी ....टेक
मंदिर जी हम आते है, परिणाम निर्मल होते हैं
आतम की चर्चा सुन, शान्ति को पाता मन
कष्ट मिटाते हो–मुक्ति दिलाते हो, ज्ञान का दीपक–दिल में जगाते हो
भक्ति करें नर नारी, हो महावीरा तेरी ....टेक

तर्ज – जिनवर की होवे जय..........

जिनवर की होवे जय जय कार चलो रे जिन मंदिर में ....टेक
मंदिर में तीर्थकर विराजे, देखत ही हरष अपार ....टेक
धर्म से नाता जो तुमने जोड़ा, जीवन में आई है बहार ....टेक
चार कषायों से नाता जो छूटे, हो जावे भव में सुधार ....टेक

तर्ज – मैं तो छोड़ चली बाबुल का देश..........

मैंने धार लिया आतम विवेक, प्रभु का दर प्यारा लगे
हो मेरे दूर करो जी क्लेश, प्रभु का दर प्यारा लगे ....टेक
चंदा सी प्यारी है सूरत प्रभु की, मनहारी सूरत है मेरे प्रभु की
हो मैंने पाया दिगम्बर वेश ....टेक
श्रद्धा सुमन की मैं माला चढाऊँ, अपने प्रभु जी को मन में बसाऊँ
हो मुझे मिला प्रभु का देश ....टेक
सबसे निराला है स्वामी हमारा, छोड़ेगें अब ना दामन तुम्हारा
हो मन में राग रहा नहीं शेष ....टेक

तर्ज – भोला आत्मा में..................

भोला आत्मा में दाग लगइयो मती ना
लगइयो मती ना हां लगइयो मती ना ....टेक
आत्मा हमारी ज्ञान की गागर, इसमें जहर मिलइयो मती ना ....टेक
आत्मा हमारी असली सोना, उसमें खोट मिलइयों मती ना ....टेक

तर्ज – जिनवाणी सुनलो रे भैया............

जिनवाणी सुनलो रे भैया जिनवाणी सुन लो रे
अनन्त भव यूं ही खोये, पर का बोझा ढोये
तेरी कथा तुझको सुनावें ....टेक
पंच परावर्तन दुखड़े सुनाकर, दुर्लभ नरभव का ज्ञान कराकर
अब ना सुनी तो फिर कौन कहेगा ....टेक
सिद्ध स्वरूपी तू जग में है घूमे, आनंद सुखमय प्रभु खुद को है भूले
जिनवाणी से अपना आतम पहचान ले ....टेक
चिदानंद ध्रुव का दर्शन कराकर, वीतरागी सुख का अमृत पिलाकर
जाग रे क्यों मोह नींद में सोये ....टेक

त्रोटक पद्धरि

तर्ज – झूठ बोले कौआ काटे ....बॉबी

झूठ बोले पाप लागे, पाँचों पापों से बचियों
ये भव–भव में रूलवायेंगे, तू देखता रहियो ....टेक
तू पापों मे फंस जाएगा, तो नरकों में तू जाएगा
जो नरकों में तू जायेगा, तो मार अनोखी खाएगा
दुर्गति में जांये दुख उठाये, ऐसी दुर्गति से बचियों ....टेक

तर्ज – साजन मेरा उस पार है..........गंगा जमुना सरस्वती

पावन तेरा प्रभु द्वार है, मिलता सुख शांति अपार है 2 ....टेक
शरणा लिया जिसने जिनराई का, भ्रमण मैटा उसने भवभाई का
जीवन का मिलता यही सार है, प्राणी का हो जाता उद्धार है– टेक
दर्शन प्रभु का जो पायेगें, आतम को निज में वो पायेंगे
प्रभु को नमन बारम्बार है, प्रभु की महिमा अपरम्पार है ....टेक

तर्ज - हम सब कुछ अपना..............

हम सब कुछ अपना छोड़ चले, दुनियां से नाता तोड़ चले ....टेक
क्या लाया था क्या साथ चला, जो आया खाली हाथ चला
तन छोड़ चले धन जोड़ चले ....टेक
सब माल खजाना पड़ा रहा, परिवार समीप ही खड़ा रहा
गरदन यमराज मरोड़ चले ....टेक
है नश्वर भोग विलास यहां, इस सांस का क्या विश्वास यहां
निज जीवन गागर छोड़ चले ....टेक
कुछ सार नहीं मत फूल यहां, है सूल यहां मत झूल यहां
हो निष्फल जीवन जोड़ चले ....टेक
उर मे ले पीढ़ित प्यार चले, जीवन की बाजी हार चले
डोला चढ़ कफनी ओढ़ चले ....टेक
है जाना वहां जो आना नहीं, फिर लौट के वापस आना नहीं
बंधन ये लगाकर छोड़ चले ....टेक

तर्ज - ये देश है वीर जवानों का ....

यह धर्म है आतम ज्ञानी का, सीमंधर महावीर स्वामी का
इस धर्म का भैया क्या कहना, ये धर्म है ज्ञानी का गहना, जय हो [4] ....टेक
यहां समयसार का चिंतन है, यहां नियमसार का मंथन है
यहां रहते ज्ञानी मस्ती में, मस्ती है स्व की अस्ति में ....टेक
अस्ति में मस्ती ज्ञानी की, यह बात है भेद विज्ञानी की
यहां झरते है झरने आनंद के, आनंद ही आनंद आतम में ....टेक
यहां बाहुबलि से ध्यानी हुऐ, यहां कुन्द– कुन्द जैसे ज्ञानी हुऐ
यहां वीर प्रभु ने यह बोला, मेरा जैन धर्म है अनमोला ....टेक

तर्ज - आप जो मेरे मीत न होते ....गीत

आप न होते–ज्ञान न पाते, ज्ञान बिना आतम ध्यान न पाते
जीवन है क्या ज्ञान बिना, जीवन है क्या ध्यान बिना ....टेक
अनंत भव हम यू ही खोये है, कर्मो के वश हो हम तो रोये है
ध्यान बिना तो मुक्ति नहीं है, जिनवाणी सुन समझे हम है
जीवन है क्या ज्ञान बिना.........टेक
निज ज्ञायक को हम जानेंगे, मुक्ति वधू को अब पायेंगे
आतम को अनुभव से जानो सभी, सुख मिलेगा तुमको तभी
जीवन है क्या ज्ञान बिना ....टेक

तर्ज - स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो...........

स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो, तुम निज पर की पहिचान करो
सम्यक्त्व करो मिथ्यात्व हरो, तुम भक्त नहीं भगवान बनो ....टेक
तुम नरक गति से नाहिं डरो, तुम स्वर्गो की मत चाह करो
तुम वीतराग परिणाम करो, निज आतम का कल्याण करो ....टेक
तुम अमल अखंडित सुखराशि, ज्ञायक स्वरूप निज घर वासी
तुम स्वयं सिद्ध पूरणमासी, तुम में ही है केवल राशि ....टेक

तर्ज - आचरण तुम्हारा शुद्ध............

आचरण तुम्हारा शुद्ध नहीं, कल्याण तुम्हारा कैसे हो
विषयन वश भक्ष–अभक्ष भखे, हिय ज्ञान उजाला कैसे हो ....टेक
नरतन चिन्तामणि पाकर के , खोते हो काग उड़ा करके
डूबे हो अगम भवोदधि में, निज यान किनारा कैसे हो ....टेक
पूजा कर मन इच्छा धरते, मन चंचल कर माला जपते
झूठे धंधे झटपट करते, कर्मो का निवारा कैसे हो ....टेक

तर्ज - मैं दुनियां तेरी छोड चला.............बेवफा सनम

महावीर प्रभु मेरी अरज सुनो, मुझे भव से पार लगा देना
फंस जाऊँ अगर मैं कांटो में, उसे फूल की सेज बना देना ....टेक
अंजन को तुमने तारा है, श्रीपाल को पार उतारा है
अब हम सब की तुम टेर सुनो, निज सम तुम अपने बना लेना ....टेक
आतम को लख आतम ज्ञानी, निज भूल रहा क्यों अज्ञानी
सबने निज का अनुभव है किया, तुम भी निज को अब ध्या लेना ....टेक

तर्ज - यह तन जावें तो जावें..........

यह तन जावै तो जावै, मेरी उत्तम क्षमा नहिं जावै ....टेक
बिना दोष दुर्जन दुख देवें, हिम्मत धार सभी सह लेवें
क्रोध जरा नहिं आवें, मेरी उत्तम क्षमा नहिं जावै ....टेक
टूक–टूक होवे तन सारा, मरे न आतम राम हमारा
यह दृढ़ श्रद्धा आवै, मेरी उत्तम क्षमा नहिं जावै ....टेक
क्षमा कवच धारे जो तन पर, लगे न गोली तीर बदन पर
दुश्मन ही थक जावै, मेरी उत्तम क्षमा नहिं जावै ....टेक

नरभव पाया सफल बनाले, अपने में रमियो
ये मुक्ति वधू दिलवायेगा, तू देखता रहियो.......टेक

तर्ज – हे परम दिगम्बर यति............

हे परम दिगम्बर यति, महागुण व्रती करो निस्तारा
नहिं तुम बिन हितु हमारा ....टेक
तुम बीस आठ गुण धारी हो, जग जीव मात्र हितकारी हो
बाइस परिषह जीत धरम रखवारा, नहिं तुम बिन हितु हमारा ....टेक
तुम आतम ज्ञानी ध्यानी हो, प्रभु वीतराग विज्ञानी हो
हे रत्नत्रय गुण मण्डित हृदय तुम्हारा, नहिं तुम बिन हितु हमारा ....टेक

तर्ज – चेहरा क्या देखते हो...........

पुद्गल क्या देखते हो, दृष्टि बदल कर देखो ना² ....टेक
पुद्गल तो पल में बदल जाएगा, जीव इस महल से निकल जाएगा
पर से दृष्टि हटाकर, निज में उतर के देखो ना..............टेक
इस सागर में ममता की लहरें उठें, तुझको फंसाए तुझ ही में रहें
तप त्याग संयम के पथ पर, थोड़ा सा चलके देखो ना ....टेक
आतम ही तो ज्ञान भंडार है, संयम ही मुक्ति का श्रृंगार है
संयम की इस साधना में, थोड़ा पिघल कर देखो ना ....टेक

तर्ज – एक प्रेम पुजारी आया.........

एक प्रेम पुजारी आया है, चरणों में ध्यान लगाने को
भगवान आपकी मूरत पर, श्रद्धा के सुमन चढ़ाने को ....टेक
तुम त्रिशला मां के प्यारे हो, पतितों के नाथ सहारे हो
तुम चमत्कार दिखलाते हो, भक्तों का मान बढाने को ....टेक
प्रभु तुम्हरे भक्त भटकते है, तेरे नाम को हरदम रटते है
सेवक अब नित्य तरसता है, प्रभु आपके दर्शन पाने को ....टेक

तर्ज – महावीर प्रभु के चरणों में.........

महावीर प्रभु के चरणों में, मैं नित उठ शीश नवाता हूँ
मेरे मन की कली खिल जाती है, जब दर्श तुम्हारा पाता हूँ ....टेक
मुझे वीर नाम ही प्यारा है, इसका ही मुझे सहारा है
इस नाम में ऐसी बरकत है, जो चाहता हूँ सो पाता हूँ
मेरा मानुष जन्म सफल होवे, यही भक्ति का फल चाहता हूँ..............टेक

जब जन्म हुआ तीर्थंकर का, तब इन्द्र बजाबे बासुरिया
तब इन्द्र बजाबे बांसुरिया, इन्द्राणी नाचे झम झमिया ....टेक

तर्ज – मिलता है सच्चा सुख.......

मिलता है सच्चा सुख केवल, जिनराज तुम्हारे चरणों में
यह विनती है पल–पल छिन–छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में..............टेक
चाहे बैरी कुल संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ....टेक
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे काटों पे मुझे चलना हो
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों मे.................टेक

तर्ज – अब गतियों में ....

अब गतियों मे नहीं रूलेंगे, निजानंद रस पान करेंगे
अब सिद्धों के बीच रहेंगे, निजानंद रस पान करेंगे ....टेक
तुने खुद को न पहिचाना, तू तो है बस सिद्ध समाना
खुद की खुद में ही खोज करेंगे, निजानंद रस पान करेंगे ....टेक
मै मुझमें पर में पर रहता, निज रस के सागर में बहता
अब भव–भव का नाश करेंगे, निजानंद रस पान करेंगे ....टेक

तर्ज – चल दिया छोड़...............

चल दिया छोड़ घर बार, कुटुम्ब परिवार धारि मुनि बाना
समझाया वीर न माना ....टेक
माता अति रूदन मचाती है, यों बार बार समझाती है
बेटा कुछ दिन पीछे ही वन को जाना ....टेक
बोले माता क्यों रोती है, जो होनहार सो होती है
उठ गया मेरा इस घर से पानी दाना ....टेक

तर्ज – हे वीर तुम्हारे द्वारे पर............

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर, एक दर्श भिखारी आया है
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को, दो नयन कटोरे लाया है.......टेक
धन दौलत की कुछ चाह नहीं, घरबार छूटे परवाह नहीं
मेरी इच्छा है तेरे दर्शन की, दुनियां से चित घबराया है ....टेक
नहीं दुनियां में कोई मेरा है, आफत ने मुझको घेरा है
प्रभु एक सहारा तेरा है, जग ने मुझको ठुकराया है ....टेक

श्री जिनवर की पूजन करके, आनंद हृदय में छाया है
आनंद हृदय में छाया है, मेरा रोम-रोम हुलसाया है...टेक

तर्ज - चेतो-चेतो चतुर सुज्ञान..............

चेतो—चेतो चतुर सुजान, जरा तू अपने को पहिचान ....टेक
तूने विषयों में सुख माना, सुख का रूप न असली जाना
तू खुद अनुपम सुख की खान, जरा तू ....टेक
तूने अपना ध्येय भुलाया, निज को जग में व्यर्थ रूलाया
तू है निश्चय सिद्ध समान, जरा तू ....टेक
तू है श्रेष्ठ गुणों की खान, पा सकता है केवलज्ञान
तेरी जग में शक्ति महान, जरा तू ....टेक

तर्ज - क्यों न ध्यान लगाये..........

क्यों न ध्यान लगाये, वीर से बावरिया
जाना देश पराये, झमेला दो दिन का ....टेक
माता बहना चाची ताई, पिता पुत्र और भाई, जंवाई
मतलब से प्रीत लगाये ....टेक
जो है तुमको सबसे प्यारे, मृतक देख तुमसे हो न्यारे
कोई संग में न जाये ....टेक
जिस माया पर तू इतराये, आंखिर में कुछ काम न आये
यही पड़ी रह जाये ....टेक
धर्म ही आखिर काम में आये, हर दम तेरा साथ निभाये
आदि प्रभु समझाये ....टेक

तर्ज - चाँदनपुर के महावीर..............

चाँदनपुर के महावीर हमारी पीर हरो ....टेक
जयपुर राज्य ग्राम चाँदनपुर, तहां बने उन्नत जिन मंदिर
तट नदी गम्भीर, हमारी पीर हरो ....टेक
जुड़े हजारों जैनी भाई, पूजन पाठ करें सुखदाई
मनवचतन धर धीर, हमारी पीर हरो ....टेक
सेवक शरण तुम्हारी आया, पुण्य योग से दर्शन पाया
खुली आज तकदीर, हमारी पीर हरो ....टेक

जब प्रभुवर को वैराग्य हुआ, लौकान्तिक देव वहां आऐ
चरणों मे शीश नवा करके, अनुमोदन कर—कर हरषाये है ....टेक

तर्ज - धन्य मुनीश्वर आतम...........

धन्य मुनीश्वर आतम हित में, छोड़ दिया परिवार
कि तुमने छोड़ा सब घरबार ....टेक
काया की ममता को टारी, करते सहन परीषह भारी
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के बने भंडारी
धन छोड़ा वैभव सब छोड़ा, समझा जगत असार ....टेक
होय दिगम्बर वन में विचरते, निश्चल होय ध्यान जब करते
निजपद के आनंद में झूलते, उपशम रस की धार बरसते
मुद्रा सोम्य निरखकर मस्तक, नमता बारम्बार ....टेक

तर्ज - तन नहीं छूता............

तन नहीं छूता कोई, चेतन निकल जाने के बाद
फैंक देते फूल ज्यों, खुशबू निकल जाने के बाद ....टेक
आज जो करते किलोंले, खेलते है साथ में
कल डरेंगे देख तन निरजीव हो जाने के बाद ....टेक
बात भी करते नहीं जो आज धन की ऐंठ में
वे मांगते आये नजर तकदीर फिर जाने के बाद ....टेक
बोलते जब लौं सगे हैं चार पैसा पास में
नाम भी पूछे नहीं पैसा निकल जाने के बाद ....टेक
लोग ऐसे मतलबी फिर क्यों करें विश्वास हम
देख फिर पछताऐगा असमर्थ हो जाने के बाद ....टेक

तर्ज - संत साधु बन के ....

संत साधु बन के विचरूँ, वह घड़ी कब आऐगी
चल पड़ूं में मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी ....टेक
हाथ में पीछीकमण्डलु ध्यान आतम राम का
छोड़कर घरवार दीक्षा की घड़ी कब आयेगी ....टेक
आयेगा वैराग्य मुझको, इस दुखी संसार से
त्याग दूंगा मोह ममता की घड़ी कब आयेगी ....टेक
भव भ्रमण का नाश होवे इस दुखी संसार से
विचरूँ में निज आत्मा में वह घड़ी कब आयेगी ....टेक

तर्ज - जाना नहीं निज आत्मा........

जाना नहीं निज आत्मा ज्ञानी हुये तो क्या हुये
ध्याया नहीं शुद्ध आत्मा ध्यानी हुये तो क्या हुये ....टेक
श्रुत सिद्धांत पढ़ लिए शास्त्रवान भी बन गये
आतम रहा बहिरात्मा पंड़ित हुऐ तो क्या हुऐ ....टेक
पंच महाव्रत आदरे घोर तपस्या भी करे
मन की कषायें ना गई साधु हुऐ तो क्या हुऐ ....टेक
मान बढ़ाई कारणे द्रव्य हजारों खर्च ते
घर के भाई भूखे मरे, दानी हुऐ तो क्या हुऐ ....टेक

शरण तोरि आये महावीर स्वामी[२]
शरण तोरि आये दरश तेरा पाये ....टेक

हमको अपना आसरा दे, ज्ञानमयी गंगा बहा दे
वाणी माँ जिनवाणी माँ, वाणी माँ ऽऽ ऽ जिनवाणी माँ ऽऽ...........टेक

इस देह से मैं सदा न्यारा शुद्ध निर्मल आत्मा ।
परिपूर्ण हैं निज मैं स्वयं विज्ञान घन परमात्मा ॥

अडिल्ल — **चान्द्रायण** — पीयूष

तर्ज – धीरे–धीरे बोल कोई................गोरा काला

सुन–सुन भैया प्रभु वाणी, प्रभु वाणी अमृत वाणी
ऐ दुनियां तिहारो घर नहीं, संग जाऐ मालोजर नहीं ....टेक
सोच समझ मन स्वारथ का संसार, लाख जतन कर छूटेगा घरबार
तू जान ले–पहचान ले, ये मान ले–तू ज्ञान ले
धन जीवन योवन थिर नहीं, आऐ अवसर फिर नहीं ....टेक

तर्ज – जब तेरी डोली निकाली.................

जब तेरी डोली निकाली जाऐगी, बिन महूरत के उठायी जाऐगी
अय मुसाफिर क्यों पसरता है यहां, ये मिला तुझको किराऐ का मकां
कोठरी खाली कराली जाऐगी............टेक
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया, मरते दम लुकमान भी यह कह गया
यहा घड़ी हरगिज न खाली जाऐगी ....टेक
चेत भैया अब श्री जिनवर भजो, मोह रूपी नींद को जल्दी तजो
बरना यह पूंजी उठाली जायेगी ....टेक

तर्ज – बार बार तुझे क्या समझाये..............आरती

वीरनाथ भगवान हमारी, सुन लेना जी पुकार
तेरे बिन स्वामी मेरा, कौन करे उद्धार
भटक चुका हूँ लख चौरासी आया तेरे द्वार
तुम जग नामी संकट मोचन हार ....टेक
तेरे दर को छोड़ कर अब जाऊँ कहाँ, तुझसा दयालू और अब पाऊँ कहाँ
वीतराग सर्वज्ञ तुम्हीं हो, तीन लोक हितकार ....टेक
चोर अंजन से पापी अधम तरे, तेरी भक्ति से है सब संकट हरे
अब शिवराम शरण में आया, करदो बेड़ा पार ....टेक

गीत तेरे हम सदा गाते रहें, शीश चरणों में झुकाते ही रहें.......टेक

तर्ज – दिल के अरमा आसुंओ..........

हे प्रभु! चरणों में तेरे आ गये, भावना अपनी का फल हम पा गये ....टेक
वीतरागी हो तुम्ही सर्वज्ञ हो, सप्त तत्वों के तुम्हीं मर्मज्ञ हो
मुक्ति का मारग तुम्हीं से पा गये ....टेक
विश्व सारा है झलकता ज्ञान में, किन्तु प्रभुवर लीन है निज ध्यान में
ध्यान में निज ज्ञान को हम पा गये ....टेक
तुमने बताया जगत के सब आत्मा, द्रव्य दृष्टि से सदा परमात्मा
आज निज परमात्मा पद पा गये ....टेक

तर्ज – आत्मा हूँ आत्मा........................

आत्मा हूँ आत्मा हूँ आत्मा, मैं सदा ज्ञायक स्वभावी आत्मा ....टेक
शस्त्र से भी मैं कभी कटता नहीं, अग्नि से भी मैं कभी जलता नहीं
जल गलाये तो कभी गलता नहीं ....टेक
चर्म चक्षु से कभी दिखता नहीं, मूर्ख नर अज्ञान वश जाने नहीं
ज्ञानियों की साध्य साधक आत्मा ....टेक
गोरा काला जो भी दिखता चाम है, मोटा पतला होना इसका काम है
सब शरीरों से रहित में आत्मा ....टेक

तर्ज – चन्द क्षण जीवन के............

चन्द क्षण जीवन के तेरे रह गये, और तो विषयों में सारे बह गये ....टेक
चक्रवर्ती भी न बच पाये यहाँ, मृत्यु के उपरांत जाऐगा कहाँ ?
मौत की आँधी में तृण सम उड़ गये ....टेक
छोड़ धन दौलत सिकन्दर चल दिया, आत्मा का हित जरा भी नहिं किया
हीरे मोती के खजाने रह गये ....टेक
क्या तू लेकर आया था क्या जायेगा, तन भी एक दिन खाक में मिल जायेगा
देह भी है ज्ञेय ज्ञानी कह गये ....टेक
ज्ञान का अंदर समुन्दर बह रहा, खोज सुख की मूढ़ बाहर कर रहा
क्यों चिदानंद व्यर्थ में दुख सह रहे ....टेक

मीठा-मीठा बोल थारो कांई बिगड़े-२
खोटी वातां छोड़ थारो कांई बिगड़े-२
ये जीवन हरदम नहीं, कब मिट जाये मालुम नहीं ......टेक

तर्ज – कैसे–कैसे रंग उड़े.............

कैसे–कैसे रंग उड़े नीले पीले लाल
चारों ओर उड़ रही ज्ञान की गुलाल ....टेक
भागे–भागे जाते है करम विकराल
चारों ओर उड़ रही ज्ञान की गुलाल ....टेक
काली–काली कषायों की टेढ़ी मेढ़ी चाल
संयम की पिचकारी मारे ज्ञान की गुलाल ....टेक

तर्ज – जब हम जवां होंगे..........बेताव

कब हम वहाँ होंगे, कब हम यहाँ होंगे
शिव सुख जहाँ होगा, वहाँ विश्राम करेंगे आराम करेंगे ....टेक
ये जन्मो का सिलसिला खो जायेगा
ये जीवन अपना सुखमय हो जायेगा
समकित की राहों पर चलकर विश्राम करेंगे ....टेक
कर्मो का तूफान ये कब सो जायेगा
जीवन अपना तुम समान हो जायेगा
कैसे करम का नाश कर विश्राम करेंगे ....टेक

तर्ज – बार–बार तोहे शीश.........

बार–बार तोहे शीश नमाऊँ आऊँ तेरे द्वार
पार्श्व प्रभुजी करदो भव जल पार
तुम बिन स्वामी मेरा कोई न तारण हार ....टेक
पौष वदी दशमी का शुभ दिन आया
काशी में प्रभु आपने जन्म पाया
अश्वसेन वामा नंदन हैं तेईसवें अवतार ....टेक
प्रभु चरनन में मेरा बस अब ध्यान रहे
दिल की हर धड़कन में तेरा नाम रहे
सम्मेद शिखर से मोक्ष गऐ अनुभव की सुनो पुकार ....टेक

जब हम मुनि होंगे, जाने कहाँ होंगे
लेकिन जहाँ होंगे वहाँ निज ध्यान धरेंगे आत्म ध्यान धरेंगे ....टेक

तर्ज – धीरे धीरे बाले कोई – गोरा काला

झूम–झूम के प्रभु गुण गायले, गुण गायले प्रभु गुण गायले
भव बन्धन कट जाऐगा, जो शरण प्रभु की आयेगा ....टेक
हिल मिल कर जिन मंदिर आये आज
दर्शन पायें धन्य घड़ी धन्य भाग्य
हम बार–बार करे नमस्कार2
जो शुद्ध भावना भायेगा, वो मन वांछित फल पायेगा ....टेक

तर्ज– परदेशी–परदेशी जाना नहीं..........राजा हिन्दुस्तानी

जिनमंदिर–जिनमंदिर आना सभी, घर छोड़ के सब छोड़ के
जिनमंदिर मेरे भाई रोज है आना, इसे याद रखना कहीं भूल न जाना ....टेक
चार कषायें पालीं तुमने पाप किया, नरभव अपना यू हीं तुमने बार दिया
जैनी होकर जिनमंदिर क्यों छोड़ दिया, दुनियां के कामों में जन्म निकाल दिया
जिन मंदिर मेरे साथी रोज है आना ....टेक
जैन धर्म हम सबको ये सिखलाता है, करो धर्म का साथ हमें बतलाता है
इसका तो उद्देश्य यही अब जीवन में, हो जन–जन में धर्म हमें समझाता है
जिन मंदिर मेरे भाई रोज है आना ....टेक
क्यों जाता गिरनारी क्यों जाता काशी, घट ही में है तेरे घट ही का वासी
वीर प्रभु ने समझाया हम सबको ये, धारो रत्नात्रय अनुभव जा शिववासी
जिन मंदिर मेरे साथी रोज है आना ....टेक

तर्ज– दिल के अरमां..............

नेमी दर पर आते आते रह गये,
हम लिए माला खड़े ही रह गये ....टेक
जोग ही लेना जरूरी था अगर,
क्यों न घर पर जोगी बन कर रह गये ....टेक
आपने पशुओं पे की इतनी दया,
हम दया के पात्र भी ना रह गये ....टेक
रंग किशमत ने ये दिखलाया सनम,
हम सुहागन बन के अबला रह गये.......टेक

छोटे छोटे पैंया घुंघरालें बाल
अच्छा देखा माता मरूदेवी तेरा लाल.........टेक

मानव

तर्ज - जीवन के किसी पल.........

जीवन के किसी पल में वैराग्य उपज सकता है
संसार में रहकर प्राणी संसार को तज सकता है ....टेक
कहीं दर्पण देख विरक्ति, कहीं मृतक देख वैरागी
जिन कारण दीक्षा लेता, वो पूर्ण जन्म का त्यागी
निग्रंथ साधु ही इतने, सदगुण से बन सकता है ....टेक
आतम तो अजर अमर है, हम आयु गिने इस तन की
यह तन है नश्वर प्राणी, यह वाणी है भगवन की
वहीं सबको समझा पाता, जो स्वयं समझ सकता है ....टेक

तर्ज- मेरा जूता है जापानी...........श्री ४२०

सुनलो महावीर की वाणी, ये कहती है माँ जिनवाणी
खाना दिन में खाना चाहिए, पीना छान कर के पानी ....टेक
निकल पड़े प्रभु लेके दीक्षा, सबको राह बताने2
जीओ और सबको जीने दो, यह सन्देश सुनाने2
ना हो किसी जीव को हानी, कहते है गुरू और ज्ञानी ....टेक

तर्ज - तुम राग द्वेष से हटकर.........

तुम राग–द्वेष से हटकर, समता रस को अपनाओं
अरिहन्त परम उपकारी, उनके गुण निश दिन गाओं ....टेक
क्यों विषयों में रच–पच कर, रह नरभव व्यर्थ गंवाते
दुर्लभ चिन्तामणि को तुम, कोड़ी के भाव बिकवाते
तुम धर्म मार्ग पर चलकर, निज जीवन सफल बनाओ ....टेक
पापों से मन को हटाकर, सातों व्यसनों को त्यागो
मोहनींद त्याग कर भाई, कर्तव्य हेतु अब जागो
व्रत संयम धारण कर तुम, अब मोक्ष मार्ग अपनाओं ....टेक
प्रभु की वाणी सुनने से, स्व–पर विवेक जगता है
मिथ्यात्व कालिमा हटकर, सम्यक्त्व सूर्य उगता है
इसकी किरणों से अपना, तुम आतम शुद्ध बनाओ ....टेक

तर्ज - आने से उसके आये बहार .... जीने की राह

दर्शन को आया सुनले पुकार, मेंटो तुम मेरे संकट अपार
होगी मैहरबानी ओ जिन देवा, तू बड़ा दानी ओ जिन देवा ....टेक
कितने पापी तारे ओ त्रिशला की आंखों के तारे
हितु न और कोई इस जीवन के तुम हो सहारे
मिलती है, मुक्ति यहाँ, सुनें जिनवाणी हो मेरे जिनदेवा ....टेक

तर्ज - ऐ मेरे वतन के लोगों..............

हे वीर वतन के लोगों, जरा हाथ में लो जिनवाणी
निर्वाण हुआ है जिनको, जरा याद करो वो कहानी ....टेक
कर्मों का खड़ा हिमालय, निज रूप की धूनी लगा दी
हो अर्न्तमग्न खड़े वो, कर्मो की लाश बिछा दी
समता रस पान किया तब, हो गये सफल बलिदानी ....टेक
जब ध्रुव में मनी दिवाली, शिव रमणी खेले होली
जग जन झुकते चरणों में, बे बोले निज रस बोली
वे धन्य मुनीश्वर जिन ये, है धन्य महा जिनवाणी ....टेक
भव—भव में भटकते लोगों, जिनमत का दो ये नारा..
ये जैनधर्म हम सबका, लहराये केशरिया प्यारा
तुम मत फूलों शुद्धातम, तुमको बतलाते ज्ञानी ....टेक

तर्ज - जीवों का जिसके दिल में.........

जीवों का जिसके दिल में हो प्यार, हो भव नैया उसकी है पार
बात पुरानी है काहे भूल गया, यही जिनवाणी है, काहे भूल गया ....टेक
दिल मिलालो ऐसे जैसे मिलता है दूध और पानी
देख देख के चलना हो जाये न त्रस जीव हानी
सोचो तो, क्या है ये, धर्म निशानी है काहे भूल गया ....टेक
शब्द में वो रस हो जैसे कोयल बोले कहीं पर
दिल किसी का दूखे ऐसे बोलो वचन न कहीं पर
पाप है ये, दोष है ये, दोषों की कहानी है, काहे भूल गया ....टेक

करले जगत में भलाई का काम, डरना बुराई से तू इंसान
थोडी जिन्दगानी है, तेरी बावरे, छोटी सी कहानी है तेरी बावरे.........टेक

तर्ज - तू जाग रे चेतन प्राणी........

तू जाग रे चेतन प्राणी, कर आतम की अगवानी
जो आतम को लखते है, उनकी है अमर कहानी ....टेक
है ज्ञान मात्र निज ज्ञायक, जिसमें है ज्ञेय झलकते
यह झलकन भी ज्ञायक है, इसमें नहिं ज्ञेय महकते
में दर्शन ज्ञान स्वरूपी, मेरी चैतन्य निशानी ....टेक
अब समकित सावन आया, चिन्मय आनंद बरसता
भीगा है कण—कण मेरा, हो गई अखण्ड सरसता
समकित के मधु चितवन में, झलकी है मुक्ति निशानी ....टेक
ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शांति बरसती इनमें
मानो आया सिद्धालय, मेरी बस्ती हो उसमें
मैं हूँ शिवपुर का वासी, भव—भव की खतम कहानी ....टेक

लख चौरासी योनि विसार, नरतन रूपी करके श्रृंगार
मोक्ष दिवानी है, तेरी आत्मा, केवल ज्ञानी है, तेरी आत्मा......टेक
....
हे वीर प्रभु जी हम पर, अनुपम उपकार तुम्हारा
तुमने दिखलाया हमको, शुद्धातम तत्व हमारा...टेक

उम्र कट जायेगी एक झोके से
मौत भी आयेगी तो धोखे से
आओ आकर प्रभु की भक्ति में लग जाओ
वक्त रूकता नहीं रोके से

ॐ ॐ

राधिका | रोला | छप्पय
रोड़क | आभानक

तर्ज – तुम तो ठहरे परदेशी.........

आओ जिन मंदिर में, प्रभु दर्श पायेंगे
प्रभु दर्श पा करके, निज दर्श पायेंगे ....टेक
छोड़ो कषायें सारी, गर सुख को पाना है
शेर– पतन के लिए अहंकार काफी है, बंधन के लिए कषाय काफी है
इसीलिए कहता हूँ छोड़ दो इन सबको, भगवान बनने के लिए एक क्षमा ही काफी है
वीरा ने बोला है, वीर बन जायेंगे ....टेक
मानों प्रभु की वाणी, गर मुक्ति पाना है
शेर– हम नहीं चाहते आप अपनी परम्परा छोड़ दें, हम नहीं कहते कि आप अपने संबधों को छोड़ दें
जहां तक कि आत्मा की मुक्ति का प्रश्न है, आप अपने को अपने प्रभु से जोड़ दें
अनुभव ने मानीं है, हम सब भी मानेंगे ....टेक

तर्ज – मुनिराज समागम दिवस.......

मुनिराज समागम दिवस आज यह आया
शुभदिवस आज यह आया, सब ओर हर्ष आनंद मोद है छाया ....टेक
ये मुनिवर नग्न दिगम्बर है अनगारी, सम्यग्दर्शन व ज्ञान चरित के धारी
इनने स्व–पर कल्याण मार्ग अपनाया, शुभ दिवस आज यह आया ....टेक
ये विश्वधर्म के प्रेरक जग के ज्ञाता, निज आत्म तत्व अध्ययन जिन्हें है भाता
जग के वैभव को त्रणवत् इनने ठुकराया, शुभ दिवस आज यह आया ....टेक
ये ज्ञानवान गुणवान सरल स्वभावी, है समता रस में पगे बड़े मेधावी
इनके दर्शन कर जीव मात्र हर्षाया, शुभ दिवस आज यह आया ....टेक

दुख हरो चन्द्र प्रभु आज शरण में तेरी, घिर गई भंवर में आज नाव प्रभु मेरी
कर्मो की गति विचित्र न जाने कोई, पतिव्रत सीता नार वनों में रोई - टेक

मैं तो पूजन को आया रे प्रभु जी तेरे चरणों में
जय जय महावीर प्रभु² ......टेक

तर्ज – कजरा मुहब्बत वाला ....किस्मत

मन पर काबू कर लाला, ना बन इतना मतवाला
धरले हृदय में जरा ध्यान, दो दिन का तू मेहमान
मतलब की सारी दुनियां, ना कर इसमें रंग रलियाँ
बनता है क्यों नादान, दो दिन का तू मेहमान ....टेक
कर्जा में नरतन पाया, इसको उधार लेके
पुण्य की जमानत पाई, ऐसा इकरार करके
तेरा में कर्जा दूंगा, धर्म व्यापार करके
वादा यूं करके लौटा, विजनिस में पड़ गया टोटा ....टेक
मंदिर न जाते लाला, पाई न दान देते
बैठे पलंग पर खाना, चाय व पान लेते
दिन भर की पेट पूजा, शाम को आप लेटे
सोते–सोते ही लाला, दम का गड़बड़ घोटाला
खाने ने ले ली उनकी जान, लालाजी पहुँचे शमशान ....टेक

तर्ज – कभी तू छलिया लगता है.......... पत्थर के फूल

जीव तू अप्पा लगता है, जीव तू ज्ञाता लगता है
जीव तू सिद्ध लगता है, जीव स्वम्भू लगता है
तू जिस नय से समझे, उस नय से पूरा है
ये है प्रमाण से पूर्ण सिद्ध टूटा न जोड़ा है ....टेक
आत्म प्रदेशों बीच में मलीनता न कोई
शुद्धातम ही चाहूँगा बनूं मुक्ति मैं राही–2
द्रव्यमान नौकर्म को हथकड़ी लगेगी
चेतन सिद्ध जागा तो शक्तियाँ जागेगी
जीव तू नित्य लगता है, जीव अनित्य लगता है
जीव तू भिन्न लगता है, जीव अभिन्न लगता है ....टेक
स्वाद्वाद सिद्धान्तो को मान हम लेंगे
हम तो जग से भिन्न हैं नाता तोड़ देंगे–2
निर्विकल्प दशा से मोक्ष की है मंजिल
अतीन्द्रिय ज्ञान में भाये है ये सब मिल
जीव तू अनुपम लगता है, जीव तू उज्जवल लगता है
जीव तू पावन लगता है, जीव परमेश्वर लगता है ....टेक

तर्ज- मिलो न तुम तो हम....

घट–घट जीवन ज्योति जगा दो, मंगलमय भगवान, करू में वंदना–2
मन वीणा के मधुर स्वरों में, हर पल गाऊँ गान, करूँ में वंदना ....टेक
ओ मेरे प्रभु जी पूजा करूँ में भक्ति भाव से
तुम पद में भी पाऊँ, अपने ही निज स्वभाव से
शांत भाव छवि मन को भाये, हृदय कमल मुस्काये ....टेक
ओ मेरे वीरा, नैया पड़ी है मझधार जी
आप बिना प्रभु कौन लगावे इसे पार जी
छोड़ आपको कित में जाऊँ, चरण मिल जाये ....टेक

तर्ज- मैं तो आरती उतारूँ........... जय संतोषी माँ

में तो आरती उतारूँ रे, जिनवाणी माता की
जय जय जिनवाणी माता जय जय मां ....टेक
बड़ा अदभुत है आगम अपार मां के अंतर में
बड़े ज्ञान के भरे है भंड़ार, मां के अंतर में
प्रीति करूँ, भक्ति करूँ, प्रेम सहित पठन करूँ
जीवन सुधारूँ रे, हो प्यारा–प्यारा जीवन सुधारूँ रे ....टेक
आज पाया है वैभव अपार मां के अंतर में
मिटा भव–भव का दुःख अपार मां की सेवा में
पठनं करूँ, मनन करूँ, पर से अब भ्रमण तजूं,
निज को निहारूँ रे, हो प्यारा–प्यारा निज को निहारूँ रे ....टेक

तर्ज - तुम जपो मंत्र नवकार........

तुम जपो मंत्र नवकार जीव जाता है
यह जैन धर्म नहीं बार–बार पाता है ....टेक
ऐ श्रावक कुल जिन धर्म कठिन मिलता है
तू है गयों अन्धा–धुन्द जन्म खोता है ....टेक
तू माया जाल में फंसा रूला फिरता है
तेरे सिर पर डोले काल नहीं डरता है ....टेक
या प्रभु सुमिरन बिन जीव गोत खाता है
भगवन्त भजो तो जल्दी पार होता है ....टेक

अब सिद्धचक्र की महिमा उर में लाओ
तुम सिद्धपुरी में अपना नाम लिखाओ........टेक

तर्ज - तुम तो प्रभु वीतरागी..........

तुम तो प्रभु वीतरागी, कब हमें बनाओगे –2
तुमने पाया केवलज्ञान, कब हमें दिलाओगे–2 ....टेक
रत्नत्रय से तुमने पूज्य पद पाया है
शेर– कैसा है रत्नत्रय ➢ सम्यग्दर्शन वो दर्शन है जिसमें प्रदर्शन नहीं होता
और सम्यग्ज्ञांन वो ज्ञान है जो कभी अज्ञान नहीं होता
रत्नत्रय से तुमने पूज्य पद पाया है
पंचम गति पाई तुमने–2 कब हमें बुलाओगे ....टेक

तर्ज - छोड़ो पर की बातें ....

छोड़ो पर की बातें, पर की बात पुरानी
निज आतम से शुरू करेंगे, हम तो नई कहानी
हम आतम ज्ञानी, हम भेद विज्ञानी ....टेक
आओ आतम के आनंद की खान बतायें
रत्नत्रय से सजा हुआ भगवान दिखायें
निज आतम ही परमातम है, सुख की यही रवानी
मत कर हैरानी, तज दे नादानी ....टेक
निज प्रभुता को भूल, जगत में अब तक रोये
जिनशासन पाकर यह, अवसर अब क्यों खोये
गुण अंनत हैं सुख अंनत हैं ,आनंदमय जिंदगानी
हम आतम ज्ञानी, हम भेद विज्ञानी ....टेक

हे वीतराग भगवान शरण ली तेरी
बस ज्ञाता दृष्टा रहे परिणति मेरी ....टेक

हे जीव,
सारा का सारा संसार केवल है एक विशाल नाटक
तू इसमें भांति-भांति के भेष धर भाग ले
तू इसे खेल कोई चिन्ता नहीं किन्तु इस बात का भी ध्यान रख
इसमें तू.......कभी.......भूल कर भी.......ना अटक.......ना अटक..

बसन्ततिलका | भुजंगप्रयात | इन्द्रवजा
पीयूषनिर्झर | शंखनारी | उपेन्द्रवजा

तर्ज – दीवाने है दिवानों को ....

आतम हूँ आतम को न जर चाहिए न घर चाहिए
मुझे नाथ तेरी डगर चाहिए
न दुख है जहाँ, किसी को वहाँ, मुझे नाथ तेरा ही दर चाहिए ....टेक
सुनों बात मेंरी ऐ मालिक जहाँ, मिले सब ही स्वारथ के साथी यहाँ
बिना स्वार्थ के पूछ कुछ भी नहीं, हकीकत का है नाथ यें ही बयां
जो माँगोंगे मिलेगा, बाजार से दुकानदार से
मगर अपनी थैली में जर चाहिए ....टेक
है दौलत तो दुनिया है साथी सभी, अगर खत्म हो जाये दौलत कभी
तो फिर तीन कौड़ी के बिकते यहाँ, यही सीख देते है जग में सभी
जो रहना है रहों, ऐसे संसार में जगत धार में
रे निज आतम पे अनुभव नजर चाहिए ....टेक

तर्ज – हमें नाथ जग में ....

हमें नाथ जग में तुम्हारा सहारा, हरोगे हमारा तुम्हीं कष्ट सारा ....टेक
तुम्हीं वीर भगवन हो संकट निवारण, श्रीपाल सागर से तुमने निकारा ....टेक
भरे जितने प्राणी जमाने में स्वामी, न हम हैं किसी के न कोई हमारा ....टेक
तुम्हारी शरण में शरण अपनी लेकर, सदा पाये आंनद शिवपुर अपारा ....टेक

तर्ज – तुम्हीं मेरे मन्दिर..........खानदान

तुम्हीं मेरे भगवन, तुम्हीं नाथ माता, तुम्हीं तो पिता हों 2
तुम्हीं नाथ मेरे हितू एक सच्चे परम देवता हो ....टेक
चौरासी के चक्कर बहुत मैंने खाये, गति चार के चक्कर बहुत मैंने खाये
नहीं कष्ट मेरे छुपे नाथ तुमसे, हो सवर्ज्ञ तुम तो सभी जानते हो ....टेक
अग्नि कुण्ड सीता का शीतल बनाया, सती द्रापदी का है चीर बढ़ाया
सुदर्शन की सूली सिंहासन बना वो, ये नैया भी मेरी किनारे लगा दो ....टेक

तर्ज – प्रभु दर्श कर आज ....

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे हैं, झुका तेरे चरणों में सर जा रहे है ....टेक
यहां से कभी दिल न जाने को करता, करें कैसे जायें बिना भी न सरता
मगर वे ह्रदय नयन भर आ रहे हैं ....टेक
हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई, न मंदिर में बहुमूल्य वस्तु चढ़ाई
यह खाली फकत जोर कर जा रहे है ....टेक
सुना तुमने तारे अधम चोर पापी, न धर्मी सही फिर भी तेरे हैं हामी
हमें भी तो करना अमर जा रहे है ....टेक
बुलाना यहां फिर भी दर्शन को अपने, सुमत तुम भरोसे लगे कर्म हरने
जरा लेते रहना खबर जा रहे हैं ....टेक

तर्ज – तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ ...धूल का फूल

प्रभु वीर का आसरा चाहता हूँ
चरण में पड़ा हूँ शरण चाहता हूँ ....टेक
चारों ही गतियों में भटका फिरा हूँ
सदा मोक्ष मंजिल पे अटका रहा हूँ
कहीं ना मिला सच्चे पथ का प्रदर्शक
कृपा दृष्टि तेरी सदा चाहता हूँ ....टेक

तर्ज – तुम्हें प्यार करते है करते रहेंगे.......अप्रैल फूल

जयन्ति का उत्सव मनाते रहेंगे, महावीर के गुण गाते रहेंगे
वाणी प्रभु की सुनाते रहेंगे, अहिंसा का डंका बजाते रहेंगे ....टेक
न हिंसा से बढ़कर कोई पाप भाई, दुनियां से कर देना इसकी सफाई
सभी प्राणियों को तो समझो बराबर, किसी को सताना है जुल्म सरासर
ये सन्देश सबको सुनाते रहेंगे ....टेक
तेरी आत्मा तो ये परमात्मा है, न समझे वही तो बहिरात्मा है
फकत शक्ति व्यक्ति का है एक अन्तर, मनन आत्मा का करे जो निरंतर
शिवानंद वे ही तो पाते रहेंगे ....टेक

तर्ज – सौ साल पहले मुझे..............

सुबह शाम जिसको तेरा ध्यान होगा, बड़ा भाग्यशाली वह इंसान होगा ....टेक
करे सच्चे मन से जो सेवा तुम्हारी, न नर्कों का जा करके मेहमान होगा ....टेक
विनय आपसे मेरी यह है प्रभु जी, मुझे भी उबारो तो अहसान होगा ....टेक

तर्ज – नजर लागी राजा तेरे बंगले पे...........

लगन लागी भगवन तेरे दर्शन की ....टेक
जो में होता प्रभुवर तुमरा पुजारी, बैठा रहता भगवन तेरे चरणों में ....टेक
जो में होता प्रभुवर कोई गवैया, भजन करता भगवन तेरे चरणों में ....टेक
जो में होता प्रभुवर त्यागी तपस्वी, जप–तप करता भगवन तेरे चरणों में ....टेक

तर्ज – लगाओ प्रभु से लगन..........

लगाओ प्रभु से लगन धीरे–धीरे, मिटेगी कर्म की तपन धीरे–धीरे ....टेक
न छोड़ो अहिंसा दया धर्म पालो, जो धारा है चित में उस व्रत को सम्हालो
करो इन्द्रियों का दमन धीरे–धीरे ....टेक
नहीं फिर मिलेगा ये नर जन्म पाया, सुकार्य से कर लो सफल अपनी काया
कि करदो शरू अब भजन धीरे–धीरे ....टेक
हमेशा बुरे भाव दिल से निकालो, हमेशा ही शुभ भाव चित में विचारो
बनोंगे तभी शिव रमण धीरे–धीरे ....टेक

तर्ज – बादा न तोड़...........

वीर गुण गा, प्रभु गुण गा
तेरी पल पल उमरिया बीती जाय SS ....टेक
आया यहां तो तुझको जाना ही होगा, प्रभु की शरण में तुझको आना ही होगा
तेरी सांसों की डोरी घटती जाये SS ....टेक
कोई नहीं है तेरा झूठा झमेला, रहा है सदा से जीव अकेला
प्रभु चरणों में ध्यान लगा SS ....टेक

तर्ज – यशोमति मैया से ....संजोग

मन में ये सोचत फिरता है ग्वाला, गैया का दूध आज किसने निकाला ....टेक
ग्वाले की गैया चरने को जावे, एक टीलें पर निशदिन दूध झरावे
रोज अचम्भे में ओ .... रोज अचम्भे में पड़ता है ग्वाला ....टेक
चल दिया ग्वाला घर से टीले पे आया, सारा टीला उसने खोद गिराया
धीरे धीरे स्वामी उसने ओ .... धीरे–धीरे स्वामी उसने तुमको निकाला ....टेक
पल में ही स्वामी तुमने दर्श दिखाया, ग्वाले का सदियों तुमने मान बढ़ाया
सेवक शरण में आके ओ .... सेवक शरण में आके जपे तेरी माला ....टेक

जिनवाणी मैया से बोल आतम लाला, मैं तो हूँ गोरा मैया हुआ कैसे काला.....टेक

तर्ज – गोपाचल पर्वत का..........

गोपाचल पर्वत का प्रभु पार्श्व प्यारा
वामादेवी अश्वसेन का राज दुलारा ....टेक
पौष वदी ग्यारस के दिन प्रभु जन्म लीना, धन्य हुई काशी नगरी पुण्य कर्म कीना
देव–देवी सब नर–नारी करें जयकारा ....टेक
धर्णेन्द्र पद्मावती मंगल गाये, ऋषि–मुनि सुर–नर सारे खुशियाँ मनाऐं
मनहारी रूप तुम्हारा लगे प्यारा–प्यारा ....टेक
सुनाया है नाग–नागिन को णमोंकार तुमनें, किया चोर भील पर भी उपकार तुमनें
तेरा नाम लेने से खुले मोक्ष द्वारा ....टेक

तर्ज – भजले पारस अति प्यारा......

भजले पारस अति प्यारा लगे², भव सागर नैया पार लगे ....टेक
चार कषायों को तूने है पाला, आतम प्रभु को जो करती है काला
पर से है तूने प्रीत लगाई, किया न भजन ये उमर यूं गंवाई
तेरी ज्ञान की ज्योति दिल में जगे ....टेक
पारस का नाम है तारण हारा, पारस को ध्याके पारस बन जारा
जप–तप करन ज्ञान ह्रदय धरन को, क्रोध मान माया न दिल में धरन को
धर्म बिना नैया न पार लगे ....टेक

तर्ज – मैं क्या करूँ राम मुझे ....

मैं महापुण्य उदय से जिन धर्म पा गया ....टेक
चार घाती कर्म नाशे ऐसे अरहंत हैं, अनंत चतुष्टय धारी श्री भगवंत हैं
मैं अरहंत देव की शरण में आ गया ....टेक
वस्तु का स्वरूप बतावे वीतराग वाणी है, तीन लोक के जीव हेतु महा कल्याणी है
मैं जिनवाणी माँ की शरण में आ गया ....टेक
परिग्रह रहित दिगम्बर मुनिराज हैं, ज्ञान ध्यान सिवा नहीं दूजा कोई काम
मैं श्री मुनिराज की शरण में आ गया ....टेक

प्रभु शांत छवि तेरी अंतर में है समाई,
प्रत्यक्ष देख मूरत शांति ह्रदय में छाई ....टेक
अक्षय निधि को पाने चरणों में प्रभु के आया
पर प्रभु ने मूक रहकर मुझकों भी प्रभु बताया
अंतर में प्रभुता मेरे निश्चय प्रतीति आई ....टेक

तर्ज – बहुत प्यार करते हैं ....साजन

बड़े भाग्य से हमको मिला जिन धरम
प्रभु की शरण आके, निज की शरण पाके, काटो करम ......टेक
अनादि से भटके चले आ रहे हैं प्रभु के वचन क्यों नहीं भा रहे हैं
रूदन तेरा भव वन में² सुने कौन जन ......टेक
अणु–अणु स्वतंत्र प्रभु ने ज्ञान कराया, क्यों पर का कर्ता बन व्यर्थ भरमाया
वीर प्रभु बोलें हो जा² निज में मगन ......टेक

तर्ज – मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक.......

मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक समयसार निर्मल, स्वयं ही प्रभु हूँ स्वयं ही विभू हूँ
जीवत्व मेरा है स्वाधीन शाश्वत, पराधीन नाहीं जनमता न मरता
अक्षय अगुरूलघु वैभव है मेरा, मुझमें सदा से मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक ....टेक
नहीं पर से लेना नहीं कुछ भी देना, नहीं कुछ कराना नहीं कुछ भी करना
हूँ निर्बन्ध पर से न सम्बन्ध किंचित, सहज शांति मय हूँ मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक ......टेक
सहज आज छूटे विकल्प सु झूठे, अनुभूति आनंदमयी आज पायी
कहाँ तक कहूँ अब विकल्पों से बस हो, रम जाऊँ निज में मैं हूँ पूर्ण ज्ञायक......टेक

तर्ज – सावन का महीना पवन करे........

त्रिशला के भवन में मचो है भारी शोर
महावीर प्रभु जन्मे मचो कुण्डलपुर में शोर ....टेक
अर्ध रात्रि में हिला इन्द्र का सिंहासन, इन्द्र–इन्द्राणी आये पहन के आभूषण
इन्द्र–इन्द्राणी मिलकर करते है भारी सोच ....टेक
इन्द्र–इन्द्राणी से बोले वीर को उठाओ, माया का बालक लेके पास सुलाओ
वीर प्रभु को लेके चले पाण्डुक शिला की ओर ....टेक
झूला पड़ा है वीर का बीच अगनवा, झूला झुलावे तुमको त्रिशला मैया
पलने में बंधी है रेशम की सुन्दर डोर ....टेक

तर्ज – इन्ही लोगों ने.........पाकीजा

इन्हीं कर्मो ने इन्ही कर्मो ने इन्हीं कर्मो ने कर दीना चोपट्टा तरा ....टेक
गुरू सीख मानी न माया में उलझा, माया भंवर ने कर दीना चौपट्टा तेरा ....टेक
मोह माया छल कपटों में उलझा, इन्हीं पापों ने कर दाना चोपट्टा तेरा ....टेक
भोग विषयों की खातिर खुद को न जाना, इन्हीं विषयां ने कर दीना चौपट्टा तेरा......टेक
मेरी मत मानो जिनवाणी को देखो, इन्हीं वचनों से बच जाय चौपट्टा तेरा ....टेक

तर्ज – अरे दुनिया वालों............

अरे दुनियां वालों सुनों और समझो, ये छवि वीतरागी बता क्या रही है
बना जो दिगम्बर लिया भेष अपना, समझ तो ये तुझसे छुटा क्या रही है ....टेक
तू ही अपना करता तू ही अपना भरता, तू ही ज्ञाता दृष्टा तू ही आत्म ज्ञानी
बनो आत्म ज्ञानी करो आत्म चिन्तन, ये आसन इसी से लगाई गई है ....टेक
तू ही शुद्ध अरू बुद्ध आतम स्वरूपी, तू गोविन्द है तू चिदानन्द रूपी
जगत की ये जड़ता हटा करके तुझसे, अचल सिद्धि पद को दिखा यह रही है ......टेक

तर्ज – आतम का जब तक........

आतम का जब तक न निज ज्ञान होगा
तब तक न संसार से पार होगा ....टेक
व्रत महाव्रत शील संयम यों जानों, भजन दीन पूजन सभी यों ही मानों
बहु शून्य बिन अंक ज्यों वे लाभ होगा ....टेक
उद्यम किया जिसने निज ज्ञान कीना, अपने प्रभु को निज में ही चीना
संयम नहीं फिर भी वह पार होगा ....टेक

तर्ज – अच्छा सिला दिया तूने............. बेवफा सनम

दिन रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ, भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ....टेक
तेरी शांत मूरत मुझे भा गई है, मेरे नयनों में नजर आ गई है
में अपने में अपने को कैसे समाऊँ, भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ....टेक
मैं सारे जहाँ में कहीं सुख न पाया, है गम का भरा गहरा दरिया है छाया
ये जीवन की नैया में कैसे तिराँऊ, भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ....टेक
यही आस जिनवर शरण पाऊँ तेरी, मिट जाय मेरी ये भव–भव की फेरी
शरण दो तुम्हें नाथ शीश नवाऊँ, भावों की कलियाँ चरण खिलाऊँ ....टेक

वीर प्रभु के ये बोल तेरा प्रभु तुझ ही में डोले
तुझ ही में डोले हां तुझ ही में डोले
मन की तो घुंडी को खोल तेरा प्रभु तुझ ही में डोले....टेक

दयाकर दयाकर दयाधर्म धारी, हम आये हुए शरण में तुम्हारी।
कृपा नाथ तुमना में बनूं निद्धधारी, हम आये हुये है शरण में तुम्हारी।।

तर्ज - करना मन ध्यान ....

करना मन ध्यान महामंत्र णमोकार ....टेक
पहली बार बोलो मन णमों अरिहंताणं, होवे पाप का नाश महामंत्र णमोकार ....टेक
दूजी बार बोलो मन णमो सिद्धाणं, मिले मुक्ति का द्वार महामंत्र णमोकार ....टेक
तीजी बार बोलो मन णमों आयरियाणं, होवे गुरू का ध्यान महामंत्र णमोंकार........टेक
चौथी बार बोलो मन णमों उवज्झायाणं, होवे आतम ज्ञान महामंत्र णमोकार ....टेक
पांचवी बार बोलो मन णमो लोए सव्वसाहूणं, होवे भव से पार महामंत्र णमोकार ....टेक

सोरठा

तर्ज - लिया प्रभु अवतार...........

लिया प्रभु अवतार जय जयकार जय जयकार जय जयकार
त्रिशला नन्द कुमार जय जयकार जय जयकार जय जयकार ....टेक
आज खुशी है आज खुशी, हमें खुशी है तुम्हें खुशी हैं, खुशियां अपरम्पार ....टेक
पुष्प और रत्नों की वरषा, सुरपति करते हरषा—हरषा, बजे दुन्दभी सार ....टेक
आओ हम सब प्रभु गुण गावें, सत्य अंहिसा ध्वज लहरायें, जो जग मंगलकार ....टेक
पुण्य योग्य सोभाग्य हमारा, सफल हुआ है जीवन सारा, मिले मोक्ष दातार ....टेक

तर्ज - पारस की जय ....

पारस की जय बोल, भव से तिर जायेगा
जीवन तेरा अनमोल सुख से कट जायेगा ....टेक
धरम की पावन गंगा हो जायेगा मन चंगा
मिटे दुखों का फन्दा भजलो वामा नंदा
अंतर के पट खोल, प्रभु जैसा बन जायेगा ....टेक
प्रभु का लेलो सहारा, मिटे जगत अंधियारा
भोग विषय दुख धारा, फिरे वो मारा—मारा
मीठी—मीठी वाणी बोल, दुख सब मिट जायेगा ....टेक

हो म्हारा वीतराग भगवान, अशुभ कर्म म्हारा कांई करते ......टेक

अवतार

तर्ज - आनंद श्रोत बह रहा.........

आनंद श्रोत बह रहा तू क्यों उदास है
अचरज है जल में रह के भी मछली को प्यास है..........टेक
उठ ज्ञान चक्षु खोल ले तू देख तो जरा
जिसकी तुझे तलाश है वह तेरे पास है ....टेक
कुछ तो समय निकाल आत्म शुद्धि के लिए
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है ....टेक
भोगों की वासनाओं से दूषित है मन तेरा
प्रभु का भजन नहीं और जग से आस है..........टेक

तर्ज - उड़े जब-जब जुल्फें तेरी..........

बजे कुण्डलपुर में बधाई², कि नगरी में वीर जन्में², महावीर जी.....टेक
शुभ घड़ी जन्म की आई, कि स्वर्गों से देव आये .....टेक
तेरा न्व्हन करें मेरू पर, कि इन्द्र जल भर लाये .....टेक
तुझे देवियाँ झुलावें पलना, कि मन में मगन होके .....टेक
तेरे पलने में हीरे मोती, कि डोरियों में लाल लटके .....टेक
तेरे पिता लुटावें मोहरें, खजाने खाली हो जायेंगे .....टेक
अब ज्योति मन में जागी, कि पाप सारे कट जायेंगे .....टेक

तर्ज - मेरे तो गिरधर गोपाल.........

मेरे प्रभु वीतराग और नहिं कोई
अष्टादश दोष रहित निर्विकार सोई ....टेक
मिथ्यातम नाश कियो ज्ञान ज्योति जोई
निज परिणति रास रच्यो पर परिणति खोई ....टेक
गुण अंनत प्रगटाए साधना विलोई
सकल ज्ञेय ज्ञायक सर्वज्ञता संजोई ....टेक
जिन प्रभु की छवि देख ज्ञान माल पोई
वीतरागता की रूचि ज़ागत सुख सोई ....टेक

चौपैया सरसी सार विष्णु
जोगीरासा चौबोला नवसरसी उल्लाला अर्धजोगीरासा

तर्ज - अरे मन आतम.......

अरे मन आतम को पहिचान[2]
मिल जुल संग रहत पुद्गल के, ज्यों तिल तेल समान ......टेक
अजर अमर अरू अलख लखे नहिं, आँख नाक मुंह माने
तन संबंधी सुख दुख जाको, करत लाभ नहिं हानि ....टेक
रोग शोक नहिं व्याधि जाकों, हर्ष विषाद न आन
अन्तरात्मा भाव धार कर, जो पावे निर्वाण ....टेक

तर्ज - जोत से जोत जगाते चलो..........

आतम की जोत जगाते चलो, ज्ञान का स्रोत बहाते चलो
सत्गुरू दयालु जगाते तुम्हें, मोहे की निदिंया भगाते चलो ....टेक
काल अनन्ता सोते बीता, अब तो आँख उघारो
कर्म लुटेरे पड़े है पीछे, टुक तो होश संभारो
ज्ञान सुधन को बचाते चलो ......टेक
कठिन कठिन कर नरभव पायो इसको सफल बनाओ
अवसर ये तो मिला सुनहरा मत न व्यर्थ गंवाओ
भक्ति में मन को लगाते चलो ......टेक
सत्य अहिंसा का कर पालन शान्ति सुधा बरसाओ
पर धन पर बनिता को त्यागो तृष्णा वेग घटाओ
विषयों से चित्त हटाते चला......टेक

तर्ज - आज हम जिनराज......

आज हम जिनराज तुम्हारी भक्ति रचायें ......टेक
वीतराग सर्वज्ञ प्रभों हो, नासा दृष्टि लगायें
अद्भुत शान्तिमयी छवि तेरी, सब के मन को भायें ......टेक
यही भावना है अब मेरी सम्यग्दर्शन पायें
ज्ञान चरित्र उन्नत कर अपना, जीवन सफल बनायें ......टेक

तर्ज - हमको भी बुलवा लो स्वामी......

हमको भी बुलवा लो स्वामी, सिद्धों के दरबार में ....टेक
जीवादिक सातों तत्वों की सच्ची श्रद्धा हो जाये
भेदज्ञान से हमको भी प्रभु, सम्यग्दर्शन हो जाये
मिथ्यातम के कारण स्वामी, हम डूबे संसार में............टेक
आत्म द्रव्य का ज्ञान करें हम, निज स्वभाव में आ जायें
रत्नत्रय की नाव बैठकर मोक्ष भवन को पा जायें
पर्यायों की चकाचौंध से बहते हैं मझधार में ....टेक

तर्ज - आये-आये रे जिनंदा...........

आये–आये रे जिनंदा, आये रे जिनंदा, तोरी शरण में आये
कैसे पावें ......हो कैसे पावें, तुम्हारे गुण गावें रे
मोह में मारे–मारे, भव–भव में गोते खाये
तोरी शरण में आये, हो ......आये–आये रे जिनंदा ....टेक
जग झूठे से प्रीत लगाई, पाप किये मन माने
सद्गुरू वाणी कभी न मानी, लागे भ्रम रोग सुहाने ....टेक
जन्म–मरण रहित पद पावन, तुमसा नाथ सुहाया
वो सौभाग्य मिले अब सत्वर, मोक्ष महल मन भाया ....टेक

तर्ज - गगन मण्डल में ....

गगन मण्डल में उड़ जाऊँ
तीन लोक के तीर्थ क्षेत्र सब वंदन कर आऊँ ....टेक
पंच महातीर्थों की यात्रा करके हर्षाऊँ
सिद्धक्षेत्र अतिशय क्षेत्रों पर भी में हो आऊँ ....टेक
तीन लोक की तीर्थ वंदना कर निज घर आऊँ
शुद्धातम से कर प्रतीत मैं समकित उपजाऊँ ....टेक
फिर रत्नात्रय धारण करके जिन मुनि बन जाऊँ
निज स्वभाव साधन से स्वामी शिवपद प्रगटाऊँ ....टेक

जंगल में मुनिराज अहो, मंगल स्वरूप निज ध्यावें
बैठ समीप सन्त चरणों में, पशु भी बैर भुलावें ......टेक

तर्ज - जहाँ डाल-डाल पर...........सिकन्द-ए-आजम

हे परम दिगम्बर मुद्रा जिनकी वन–वन करे बसेरा
मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा
शाश्वत सुख मय चैतन्य सदन में रहता जिनका डेरा
मै उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा ....टेक
जहाँ क्षमा मार्दव आर्जव सत् शुचिता की सौरभ महके
संयम तप त्याग अकिंचन स्वर परिणति में प्रतिपल चहके
है ब्रम्हचर्य की गरिमा से आराध्य बने जो मेरा ....टेक
अंतर बाहर द्वादश तप से जो कर्म कालिमा दहते
उपसर्ग परीषह कृत बाधा जो साम्यभाव से सहते
जो शुद्ध अतीन्द्रिय आनंद रस का लेते स्वाद घनेरा ....टेक
जो दर्शन ज्ञान चारित्र वीर्य तप आचारों के धारी
जो मन–वच–तन का आलम्बन तज निज चैतन्य बिहारी
शाश्वत सुख दर्शक वचन किरण से करते सदा सबेरा ....टेक
चैतन्यराज की अनुपम निधियाँ जिनमें करे बसेरा ....

तर्ज - वीतराग निग्रन्थ रहे........

वीतराग निर्ग्रन्थ रहें जो निज में करें बसेरा, .में उन गरूओं का चेरा
हो वंदन उनको मेरा, सविनय अभिनंदन मेरा ....टेक
मन–वच–तन का आलंबन तज, जो स्वभाव में रमते
किंचित नहीं रखें परिग्रह, निष्पृह जीवन आचरते
निज स्वरूप में तन्मय रहते, भोगें सुख बहुतेरा ....टेक
हित मित प्रिय वचनों से जो, शुद्धातम स्वरूप बताते
जिनकी दिव्य देशना सुनकर पतित पार हो जाते
जिनकी चरण शरण में मिटता, जनम मरण को फेरा ....टेक

तर्ज - धर्म बिन कोई नहीं अपना.........

धर्म बिन कोई नहीं अपना..........
सुत सम्पति धन थिर नहीं जग में जैसे रैन सपना ....टेक
आगे किया सो पाया भाई याहीं है निरना
अब जो करेगा सो पावेगा तातें धर्म करना ....टेक
नृप के घर सारी सामग्री ताके ज्वर तपना
अरू दरिद्री के हूँ ज्वर है पाप उदय थपना ....टेक

तर्ज - लहर-लहर लहराये..........

लहर–लहर लहराये, केशरिया झण्डा जिनमत का
केशरिया झण्डा जिनमत का हो जी हो जी ....टेक
यह सबका मन हरषाये, केशरिया झण्डा जिनमत का ....टेक
फरफर फर फर करता झण्डा गगन शिखर पर डोले –2
स्वास्तिक का यह चिन्ह अनूठा भेद हृदय के खोले –2
यह ज्ञान की ज्योति जलाये, केशरिया झण्डा ....टेक
इसकी शीतल छाया में हम पढ़े रतन जिनवाणी –2
सत्य अहिंसा प्रेम मार्ग पर बने देश लासानी –2
यह सत्पथ पर पहुँचाये केशरिया झण्डा ....टेक

तर्ज - भावना रथ पर ......

भावना रथ पर चढ़ जाऊँ[2]
मध्य लोक तेरह द्वीपों तक दर्शन कर आऊँ ....टेक
स्वर्ण थाल में वसु विधि प्रासुक द्रव्य सजा लाऊँ
चार शतक अट्ठावन जिनग्रह, पूजन कर आऊँ ......टेक
पंच मेरू गजदंत वृक्ष वक्षारों पर जाऊँ
गिरि विजयार्ध कुलाचल वन्दूँ नाचूँ हर्षाऊँ ......टेक
इष्वाकारों मांनुषोत्तर के जिनग्रह ध्याऊँ
नंदीश्वर कुण्डल व रूचक गिरि, पूजन कर आऊँ ......टेक
जिन पूजन का सर्वोत्तम फल भेद–ज्ञान लाऊँ
शुद्धातम का अनुभव करके सिद्ध स्व–पद पाऊँ ......टेक

तर्ज - बिंदिया चमकेगी.....

जिनागम पाया है तत्व भरमाया है, अब कुगुरू कुदेव न रूचि पाये
कि जो नर बहकेगा, भव भव भटकेगा, ये दाव लगा न चला जाये.......टेक
निज ना जाना हुआ तू बेगाना गजब तेरा हाल हुआ
पुण्य पाप परभाव ही भाये स्व स्वभाव न भाये
ज्ञानी गुरू पाने से, मूढ़ता जाने से, तेरे भव सुधरे तो सुधर जाये ....टेक
मेरा आतम गुणों का भरा सागर जब अनुभव में आयेगा
रत्नत्रय का सेहरा बाधें शिव रमणी वन लूंगा
सारा जग हरषेगा, अमृत बरसेगा, आंनद झरे तो झर जाये.......टेक

तर्ज - धन्य धन्य जिनवाणी ....

धन्य–धन्य जिनवाणी माता, शरण तुम्हारी आऐ
परमागम का मन्थन करके शिवपुर पथ पर धाये
माता दर्शन तेरा रे भविक को आंनद देता है हमारी नैया खेता है......टेक
तेरे अंचल में चेतन की दिव्य चेतना पाते
तेरी अमृत लोरी क्या है अनुभव की बरसातें
माता तेरी वर्षा से निजानन्द झरना झरता हैं, अनुपमानन्द उछलता है ......टेक
नव तत्वों में छिपी हुई जो ज्योंति उसे बतलाती
चिदानन्द ध्रुव ज्ञायक घन का दर्शन सदा कराती
माता तेरे दर्शन से निजातम दर्शन होता है, सम्यग्दर्शन होता है ......टेक

सुन लो चेतन भैया शुद्धात्मा जान लो
शुद्धात्मा को जान लो निज आत्मा को जान लों ....टेक

जिनवाणी जग मैया जनम दुःख भेंट दो
जनम दुःख भेंट दो मरण दुःख भेंट दो ....टेक

तर्ज - नरतन को पाकर.......

नरतन को पाकर के जीवन को विमल कर लो
शिवपुर के पथिक बनों नर जन्म सफल करलो ....टेक
न उम्र की सीमा हो न जन्म का हो बंधन
निज में निज अनुभव कर बन जाओं स्वयं भगवन
निज के वैभव से तुम निज कोही धनिक करलो ....टेक
पर द्रव्य पर भावों को, तू निज का मान रहा
निज को तू भूल रहा पर को निज मान रहा
अंतर में दृष्टि बदल अब भेदज्ञान करलो ....टेक

तर्ज - बचपन की मुहब्बत को...........

भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना ....टेक
संभव है झंझटो में मैं तुमको भूल जाऊँ
पर नाथ कहीं तुम भी मुझको न भुला देना ....टेक
तेरे दर का मैं पुजारी आया मैं शरण तेरी
मझधार फंसी नैया चरणों में जगह देना ....टेक

तर्ज - ज्ञानी के सहारे.............

ज्ञानी के सहारे हो अनुभूति में आये हो
मेरे ज्ञायक प्रभुवर तुम बस एक सहारे हो ....टेक
ज्ञानी ज्ञायक में ही ज्ञायक होकर रहते
ज्ञेयों से प्रभावित नहीं नित ज्ञान रूप रहते
ज्ञायक–ज्ञायक–ज्ञायक नित ज्ञायक ही रहते ......टेक
ज्ञेयों से ज्ञान नहीं ज्ञेयों में ज्ञान नहीं
है ज्ञेय ज्ञेय में ही ज्ञायक में ज्ञेय नहीं
है भिन्न भिन्न सत्ता, नहीं कोई किसी में है ....टेक
मुझ ज्ञान सिन्धु में रे, बस ज्ञान ही ज्ञान भरा
मेरी ज्ञान तंरगो में ज्ञायक साम्राज्य मेरा
आनंद आनंद आनंद आनंद ही जीवन है ....टेक

तर्ज - इक प्यार का नगमा है.......

संसार तो सपना है सपने की कहानी है
मौत का कुछ ठिकाना नहीं पल पल में रवानी है ....टेक
जो समय गुजर जाये वह वापस न आये
जीवन की हर घड़ियाँ संदेश ये दे जाये
हर श्वास घटे जीवन हर श्वास विरानी है ....टेक
जब काल बदरिया के बादल सर पर छाए
फिर लाख जतन कर लो कोई न बचा पाये
पितु मात सुता भाई सबकी ये कहानी है ....टेक
तू अपना पुजारी बन कहती जिनवाणी है..........

तर्ज - सुन साहिबा सुन ....राम तेरी गंगा मेली

सुन भैया सुन बात ये सुन, क्यों नहीं जाने तू आत्मा के गुण ....टेक
जीवन सुनहरा तुझे मिलता रहा हर जनम
खुद को ही जाना नहीं करता रहा सब करम
गुरू ने बताया है समझ न पाया है, इसीलिए भव—भव में भटकाया है
गुरू सिखलाये तुझे आत्मा धुन ....टेक
खुशियां ये सारी तुझे मिल जाये उसकी शरण
भटकी हुई आत्मा छूटे जनम और मरण
जिसने पुकारा है उसको ही तारा है, डूबी हुई ने किश्ती पाया ये किनारा है
इसीलिए कहते है गुरूवर ये सुन ....टेक

तर्ज - सौ बार जन्म लेगे ....उस्तादो के उस्ताद

अविनाशी आतम महल चैतन्य प्रकाशमयी
वहां शाश्वत वास रहे चैतन्य विलासमयी ....टेक
आनंद—आनंद उछले सर्वांग प्रदेशों में
अद्भुत तृप्ति मिलती अपने ही अंतर में
अद्भुत आतम वैभव दीखे चैतन्यमयी ....टेक
करना कुछ कभी नहीं परिपूर्ण स्वयं में ही
उपजे विनशे परिणति स्वयमेव स्वयं में ही
ध्रुव ज्ञायक तो ध्रुव ही रहता प्रभु ज्ञायक हो ....टेक
काषायिक भाव मिटे वैराग्य सहज प्रगटे
भव—भव के बंधन की आपद क्षण में विघटे
ज्ञाता—ज्ञाता ही रहे नित परमानंदमयी ....टेक

तर्ज - तेरे काले काले बाल..........

मैं आया तेरे द्वार मुझे अपना बना ले
ये सुन ले मेरी पुकार— 2 मेरी बिगड़ी बना दे ....टेक
लख चौरासी में फिरते कहीं चैन न पाया है
जग की माया से बचकर शरण तेरी आया है
अब तू ही बचा भगवन थोड़ी सी दया कर दे ....टेक
अंजन को तारा है तुमने सोमा का उवारा है
दुखियारे अनुभव का तू ही रखवारा है
लाखों को उवारा है मेरा उद्धारा कर दे ....टेक

तर्ज - जिया कब तक उलझेगा............

जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में
कितने भव बीत चुके, संकल्प विकल्पों में ....टेक
उड़—उड़ कर यह चेतन, गति—गति में जाता है
रोगों में लिप्त सदा, भव—भव दुख पाता है
क्षण भर को भी न कभी निज आतम ध्याता है
निज तो न सुहाता है पर ही मन भाता है
यह जीवन बीत रहा झूठे संकल्पों में ....टेक
नर रे नर रे नर रे तू चेत अरे नरे रे
क्यों मूढ़ विमूढ़ बना, कैसा पागल खर रे
अन्तर्मुख हो जा तू, निज में निज रस भर रे
पर अब लंबन तज रे निज का आश्रय कर रे
पर परणति विमुख हुआ तो सुख पल अल्पों में .....टेक
तू कौन कहाँ का है अरु क्या है नाम अरे
आया है किस घर से जाना किस गाँव अरे
सोचा न कभी तूने दो क्षण की ठांव अरे
यह तन तो पुदगल है दो दिन की छाँव अरे
तू चेतन द्रव्य सबल ले सुख अविकल्पों में ....टेक
यदि अवसर चूका तो भव—भव पछतायेगा
फिर काल अंनत अरे, दुख का घन छायेगा
यह नरभव कठिन महा, किस गति में जायेगा
नरभव भी पाया तो जिन श्रुत नहीं पायेगा
अनगिनती जन्मों में अनगिनती कल्पों में ....टेक

चरणों में आये है हमें अपनी शरण ले लो
भटके है राहो में हमें ज्ञान किरण दे दो .....टेक

निज बोध हुआ जब से प्रभु शांत हुआ मेरा मन
पल—पल में करता हूँ अपने में प्रभु दर्शन

तर्ज - भक्तों के आगन को............

भक्तों के आंगन को तुम खुशियों से भर दो
सपने जो मन में है क्षण में पूरे कर दो ....टेक
हे वीतराग जिनवर कुछ लेते न देते
जो भक्ति जिन जैसी वैसी शक्ति देते
बन जाऊँ तुम जैसा हे नाथ यही वर दो ....टेक
में भक्त तुम्हारा हूँ किसी और पे क्यों जाऊँ
इसी दर का पुजारी हूँ किसी ओर से क्यों मागूँ
इस आने–जाने (जन्ममरण) की सब पीड़ाऐं हर लो ....टेक
ना पद की तमन्ना है ना चाहिए धन कंचन
मन ऊब गया इनसे वैरागी है ये मन
हम सबकी झोली में अक्षय खुशियाँ भर दो ....टेक

तर्ज - माता तू दया करके ....

माता तू दया करके कर्मो से छुड़ा देना
इतनी सी विनय तुमसे, चरणों में जगह देना .....टेक
मां आज में भटका हूँ माया के अंधेरे में
कोई नहीं मेरा है इस कर्म के रेले में
नहीं कोई यहाँ मेरा तुम धीर बंधा देना ....टेक
जीवन के चौराहे पर मैं सोच रहा कब से
जाऊँ तो कहाँ जाऊँ ये पूछ रहा तुमसे
पथ भूल गया हूँ मैं तुम राह दिखा देना .....टेक
लाखों को उबारा है मुझको भी उबारो तुम
मझधार मेरी नैया उसे पार लगाओं तुम
मझधार में अटका हूँ भवपार लगा देना .....टेक

तर्ज - इक प्यार का नगमा है ....

सीमंधर संदेशा है विदेह क्षेत्र से आया है
कुन्द–2 आचार्य कहा, यह आत्मा अकेला है ....टेक
शुद्धनय की प्रधानता से, ज्ञानामृत बरसाता
एकत्व विभक्त हूँ में समय सार है दर्शाता
नव तत्वों के मेले में चिन्मात्र अकेला है ....टेक
हूँ ज्ञानमयी ज्ञायक निर्भेद सदा रहता
नहि ज्ञेय ज्ञान में भेद, यह प्रवचन सार कहता
शुद्धो पयोग सुखमय शिव मार्ग अकेला है ....टेक

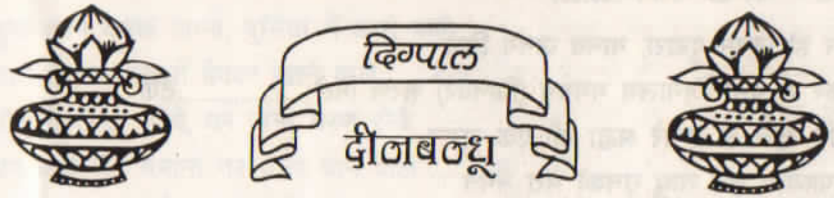

तर्ज - आयें हों मेरी जिंदगी में ....राजा हिन्दुस्तानी

आये है तेरे दर पे हम भक्त–भक्त बनके –2
मुझको भी दर्श देना........ तेरे द्वार आये चलके ....टेक
ज्यों अंजली का पानी ढलती है जिन्दगानी
मुश्किल है हाथ लगना ऐसी घड़ी सुहानी
पापों से हम बचेंगे सन्मार्ग को पकड़ के ....टेक
सोमा सती ने ध्याया हार नाग का बनाया
श्रीपाल ने की भक्ति उसको भी तुमने तारा
सौभाग्य से है अनुभव आया है द्वार चलके ....टेक

तर्ज - सज-धज के जिस दिन मौत की ....

सज–धज के जिस दिन मौत की शहजादी आयेगी
ना सोना काम आयेगा ना चाँदी आयेगी .....टेक
छोटा सा तू कितने बड़े अरमान हैं तेरे
मिट्टी का तू सोने के सब सामान हैं तेरे
मिट्टी की काया मिट्टी में जिस दिन समायेगी ....टेक
पर छोड़ के पंछी तू पिंजरा छोड़ के उड़ जा
माया महल के सारे बंधन तोड़ के उड़ जा
धड़कन में जिस दिन मौत तेरी गुनगुनाऐगी ....टेक

तर्ज - चेतन स्वरूप तेरा...........

चेतन स्वरूप तेरा तूने जड़ बना लिया
इस मोह अंधकार मे चेतन छिपा लिया ....टेक
हिंसा में धर्म मान तू मिथ्यात्व में पगा
अपनी सुधा को छोड़ तूने जहर पी लिया ....टेक
सम्यक्त्व ज्ञान चारित्र समता सम्हाले
वीरा तुम्हारे नाम को दिल में जमा लिया .....टेक

तर्ज – गर हो जनम ....

गर हो जनम दुबारा, मानव जनम मिले
फिर से यही जिनालय भगवन (जिनवर) शरण मिले ....टेक
मुनि कुन्द हों हमारे श्रद्धा की एक सुमन
उपाध्याय सर्व साधु उनकों मेंरा नमन
उपकार जिनवाणी का भूलें नहीं जनम ....टेक
मंदिर में नित्य जाऊँ, करूँ शास्त्र को मनन
भेदज्ञान बल के द्वारा खोजूँ में आतमन
हो एक लक्ष्य अपना शिवपुर में हो गमन ....टेक

तर्ज – जिनवर के ये वचन.....

जिनवर के ये वचन हैं चेतो रे ! चेत भाई
इस पुण्य की कमाई क्यों पाप में गंवाई ....टेक
देखों ये जग में भाई पर कौन है सहाई
इस पुण्य की कमाई का क्या भरोसा भाई ....टेक

तर्ज – मुझे इश्क है तुम्हीं.............

भगवन समय हो ऐसा जब प्राण तन से निकले
नवकार मंत्र जपते मम प्राण तन से निकले ....टेक
ये क्रोध मान माया अरू लोभ जो बताया
चारों कषाय छूटे जब प्राण तन से निकले ....टेक
नहीं बैर हो किसी से समभाव हो सभी से
शांति क्षमा हो मन में जब प्राण तन से निकले ....टेक
होवे मरण समाधि व्यापे न मोह व्याधि
घट में हो ध्यान तेरा जब प्राण तन से निकले ....टेक
वस्तु स्वरूप निरखूं स्व आत्म गुण निहारूँ
निज में हो ध्यान निज का जब प्राण तन से निकले ......टेक
भक्ति में रत हूँ तेरी शुद्ध आत्मा हो मेरी
प्रभु नाम भजते–भजते माम प्राण तन से निकले ....टेक

करता हूँ तुम्हारी पूजन स्वीकार करों वीर
मझधार में हूँ अटका बेड़ा पार करों वीर, हे वीर प्रभु जी हे वीर प्रभु जी...टेक

तर्ज – कुछ काम करके...

कुछ काम करके जाना, दुनियां में आने वाले
जाते है रोज लाखों बेकार खाने वाले ....टेक
चौरासी लाख खोये, धर जन्म मरण रोये
अब व्यर्थ मत गमाना नर जन्म पाने वाले ....टेक
हिंसा असत्य चोरी, कर करके द्रव्य जोरी
क्या साथ ले चलेगा सब छोड़ जाने वाले ....टेक

तर्ज – हमनें जफा न सीखी .....जिन्दगी

प्रभु वीर की जयन्ती, आओ मनायें भाई
तिथि चैत की सुतेरस, मंगल घड़ी है आई ....टेक
कुण्डलपुरी के राजा राय सिद्धार्थ के घर
त्रिशला के कूख से थी जिसने झलक दिखाई ....टेक
सद्धर्म है अहिंसा, प्रभु वीर ने बताया
परमात्म पद के पाने की युक्ति थी सुझाई ....टेक

तर्ज – वो दिल काहा से लाऊँ........

कैसे तुम्हें रिझाऊँ हे नाथ यह बता दो
वस्तु क्या भेंट लाऊँ, यह तो जरा बता दो ....टेक
यह जानता हूँ तुमको कुछ भी नहीं इच्छा
भावों की होवे शुद्धि वह मार्ग तो सुझा दो ....टेक
नहीं चाहते हो तुम तो नैवेध या मिठाई
चरू ले चरण चढ़ाऊँ, मेरी क्षुधा मिटा दो ....टेक
दरकार है न तुमकों दीपक की रोशनी यह
किया मोह नाश तुमने मेरा मोहतम भगा दो ....टेक
है काम वासना के कारण यह पुष्प सारे
किया नष्ट काम तुमने मेरे काम को नशा दो ....टेक
चरणों में धूप खेके करू प्रार्थना मैं इतनी
जलाऐ है कर्म तुमने मेरे कर्म भी जला दो...............टेक
अक्षत उदक सुचन्दन, फल की न तुमको इच्छा
पूजन का कल यह पाऊँ शिव फल मुझे दिलादो .....टेक

तर्ज – मिलती है जिन्दगी में.......

दिखता है ज्ञान चक्षु में आगम कभी–कभी
मिलता है गुरुजनों का समागम कभी–कभी ....टेक
मिलती है जिसके दौर से मुक्ति की मंजिलें
होता है ऐसे भावों का समागम कभी कभी ....टेक
जिनवाणी और सुकुल मिले किस्मत की बात है
होता है उनका पुण्य से संगम कभी–कभी ....टेक
मुक्ति वधू को वरते है जाकर जो मोक्ष में
जाते है शिवपुरी को वो बा क कभी–कभी ....टेक

तर्ज – परदा पड़ा..........

परदा पड़ा है मोह का आता नजर नहीं
चेतन तेरा स्वरूप है तुझको खबर नहीं ....टेक
चारों गति में मारा फिरे ख्वार रात दिन
आपे में अपने आपको लखता मगर नहीं ....टेक
चाहे तो कर्म काट तू परमात्मा बने
अफसोस कि इसपे भी तू करता नजर नहीं ....टेक
तज मन विकार धारले अनुभव सचेत हो
निज पर विचार देख जगत तेरा सुघर नहीं ....टेक

तर्ज – करती हूँ तुम्हारी पूजा.......

समकित से कब निज आतम का श्रृंगार करोगे
संयम की तरणी ले कब भव जल पार करोगे
सुन चेतन ज्ञानी, क्यों बात न मानी ....टेक
आया कहाँ से जाना तुझको कितनी दूर है
सोचा नहीं विषयों में तू क्यों ऐसा चूर है
जप तप बिन नर भव की घड़ियाँ बेकार करोगे.......टेक
लगते है तुझको भोग के साधन जो सुहाने
लुटवाता है इन गतियों में सदगुण के खजाने
ऐसी गलती जीवन में कितनी बार करोगे ....टेक
कल्याण यदि चाहो तो आत्मा को जान लो
अपने का और पराये का अन्तर पहचान लो
जड़ कर्मों को बोलो कब तक बिदा करोगे ....टेक

तर्ज – आचार्य कुंद–कुंद.....

आचार्य कुंद–कुंद जो भारत में न आते
अध्यात्म समय सार कहों, कौन सुनाते ....टेक
रचकर के कौन देता आत्म ख्याति समय सार
ऐसे अनेक ग्रंथ भेद ज्ञान के भण्डार
उनके बिना हृदय मे शान्ती कौन दिलाते ....टेक
है जगत के संबंध कोई पार न पाया
है सब अनित्य, नित्य नहीं एक भी पाया
होता ना सगा आप जिसे अपना बनाते ....टेक

तर्ज – चरणों में आ पड़ा........

चरणों में आ पड़ा हूँ हे द्वादशांग वाणी
मस्तक झुका रहा हूँ हे द्वादशांग वाणी ....टेक
मिथ्यात्व को नशाया निज तत्व को बताया
आपा–पराया भासा हो भानु के समानी ....टेक
षट् द्रव्य को बताया स्याद्वाद को जताया
भव फन्द से छुड़ाया सच्ची जिनेन्द्र वाणी ....टेक
दे ज्ञान मुझको माता इस जग से तोड़ूँ नाता
होवे सुदर्शन साता नहिं जग में तेरी सानी ....टेक

तर्ज – हमने तो धर्म पाया......

हमने तो धर्म पाया, अब तुम भी धर्म पाओ
विज्ञानमय है आतम, अब तुम भी जान जाओ ....टेक
नहिं जग में कोई अपना कहते है सर्वज्ञानी
बिन आत्मा को जाने तुम क्यों बने अज्ञानी
अब भेदज्ञान पाओ, निज आत्मा ही ध्यावो ....टेक
नहिं धर्मतीर्थ में हैं धर्मी तो आत्मा है
बाहर जो धर्म जाने, बहिरात्मा कहा है
आतम ही धर्म मय है, परमात्मा को ध्यावो ....टेक
ध्रुव आत्मको ध्याकर, दुख द्वन्द सब मिटाओ
तीर्थंकरों ने ध्याया, अब उस ही पथ पे आओ
बाहर कहीं सुख है, ध्रुव धाम में ही आओ ....टेक

तर्ज – किसको विपद सुनाऊँ....

किसको विपद सुनाऊँ हे नाथ तू बता दे
तेरे सिवा न कोई जो कष्ट को मिटा दे ....टेक
धन ज्ञान अपना खोकर परेशान हो रहा हूं
जामन मरण के दुख से हे नाथ तू बचा दे ....टेक

तर्ज – मुझको हुई न खबर.......दिल तो पागल है

तत्वों का सुन्दर नगर, पाया आतम हितकर
ज्ञान की पहली नजर आ गई ² कुछ पा गई पा गई ....टेक
श्रद्धा भी बदली है, उस ध्यान और चिन्तन में
पर्यायें निर्मल बन बैठी, ध्रुव के दर्शन में
अब भगता है भव का डर, पाया आतम हितकर ....टेक
है गुण रत्नों का पिटारा, है पर्यायों से पार
कौतुहल से भी देखो तो हो जाए उद्धार
मिली सिद्धों से मेरी डगर, पाया आतम हितकर ....टेक

> मेरे अन्तर में ही मेरा भगवान है ....टेक
> वो ही महावीर तथा वो ही वर्धमान है

तर्ज - मुझे तेरी मुहब्बत का.......

तेरे दरबार में स्वामी सहारा लेने आया हूँ
तेरे दर्शन को पाने की तमन्ना लेके आया हूँ ....टेक
हृदय में भक्ति दिल में प्रेम और नयनों में तुम मेरे
जरा तो देखले आकर तेरे दर्शन का प्यासा हूँ टेक
आया हू द्वार पर तेरे बनालो अपने सम मुझको
दया कर तारो अनुभव को शरण तेरी में आया हूँ ....टेक

तर्ज - तेरे कूचे मे अरमानों की दुनियां.......

समझ उठ चेत रे चेतन भरोसा है नहीं पल का
खड़ी मुख फाड़कर मृत्यु, भरोसा है नहीं पल का ....टेक
बालपन खेल में खोया जवानी नींद भर सोया
बुढ़ापे में बढ़ी तृष्णा हुआ नहीं बोझ भी हल्का ....टेक
सिफारिश भी नहीं चलती किसी की मौत के आगे
राम रावण बली हारे पता जिनका न था बल का ....टेक
विजय गर मृत्यु पर चाहो करो निज आत्म का चिंतन
ज्ञान का दीप जागेगा दिखेगा मार्ग शिवपुर का ....टेक

तर्ज - अगर महावीर के चरणों मे........

अगर महावीर के चरणों में मेरा ध्यान हो जाता
तो इस संसार सागर से मेरा उद्धार हो जाता ....टेक
रोशनी ज्ञान की खिलती दिवाली दिल में हो जाती
हृदय मंदिर में भगवन का तुझे दीदार हो जाता ....टेक
जमी पर बिस्तरा होगा, व चादर आसमां होगी
मोक्ष गद्दी पर फिर प्यारे, तेरा घर बार हो जाता ....टेक
चढ़ाते देवता तेरे चरन की धूल मस्तक पर
जमाना पूजता सारा, गले का हार हो जाता ....टेक

तर्ज - तेरे कदमों मे सर अपना ....मुगल-ए-आजम

तेरे चरणों में सर अपना झुकाकर हम भी देखेंगे
अपने दिल में तेरा मंदिर, बनवा कर हम भी देखेंगे
अजी हां हम भी देखेंगे
घड़ी भर तो तेरे दरबार, आकर हम भी देखेंगे
अजी हां हम भी देखेंगे ....टेक
कर्म दल चूर तो स्वामी तेरी भक्ति से होते है
जो कर्मों को खपाते है, वही मुक्ति को पाते हैं –2
भक्ति सागर में जीवन को, बहाकर हम भी देखेंगे ....टेक
पापों में फसाने वालों का, बस इतना ही अकसाना
कि भव भव में भटकना, जन्म लेना और मर जाना
अब तो पापों से दामन को, बचाकर हम भी देखेंगे ....टेक

तर्ज - न जाने क्यों तेरा मिलकर.......

भाव वैराग दर्शावे जो मूरत हो तो ऐसी हो
न रागी हो न द्वेषी हो, जो मूरत हो तो ऐसी हो ....टेक
जिसे देखें से पैदा दिल में हो अनुभव निजातम का
स्वपर का भेद दरशावे, जो मूरत हो तो ऐसी हो ....टेक
न वस्त्र हों न शस्त्र हों नहीं हो संग में नारी
न रूपया हो न वाहन हो, जा मूरत हो तो ऐसी हो ....टेक
दिगम्बर रूप पद्मासन विगत दूषन निराभूषण
यही अरहंत की मूरत, जो मूरत हो तो ऐसी हो ....टेक

तर्ज - जगत में आत्म पावन.....

जगत में आत्म पावन को समझना काम भारी है
वही ज्ञानी है जिसने आत्म निधि अपनी सम्हारी है ....टेक
उन्हें हर वक्त भेद–ज्ञान की परम रचना सुहाती है
कि जिससे आप में आपी घटा उठती करारी है ....टेक
करोड़ो भाव दिन पर दिन जो आते है चले जाते
जो है इक शुद्ध उपयोगी उसी की शान प्यारी है ....टेक
न भव सागर से हो मतलब न कुछ करना न कुछ धरना
करो अनुभव सु आतम का यही शिक्षा सुखारी है ....टेक

तर्ज - तुम्हारे दर्श बिन स्वामी.......

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी मुझे नहीं चैन पड़ती है
छवि वैरागमय तेरी, मेरी आंखों में फिरती है ....टेक
नहीं कर्मो का डर हमको, कि जब लग ध्यान चरणन में
तेरे दर्शन से सुनते है, करम रेखा बदलती है ....टेक
मिले गर स्वर्ग की सम्पत्ति अचम्भा कौन सा इसमें
तुम्हें जो नयन भर देखे, गति दुरगति की टलती है ....टेक
हजारों मूर्तियां हमने बहुत सी अन्य मत देखी
शान्ति मूरत तुम्हारी सी ,नहीं नजरो में चढ़ती है ....टेक
जगत सिरताज हो जिनराज सेवक को दरश दीजे
तुम्हारा क्या बिगड़ता है, मेरी बिगड़ी सुधरती है ....टेक

तर्ज - सजन रे झूठ मत बोलो........

सजन अखियाँ जरा खोलो, अगर शिवपुर को जाना है
चौरासी लाख के चक्कर, अगर तुमको न खाना है ......टेक
अनादि काल से प्यारे, चतुरगति में भटकता रे
भरे जो कष्ट हाँ भारी, नहीं उनका ठिकाना है ......टेक
यह दुनियां एक मेला है, यह दो दिन का झमेला है
तुझे जाना अकेला है, सभी जाने जमाना है ......टेक

तर्ज - परम उपकारी जिनवाणी........

परम उपकारी जिनवाणी, मैं ज्ञायक हूँ बतायो है
हुआ निर्भार अंतर में, परम आंनद छायों है ....टेक
हुआ हूँ तृप्त निज में ही, न बाहर कुछ सुहाता है
उलझ कर दुर्विकल्पों में, बीज दुख के रहा बोता ....टेक
नहीं अब लोक की चिंता, नहीं कर्मो का भय किंचित
धर्म माता मुझे आनंदमय, अमृत पिलाया है ....टेक

तर्ज - अहो भगवंत का दर्शन.........

अहो भगवंत का दर्शन, परम आनंद दाता है
द्रव्य दृष्टि से जो देखे, प्रभु निज में ही पाता है ....टेक
देखकर स्वयं की प्रभुता, अक्षय चैतन्य मय वैभव
सहज ही तृप्ति होता है, मोह मिथ्या पलाता है...........टेक
सहज आत्मानुभव होवे, मुक्ति मारग प्रकट होता
विशुद्धि त्यों–त्यों बढ़ती है, ज्यों–ज्यों ज्ञायक में रमता है ....टेक

तर्ज - करो कल्याण आतम का..............

करो कल्याण आतम का, भरोसा है न इक पल का ......टेक
ये काया काँच की शीशी, फूल मत देखकर इसको
छिनक में फूट जावेगी कि जैसे बुद–बुदा जल का ......टेक
यह धन–दौलत मकां मंदिर जो तू अपना बताता है
कभी हरि गिज नहीं तेरे छोड़ जंजाल सब जग का ....टेक
स्वजन सुत मात पितु दारा, सबै परिवार अरू ब्रदर
खड़े सब देखते होंगे, कूंच होगा जभी दम का ....टेक

तर्ज - है मेरा दिल तो आवारा........

है चमका भाग्य का तारा, जो तेरा दर्श पाया है
कर्मों ने है सताया, गति चारों ने रूलाया, बहुत भरमाया, न पथ पाया
जिसे जग चाहता सारा, जो तेरा दर्श पाया है ....टेक
निज पर का भेद है जाना, अपने को अपना माना
तुझ सा ही पद पाना, यही है ठानी
मिले सौभाग्य दिल दारा, जो तेरा दर्श पाया ....टेक .
निधि जो सच्ची पाई, अंतर की मैंने गाई
तजूं न जिनराई, अटल प्रण है
वो आतम ज्ञान उजियारा, जो तेरा दर्श पाया है ....टेक

तर्ज - तिहारे ध्यान की मूरत............पत्थर के सनम

तिहारे ध्यान की मूरत अजब छवि को दिखाती है
विषय की वासना तजकर निजातम लौ लगाती है ....टेक
तेरे दर्शन स हे स्वामी, लखा है रूप मैं मेरा
तजूं कब राग तन धन का, ये सब मेरे विजाती है ....टेक
जगत के देव सब देखें, कोई रागी कोई द्वेषी
किसी के हाथ आयुध है, किसी को नार भाती है ....टेक
मुझे कुछ चाह नहीं जग की, यही है चाह स्वामी जी
जपूं तुम नाम की माला, जो मेरे काम आती है ....टेक

तर्ज - हमें जिनधर्म पर चलना........

हमें जिनधर्म पर चलना सिखाती रोज जिनवाणी
सदा शुभ आचरण करना सिखाती रोज जिनवाणी ......टेक
चौरासी लाख योनि में भटक नर जन्म पाया है
निधि निज भूल नहिं पावे सिखाती रोज जिनवाणी......टेक
ग्रहण करना नहीं करना कि क्या निज क्या पराया है
भेद विज्ञान इसका भी सिखाती रोज जिनवाणी ....टेक
करें जो भव्य मन निर्मल, पठन कर शीघ्र तिर जावे
मार्ग शिवपुर में जाने का दिखाती रोज जिनवाणी ......टेक

मुझे क्या काम दुनिया से मेरा एकआतम प्यारा है

तर्ज - पतित-पावन ....

पतित–पावन तरण तारण मेरी फरियाद सुन लेना
तेरे चरणों में मस्तक है मुझे अपना बना लेना ....टेक
सुना है नाव करते पार तुम पतितों अनाथों की
भवंर बिच है मेरी नैया किनारे से लगा देना ....टेक
ये दुनियां पाप की बस्ती बिछा है जाल स्वारथ का
छुड़ाकर जाल से मुझको पास अपने बुला लेना ....टेक

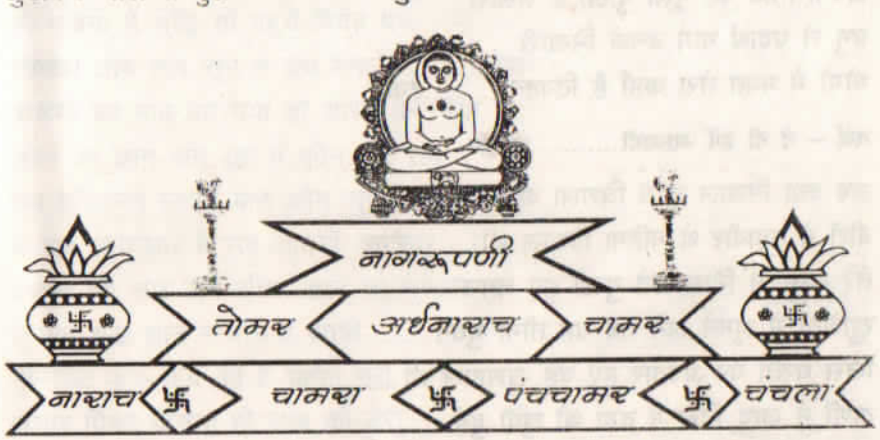

तर्ज – हम लाऐ हैं विदेह........बेवफा सनम

हम लाऐ है विदेह से तत्वों के ज्ञान को
जिनवाणी को रखना अरे भव्यो सम्हाल के ....टेक
देखों ये ग्रथंराज है चिंतामणि जैसा
आचार्य पद्मनंदि ने निज हाथ से लिखा
भगवान आत्मा कह जगाया जहान को ....टेक
दुनियां में जैन धर्म का न्यारा है रास्ता
पुदगल का जीव से नहीं कोई है वास्ता
भूलों नहीं समझो जरा ज्ञायक स्वभाव को ....टेक
जिनवाणी का देखो कभी अपमान न करना
जिनवाणी को जिनदेव से कमती न समझना
जिनवाणी जिन की वाणी है अपमान न करना
अग्नि व जलाशय कभी इसको न दिखाना
अनुभव के रसास्वाद से लिक्खा अरे भव्यो ....टेक

तर्ज – यशोमति मैया से बोले..........संजोग

जिनवर की वाणी से हमने यह जाना
सबसे सरल है निज पद का पाना ....टेक
मोह नींद त्यागो चेतन निज को सम्हालो
मिथ्या अंधेरी रैन दिल से निकालो
आज समझ में आया जग है बेगाना ....टेक
अपनी निधि को भूला दुःखी है संसारी
प्रभु से पदार्थ मांगे बनके भिखारी
भोगों में भक्त तेरा कहाँ है ठिकाना ....टेक

तर्ज – दे दी हमें आजादी..........जागृति

अब क्या मिसाल दूं में त्रिशला के लाल की
वीरों में महावीर थे महिमा विशाल थी ....टेक
तेरे जन्म से खिल उठे मुरझे हुए चमन
खुशियों में झूमने लगे तब यह तीनों भुवन
जिस धरती पर अवतार हुए वह खुशहाल थी ....टेक
वाणी में जादू दिल में दया थी छुपी हुई
रहती थी जिनके कदमों में दुनियां झुकी हुई
त्रैलोक के सरताज की दीन दयाल की ....टेक

तर्ज – जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा..........राजमहल

प्रभु की शरण में तुमको आना पड़ेगा –2
छोड़ के सारे द्वारे, सुन मेरे प्यारे, तुमको आना पड़ेगा ....टेक
अब तक भुलाया तूने भूल है भारी
प्रभु की लगन क्यों दिल से बिसारी
नेहा प्रभु से, लगाना पड़ेगा –2 ....टेक
कुटुम्ब परिवार सब ही मतलब के नाती
आये बुलावा कोई बनेगा न साथी
मोह का पर्दा तुझको हटाना पड़ेगा –2 ....टेक ।

जिनराई जो आपका सहारा न मिला
प्राणी डूबा वो भव में किनारा न मिला....टेक

तर्ज – आचार्य कुंद–कुंद..........

आचार्य कुंद–कुंद जो भारत में न आते
हम जैसे बुद्धिहीन भी सन्मार्ग न पाते ....टेक
छोटी से अल्पवय में मुनि वेश धारकर
आतम सुधा को पी लिया जिन मार्ग जानकर
अंदर का समयसार जो बाहर में न लाते ....टेक
होता था सहज ज्ञान ध्यान शांति से सुख कर
थी भावना में शुद्धि तो पहुंचे विदेह पर
सीमंधर ओम नाद सुन न ग्रंथ बनाते ....टेक
करूणा का भाव बह गया तो शास्त्र बन गया
अंदर का ज्ञान कह रहा ये कौन कर रहा
सब परिणमन स्वत्रतं बात कौन सुनाते ....टेक
ये ग्रंथ समयसार है सब आगमों का सार
प्रवचन का सार रत्न रचित ज्ञान का भण्डार
हूँ एक शुद्ध ज्ञान मात्र बात बताते ....टेक
मुनिराज कुंद–कुंद को है वंदना मेरी,
संसार विषय वासना हो राख की ढेरी
ज्ञायक निधि की विधि जो न आप बताते ....टेक

तर्ज – चाहे लाख तूफां आये..........

चाहे लाख तूफां आये चाहे आंधियां चल जाये
मुशिकल हो जीना फिर भी पड़े खड़े रहना फिर भी
ध्यान से नहीं जो डिगा हां.......... वो है बाहुबली
आत्मा में मगन ही रहा हां.......... वो है बाहुबली ....टेक
मुक्तिपुरी के सिवा कोई चीज प्यारी नहीं
धरती तो धरती है कोई अधिकारी नहीं
इसी को समझा जिसने, शरीर को माना जिसने
आतम राम से जुदा हां.......... वो है बाहुबली ....टेक
कदम बढ़ गए हैं वहाँ, रास्ता खतम है जहाँ
न आगे कोई रास्ता, शिवपुर से है वास्ता
जगत से नाता तोड़ा, मोक्ष से नाता जोड़ा
भव–भव है जिनका मिटा हां.......... वो है बाहुबली ....टेक

तर्ज– मेरे अपने में तुम्हारा......... लावारिस

मेरी आत्मा में विभावों का क्या काम है
ये है ज्ञान वाला और शुद्धता का धाम है ....टेक
इसकी शक्ति इतनी, कि जिसका नहीं पार है
अनंत शक्तियों से, भरपूर ध्रुव धाम है ....टेक
तन को अपना माना, पर वो तो मल का राम है
तन से भिन्न आतम, परिपूर्ण माला माल है ....टेक
पर न आतम का कर्ता, न पर इसका काम है
अचल ज्ञाता दृष्टा, विमल निष्काम है ....टेक

भरत बाहुबली सम्वाद

तर्ज- हाय-हाय रे जालिम जमाना ....

भरत– झुकाकर मुझको सर, जाओ अपने नगर बल धारी
जिद छोड़ो शरण लो हमारी

बाहुबली– क्यों न भरता ये मन, पाके इतना ये धन, राज भारी
फिर भी क्यों कीनी लड़ने की तैयारी

भरत– एक चक्ररतन मैंने पाया, छहो खण्ड जीतकर आया
तुम झुकाते न सर, चक्र जाता नगर सुन हमारी – जिद छोड़ो

बाहुबली– हम तुम एक पिता के है जाये, राज देकर पिता वन को धाये
पोदनपुर का हमें, अयोध्या का तुम्हें, राज भारी – फिर भी........

भरत– या तो राजी से आ सर झुकाओ, या युद्ध करने को आओ
देखूं तेरा घंमड़, कर दूं मैं खण्ड खण्ड ये विचारी – जिद छोड़ो

बाहुबली– वैसे हो तुम मेरे बड़े भाई, भरत अब न करूँ सेवकाई
लड़ने को तैयार हूँ, तुमसे होशियार हूँ, सुन हमारी –
युद्ध तीन करें बारी–बारी

भरत– युद्ध तीन करें दुखदाई, जल युद्ध–दृष्टि युद्ध भाई
मल्ल युद्ध करें, आओ हम तुम लड़े क्या विचारी
युद्ध तीन करें बारी–बारी ....

बाहुबली– जल युद्ध में तुमको हराया, दृष्टि युद्ध में तुमको झुकाया
हारे मल्ल युद्ध में, ज्ञान जगा न बुद्धि में सोच भारी, – फिर भी ....

भरत– हार तीनो में तुमने दिखाई, चक्र से दूगां मैं यमपुर पठाई
लोटा चक्र रतन, कीना बहुत यतन, सोच भारी, – जिद छोड़ों........

बाहुबली– देखो कर्मो की कैसी है माया, मारने भाई–भाई को आया
माया का मद चढ़ा, मुझसे आकर लड़ा, दुख भारी, –फिर भी ....

भरत– हाय कैसी कुमति हृदय छाई, मेने भाई से की दुश्मनाई
जाऊं अब मैं किधर, लाज आती इधर, दुख भारी
मान खंडित हुआ इन अगाड़ी

बाहुबली– लो राज मेरा तुम सम्हालों, चाहो फेंको या कदमों में डालो
मैं तो वन को चला, होगा अब तो भला, सुन हमारी
वन को जाऊं मैं तज सम्पत्ति सारी

भरत– वन न जाओ अहो भ्रात मेरे, हाय अब मैं पडूं चरण तेरे
माफ मुझको करो, चलके राज करो, सुन हमारी
वन न जाओ चलो घर मंझारी

बाहुबली– वन में जाके मैं मुनिव्रत धरूँगा, फस के घर में न पाप करूँगा,
है वो तारन तरन, रक्खे मेरा परन, आदि स्वामी
वन को जाऊ मैं तज सम्पत्ति सारी
छोड़ राज्य वो वन को सिधारे, वन में जाकर आभूषण उतारे
केश लोचन कीन्हा, वैभव सब तज दीन्हा, मुनिब्रत धारी
वन में कीनी तपस्या है भारी
इतनी घोर तपस्या है कीनीं, सांपो ने भी वांवी बना लीनी
लगी वर्षा झड़ी, बेलें तन पर चढ़ी, बहुत भारी
फिर भी निकली न शल्य विचारी
एक दिन राजा भरत वहां आये, आके चरणों में सिर को झुकाये
मेरी विनती सुनों, शल्य मन से तजो, मेरे भाई
धरा किसी की होने न पाई
शल्य को फिर मन से हटाया, फौरन केवलज्ञान उपाया
आये देव सभी, करते आ स्तुति, बारी–बारी
धन्य–धन्य प्रभु मोक्ष धारी

देखा मैंने त्रिशला का लाल सोने के पलने में

देखा मैंने त्रिशला का लाल सोने के पलने में
सोने के पलने में–2 ....टेक

प्रभु गर्भ में आये .... हाँ जी
रत्नों की वर्षा .... हाँ जी
इन्द्राणी आयी .... हाँ जी
सेवा है कीनी .... हाँ जी
सोलह स्वप्ने .... हाँ जी
माता ने देखे .... हाँ जी
उन सपनों का फल .... हाँ जी
क्या होगा जग में .... हाँ जी
राजा ने उनका .... हाँ जी
फल बतलाया .... हाँ जी
एक बालक होगा .... हाँ जी
दीनों का पालक .... हाँ जी
देखा मैंने त्रिशला का लाल सपनो के पलने में ....टेक

प्रभु जन्म है लीना .... हाँ जी
तीनों लोको में .... हाँ जी
आनंद है छाया .... हाँ जी
इन्द्र भी आये .... हाँ जी
ऐरावत लाये .... हाँ जी
मेरू पे ले गये .... हाँ जी
अभिषेक है कीना .... हाँ जी
वस्त्र पहनाये .... हाँ जी
उत्सव है मनाया .... हाँ जी
हजार नेत्र है कीने .... हाँ जी
फिर प्रभु को निहारा .... हाँ जी
ताण्डव नृत्य कीना .... हाँ जी
सिद्धारथ आये .... हाँ जी

मोहरें हैं लुटाई .... हाँ जी
खुशियाँ छाई .... हाँ जी
देखा मैंने त्रिशला का लाल माता के अंगने में ....टेक

एक निमित्त है बैठा .... हाँ जी
मन वैराग्य जागा .... हाँ जी
लोकान्तिक आए .... हाँ जी
प्रभु महिमा गाई .... हाँ जी
पालकी उठाई .... हाँ जी
प्रभु वन में आये .... हाँ जी
ऊँ नमः सिद्धेभ्य .... हाँ जी
कह दीक्षा धारी .... हाँ जी
केश लोंच है कीना .... हाँ जी
निज ध्यान है कीना .... हाँ जी
देखा मैंने त्रिशला का लाल अरे जी नाथ वन में .... टेक

घोर तप है कीना .... हाँ जी
केवल ज्ञान पाया .... हाँ जी
देव है आये .... हाँ जी
समवशरण की रचना .... हाँ जी
उपदेश है कीना .... हाँ जी
छः द्रव्य बताये .... हाँ जी
सात तत्व बताये .... हाँ जी
आतम बतलाया .... हाँ जी
ये सिद्ध समान है .... हाँ जी
ज्ञान की वर्षा .... हाँ जी
देखा मैंने त्रिशला का लाल समवशरण में ....टेक

प्रभु विहार रूका है .... हाँ जी
योग निरोध किया है .... हाँ जी
सब कर्म विनाशे .... हाँ जी
पंचम गति पाई .... हाँ जी
पावापुर नगरी .... हाँ जी
धन्य हुई है .... हाँ जी
इन्द्र जी आये .... हाँ जी
नर नारी आये .... हाँ जी
प्रभु पूजा कीनी .... हाँ जी
आंनद छाया है .... हाँ जी
देखा मैने त्रिशला का लाल सिद्धों की नगरी में ....टेक

गूँजते-स्वर

एक दो तीन चार.....

1. एक, दो, तीन, चार .... जैन धर्म की जयजयकार
2. पाँच, छः, सात, आठ .... जैन धर्म का सीखो पाठ
3. नौ, दस, ग्यारह, बारा .... जैन धर्म है हमको प्यारा
4. तेरह, चौदह, पन्द्रह, सोला .... जैन धर्म का बच्चा बोल
5. सत्रह, अठारह, उन्नीस, बीस .... जैन धर्म को नवाऊँ शीश
6. इक्कीस, बाईस, तेईस, चौबीस .... जैन धर्म के तीर्थंकर चौबीस

जय बोलो.........

1. आदिनाथ भगवान की .... जय बोलो
2. अजितनाथ भगवान की .... जय बोलो
3. संभवनाथ भगवान की .... जय बोलो
4. अभिनन्दन नाथ भगवान की .... जय बोलो
5. सुमतिनाथ भगवान की .... जय बोलो
6. पद्मप्रभ भगवान की .... जय बोलो
7. सुपार्श्वनाथ भगवान की .... जय बोलो
8. चन्द्रप्रभ भगवान की .... जय बोलो
9. पुष्पदन्त भगवान की .... जय बोलो
10. शीतलनाथ भगवान की .... जय बोलो
11. श्रेयांशनाथ भगवान की .... जय बोलो
12. वासुपूज्य भगवान की .... जय बोलो
13. विमलनाथ भगवान की .... जय बोलो
14. अनंतनाथ भगवान की .... जय बोलो
15. धर्मनाथ भगवान की .... जय बोलो
16. शांतिनाथ भगवान की .... जय बोलो
17. कुन्थुनाथ भगवान की .... जय बोलो
18. अरहनाथ भगवान की .... जय बोलो
19. मल्लिनाथ भगवान की .... जय बोलो

20. मुनिसुब्रतनाथ भगवान की .... जय बोलो
21. नमिनाथ भगवान की .... जय बोलो
22. नेमिनाथ भगवान की .... जय बोलो
23. पार्श्वनाथ भगवान की .... जय बोलो
24. महावीर भगवान की .... जय बोलो
25. अरहंत भगवान की .... जय बोलो
26. सिद्ध भगवान की .... जय बोलो
27. आचार्य महाराज की .... जय बोलो
28. उपाध्याय महाराज की .... जय बोलो
29. साधु महाराज की .... जय बोलो
30. सर्व वीतराग देव की .... जय बोलो

क्या भई क्या...... ?

जैनी वीरो .... क्या भई क्या ?
जैन जवानों .... क्या भई क्या ?
जैन महिला .... क्या भई क्या ?
एक बात सुनोगे .... हाँ भई हाँ।
संग-साथ चलोगे .... हाँ भई हाँ।
मिलके रहोगे .... हाँ भई हाँ।
एक चीज मिलेगी .... क्या भई क्या ?
जैन धर्म का जलसा .... वाह भई वाह।
प्रभु जी के दर्शन .... वाह भई वाह।
आत्मा का आंनद .... वाह भई वाह।
सम्यक्त्व मिलेगा .... वाह भई वाह।
वैराग्य जगेगा .... वाह भई वाह।
मुनिदशा मिलेगी .... वाह भई वाह।
अरे, सुख मिलेगा .... वाह भई वाह।
अरे, शांति मिलेगी .... वाह भई वाह।
अरे, ज्ञान मिलेगा .... वाह भई वाह।
सर्वज्ञ बनोगे .... वाह भई वाह।
संसार छूटेगा .... वाह भई वाह।
भव भ्रमण मिटेगा .... वाह भई वाह।
अरे, मोक्ष की प्राप्ति .... वाह भई वाह।
सिद्धो की नगरी .... वाह भई वाह।
अरे, सिद्ध बन गऐ .... वाह भई वाह।

सत्य-अहिंसा जिन्दाबाद

घर–घर से निकली आवाज – सत्य अहिंसा जिन्दाबा
जैन धर्म ही प्यारा है – यही हमारा नारा है
अनेकान्त यह प्यारा है – यही हमारा नारा है
स्याद्वाद यह प्यारा है – यही हमारा नारा है
रत्नत्रय की एकता – मुक्ति पन्थ की विशेषता
जो बोले सो अभय – जैन धर्म की जय
वीरागता धर्म है – जैन धर्म का मर्म है
सब मिल बोले एक आवाज – जगमग चमके जैन समाज
त्रिशला–नंदन वीर की – जय बोलो महावीर की
जब तक सूरज–चाँद रहेगा – महावीर का नाम रहेगा
जय हो सब अरहन्तों की – वीतराग सब सन्तों की
कुन्द–कुन्द ने क्या दिया – भगवान आत्मा बता दिया
कुन्द–कुन्द जयवन्त हो – समयसार जयवन्त हो
पुण्य–पाप तो कर्म है – वीतरागता धर्म है
मिथ्यात्व बड़ा पाप है – इससे भव का संताप है
मिथ्यात्व ने क्या किया – संसार चक्र में डाल दिया
मानव भव की सफलता किसमें – प्रकट करें सम्यकत्व इसी में
सम्यकत्व ने क्या किया – मोक्ष का प्रारंभ किया
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन – सबको हो शत–शत अभिनंदन
चिदानन्द ध्रुवधाम की – जय हो सिद्ध भगवान की
जिनवाणी का मर्म है – वस्तु स्वभाव धर्म है
जो हुए आज तक अरिहन्त – सबने अपनाया यही पंथ
जिसका कर्ता जो ही है – नहीं माने वह मोही है
सप्त तत्व को जान लो – जीव–अजीव पहिचान लो
जड़ चेतन में भेद जहाँ – सच्चा मुक्त मार्ग वहाँ
सप्त तत्व को जान लो – धर्म पुण्य पहिचान लो
जीवन के बस तीन निशान – श्रद्धा, ज्ञान, चरित्र महान
राग–द्वेष से मोक्ष नहीं – वीतराग से भव (संसार) नहीं
जब तक सूरज–चाँद रहेगा – तत्व ज्ञान का भान रहेगा
ज्ञाता–दृष्टा आत्मा – बन जाओ परमात्मा
सम्यग्दशा की क्या पहिचान – स्वानुभूति और भेद विज्ञान
जिनवाणी ने क्या दिया – शुद्धतम को बता दिया
जैन धर्म किसका है – जो पाले सो उसका है

अहिंसा वाणी – जिन्दाबाद–जिन्दाबाद
रागद्वेष तो कर्म है – वीतराग तो धर्म है
मिथ्यातम की क्या पहिचान – देह आत्मा एक ही जान
जैनी भाईयों क्या करो – तीन मकार का त्याग करो
महावीर का क्या संदेश – जियो और जीने दो
महावीर का क्या संदेश – जागो और जगाओ
महावीर का क्या संदेश – आत्मा भगवान है
महावीर के संदेशों को – घर–घर में पहुंचाऐंगे
महावीर का नाम जहाँ – सुख–समृद्धि मिले वहाँ
महावीर की महिमा गाओ – जैन धर्म की शान बढ़ाओ
महावीर की महिमा गाओ – महावीर खुद में बन जाओ
महावीर को ध्यावेंगे – परमेष्ठी पद पावेंगे
वीर जिनेश्वर प्यारा है – चैतन्य सरोवर न्यारा है
सन्मति को आराधेंगे – कर्मो की धूल उड़ा देंगे
सिद्धारथ नृप–नंद की – जय हो वीर जिनन्द की
महावीर जगदीश्वर है – तीन लोक के ईश्वर है
सत्य–अहिंसा प्यारा है – यह हमारा नारा है
वर्द्धमान चैतन्य बिहारी – चिन्मय अनुपम महिमा धारी
वीर जिनेश्वर जहाँ–जहाँ – दिव्य धवनि है वहाँ–वहाँ
सिद्धारथ त्रिस्ला के लाल – जीवों को कर गए निहाल
अतिवीर आराध्य लें – रत्नत्रय को साध लें
वर्द्धमान जिन वीर है – अतिशय गुण गंभीर है
वीर जिनेश हिंतकर है – चौबीसवें तीर्थकर है
वस्तु स्वभाव ही धर्म है – राग–द्वेष तो अधर्म है
महावीर का क्या संदेश – तेरी सत्ता जग में एक
सप्त तत्व को जान लें – धर्म अधर्म पहिचान लें
बच्चा–बच्चा करे पुकार – समय सार की जय जयकार
नर नारी मिल बोलो आज – महावीर की जय जयकार
बड़े प्रेम से बोलो आज – महावीर की जय जयकार
नगर हमारे गूँजे आज – महावीर की जय जयकार
गली गली में गूँजे नाँद – महावीर की जय जयकार.
भक्ति भाव से बोलो आज – महावीर की जय जयकार
आतम को ही ध्यावेंगे – परमातम बन जावेंगे
ज्ञाता दृष्टा आत्मा – बनना है परमात्मा
ज्ञात दृष्टा राही हूँ – अतुल सुखो का ग्राही हूँ

हैं तैयार हैं तैयार

वीर प्रभु की हम संतान	–	हैं तैयार हैं तैयार
जिन शासन की सेवा करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
सिद्धपद स्वराज लेने	–	हैं तैयार हैं तैयार
अरंहत प्रभु की सेवा करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
ज्ञानी गुरू की सेवा करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
तीर्थ धाम की यात्रा करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
जिन सिद्धांत का पठन करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
सम्यक्दर्शन प्राप्त करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
साधु दशा का सेवन करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
ज्ञायक का पुरूषार्थ करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
देव दर्शन रोज करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
आत्म ज्ञान की ज्योति जगाने	–	हैं तैयार हैं तैयार
मोह शत्रु को दूर भगाने	–	हैं तैयार हैं तैयार
चार कषाय को छोड़ देने	–	हैं तैयार हैं तैयार
वीतराग निर्मोही बनने	–	हैं तैयार हैं तैयार
आत्म ध्यान की धूम मचाने	–	हैं तैयार हैं तैयार
वीर मार्ग पर दौड़ लगाने	–	हैं तैयार हैं तैयार
मोक्ष का दरवाजा खोलने	–	हैं तैयार हैं तैयार
संसार सागर पार उतरने	–	हैं तैयार हैं तैयार
सिद्ध प्रभु के साथ रहने	–	हैं तैयार हैं तैयार
पांच पाप त्याग करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
पाठशाला रोज आने	–	हैं तैयार हैं तैयार
गुरूजी का सम्मान करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
वीतराग की वाणी सुनने	–	हैं तैयार हैं तैयार
जिनवाणी का श्रवण करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
सच्चे जिनमार्ग पर चलने	–	हैं तैयार हैं तैयार
देव–शास्त्र–गुरू सेवा करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
मंदिर जी में रोज आने	–	हैं तैयार हैं तैयार
सप्त व्यसन को छोड़ देने	–	हैं तैयार हैं तैयार
प्रभु की पूजन भक्ति करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
मंदिर जी में स्वाध्याय करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
रात्रि भोजन त्याग करने	–	हैं तैयार हैं तैयार

बिना छना जल काम न लेने	–	हैं तैयार हैं तैयार
निज स्वभाव को प्राप्त करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
मोह भाव को नाश करने	–	हैं तैयार हैं तैयार
मिथ्या मान्यता दूर भगाने	–	हैं तैयार हैं तैयार
कुंद–कुंद बन मोक्ष पाने	–	हैं तैयार हैं तैयार
मुक्ति मार्ग पर आगे बढ़ने	–	हैं तैयार हैं तैयार
भक्त नहीं भगवान बनने	–	हैं तैयार हैं तैयार
आतम से परमातम बनने	–	हैं तैयार हैं तैयार

जय महावीर

जोर से बोलो	–	जय महावीर
सब मिल बोलो	–	जय महावीर
आगे से बोलो	–	जय महावीर
पीछे से बोलो	–	जय महावीर
आवाज न आई	–	जय महावीर
हस के बोलो	–	जय महावीर
चिल्ला के बोलो	–	जय महावीर
ताली बजा के	–	जय महावीर
उठते बोलो	–	जय महावीर
सोते बोलो	–	जय महावीर
चलते बोलो	–	जय महावीर
माताजी बोलो	–	जय महावीर
दादाजी बोलो	–	जय महावीर
बच्चे बोलो	–	जय महावीर
भैया बोलो	–	जय महावीर
नित प्रति बोलो	–	जय महावीर
पाप कटेगें	–	जय महावीर
पुण्य मिलेंगे	–	जय महावीर
उत्साह से बोलो	–	जय महावीर
लगन से बोलो	–	जय महावीर
बोले जाओ	–	जय महावीर
वीर बनोगे	–	जय महावीर
मुक्ति मिलेगी	–	जय महावीर
जय महावीर	–	जय महावीर

शाकाहार - सुसंदेश

भारत देश महान है – शाकाहार प्रधान है
मानवता का करते नाश – मछली, अण्डा, मदिरा, माँस
सण्डे हो या मण्डे – कभी न खाओ अण्डे
वेद, पुराण, गीता का सार – शाकाहार शुद्ध आहार
तन मन करता कौन खराब – माँस अण्डा और शराब
विश्व शान्ति का यह आधार – भोजन करना शाकाहार
राम राज्य लाना है – माँसाहार हटाना है
प्राणी कहे पुकार के – भोजन शाकाहार से
राम कृष्ण का यह संदेश – शाकाहार हरेगा क्लेश
लम्बी आयु निरोगी काया – शाकाहार की ऐसी माया
ऋषि मुनियों का कहना है – शाकाहारी रहना है
सबसे मैत्री सबका ध्यान – शाकाहारी की पहिचान
सत्य अहिंसा का आधार – शाकाहार–शाकाहार
बन्द करेंगे अत्याचार – तब आयेगा शाकाहार
धर्म ध्वजा यदि फहराना है – शाकाहार सदा अपनाना
मूक प्राणी करे पुकार – बन्द करो ये अत्याचार
घर–घर से निकली आवाज – शाकाहार जिन्दाबाद
अण्डा शाकाहार नहीं है – वह भी मां का लाल है
इसको शाकाहार बनाना – यह दुष्टों की चाल है
जैसा पीवे पानी – वैसी बोलें वाणी
जैसा खावे अन्न – वैसा होवे मन
हमें प्रकृति का वरदान – शाकाहार–शाकाहार
सब धर्मों का है यह कहना – कभी किसी को दुख मत देना
शाकाहारी रहते स्वस्थ्य – चिर जीवी निर्मल आश्वस्त
माँसाहार से न्यारा है – शाकाहार हमारा है
माँस, मछली और शराब – पूरे विश्व को किया खराब
पशु धन का हो रहा नाश – विदेशी धन का लालच खाश
कटती गैया करे पुकार – बन्द करो ये अत्याचार
जीवन में आयेगी बहार – अपनाओगे यदि शाकाहार

सुखी जीवन का आधार – शाकाहार – शाकाहार
जीवन में भर लो रंग – शाकाहार के संग
अपना लो तुम शाकाहार – सब जीवों से करलो प्यार
रोको हिंसा और बीमारी – सब बनों मिल शाकाहारी
जब होगी पशुओं की रक्षा – तब बदलेगा देश का नक्शा
इस शराब से क्या लिया – पूरे देश को तबाह किया
छोड़ो ये तम्बाकू – कैंसर का है ये चाकू
छोड़ो ये बीड़ी – कैंसर की है ये सीढ़ी
छोड़ो ये पुड़िया – कैंसर की है गुड़िया
लिपिस्टिक और ये लाली – खून की है प्याली
सब धर्मों का है यह सार – जीवों का मत कर संहार
अमृत है शाकाहार – जहर है माँसाहार
शाकाहार स्वास्थ्य का दाता – माँसाहार रोग का दाता
एक, दो, तीन,चार – शाकाहार का करों प्रचार
पाँच, छः, सात, आठ – शाकाहार के देखो ठाठ
नौ, दस, ग्यारह, बारा – शाकाहार है हमको प्यारा
तेरह ,चौदह,पन्द्रह, सोला – शाकाहारी बच्चा बोला
सत्तरह, अठारह, उन्नीस, बीस – शाकाहार की होगी जीत
सब रोगों से छुटकारा पाओ – शाकाहार को अपनाओं
माँसाहार हटाना है – देश को ऊँचा उठाना है
छोड़ो माँसाहार को – सुखी करो सब जीव को
पशुधन की तुम करो सुरक्षा – देश की होगी स्वयं सुरक्षा
जिस धरती पर पशु कटेंगे – अत्याचार खूब बढ़ेंगे
सुख शांति गर लाना है – पशुओं को हमें बचाना है
पशुओं से हमको प्यार है – छोड़ना माँसाहार है
देश, सुख समृद्धि को प्राप्त हो – जब माँसाहार समाप्त हो
प्यारी कोयल करती कूक – मत मारो ये प्राणी मूक
बोला राष्ट्रीय पक्षी मोर – शाकाहार हरेगा शोर
चन्दा मामा का कहना – शाकाहारी सब रहना
सुनो-सुनो सब धर्मी भाई – शाकाहार है उत्तम भाई
देश में आयेगी खुशहाली – माँसाहार की जला दो होली
दीपक की ज्योति जगमग – शाकाहार हो सारा जग
जीवन को स्वस्थ बनाना है – शाकाहार अपनाना है

पशुओं पर अत्याचार बढ़ेंगे — उस देश में अत्याचार बढ़ेंगे
सुख शांति से जीवन बिताना है — तो माँसाहार मिटाना है
जग में आयेगी हरियाली — पशुओं की करना रखवाली
देश का कर्ज चुकाना है — कटते पशु बचाना है
मानवता का नारा है — शाकाहार हमारा है
हमें अपना धर्म निभाना — माँसाहार न खाना है
सुन लो सभी आज इन्सान — शाकाहार हमरी पहिचान
शाकाहार आरम्भ करो — माँसाहार का त्याग करो
जितने—जितने पशु कटेंगे — उतने—उतने जुल्म बढ़ेंगे
देश भक्त कहलायेंगे — शाकाहार अपनायेंगे
धर्म भक्त कहलायेंगे — माँसाहार मिटायेंगे
शाकाहार को अपनालो — हम भारतीय पहिचान बनालो
सुनलो सब ग्रथों की वाणी — मत मारो तुम कोई प्राणी
दूध, घी क्यों महगें हुऐ — पशुओं पर अत्याचार हुऐ
गर बूचड़खाने खुले रहेंगे — धरती पे प्रदूषण और बढ़ेंगे
अहिंसा का पथ अपनायेंगे — माँसाहार मिटायेंगे
वीर नहीं महावीर बनेंगे — भोजन शाकाहार करेंगे
घर घर में कर दो ऐलान — रोज पीयेंगे पानी छान
माँसाहार का त्याग करो — त्याग करो—त्याग करो
हम सबने यह ठाना है — शाकाहार अपनाना है

प्रस्तुत प्रकाशन की कीमत कम करने वाले दातारों की नामावली

1111/- श्रीमान् प्रकाश चन्द जी अभिषेक कुमार जी जैन
गोरमी, जिला-भिण्ड

1111/- श्रीमान् राजकुमार जी प्रदीप कुमार जी जैन (मामाजी)
मुरार, ग्वालियर

1111/- स्व. श्रीमान् विनोद चन्द जी सर्राफ
(मुरार वालों) की पुण्य स्मृति में

1111/- श्रीमती सुषमा जी जैन धर्मपत्नी श्रीमान् राकेश जी जैन
दाना ओली, लश्कर ग्वालियर

1111/- पुत्री के जन्म की खुशी में, श्रीमती वनमाला देवी जैन
धर्मपत्नी श्रीमान् विमल चन्द जी जैन
दाना ओली, लश्कर, ग्वालियर

1111/- श्रीमान् डॉ. ए.के. जैन पुत्र श्री जगजोत सिंह जी जैन
ऋषभ मेडीकल सेंटर, गली नं. 12, कैलाश नगर, दिल्ली

1111/- श्रीमान् सुनील कुमार जी जैन (प्लास्टिक वाले)
गली नं. 12 कैलाश नगर, दिल्ली

1111/- श्रीमती सुनीता जी जैन धर्मपत्नी श्रीमान् राजकुमार जी जैन
गली नं. 12, कैलाश नगर, दिल्ली

0555/- श्रीमती डौली जी जैन धर्मपत्नी श्रीमान् राजकुमार जी जैन
गांधी नगर, ग्वालियर

0555/- श्रीमती नारायणी देवी जैन धर्मपत्नी स्व. श्रीमान् कैलाश
चन्द जी जैन (कैरुआ वाले) तान्या कम्प्यूटर इन्स्टीट्यूट
ताम्बे भवन, करतार सिंह मार्ग, लश्कर, ग्वालियर

0555/- सिंघई श्रीमान् शिवसेन जी निर्मल चन्द जी जैन (महदौली वाले) गोरमी, जिला-भिण्ड

0501/- श्रीमान् बद्री प्रसाद जी अशोक कुमार जी जैन (घी वाले) मुरार, ग्वालियर

0501/- श्रीमान् भंवरसिंह जी जैन (शेरपुर लुहारा वाले) कैलाश नगर, दिल्ली

0501/- श्रीमती सपना जी जैन धर्मपत्नी श्रीमान् मुकेश कुमार जी जैन गली नं. 6, कैलाश नगर, दिल्ली

0501/- श्रीमती अर्चना जी जैन धर्मपत्नी श्रीमान् सतीश चन्द जी जैन बालाबाई का बाजार, लश्कर, ग्वालियर

0501/- श्रीमती सुमन जैन धर्मपत्नी श्रीमान् शान्त कुमार जी जैन सुभाष बाड़ा, दाना ओली, लश्कर, ग्वालियर

0501/- श्रीमती अनीता जी जैन धर्मपत्नी श्रीमान् ओमप्रकाश जी जैन दाना ओली, लश्कर, ग्वालियर

0501/- श्रीमती मुन्नी देवी पाण्डवीय धर्मपत्नी श्रीमान् प्रेमचन्द जी पाण्डवीय नईसड़क, लश्कर, ग्वालियर

0501/- श्रीमती ममता जैन धर्मपत्नी श्रीमान् सुशील कुमार जी जैन IX/2092 गली नं. 6 कैलाश नगर, दिल्ली

0251/- श्रीमती उषा जी जैन धर्मपत्नी श्रीमान् सुरेश चन्द जी जैन गली नं. 12 कैलाश नगर, दिल्ली

0251/- श्रीमान् मदन लाल जी अंकुर कुमार जी जैन(चुन्नू) (असारा वाले) गली नं. 12 कैलाश नगर दिल्ली

0101/- श्रीमती सुनीता जी जैन धर्मपत्नी श्रीमान् दिनेश चन्द जी जैन गली नं. 9 कैलाश नगर, दिल्ली

कैसा है मेरा आत्मा ?

धन्य–धन्य आत्मा आनंद का धाम है
आनंद का धाम प्रभु, आनंद का धाम है ....टेक
शक्तियाँ अनन्तों देखों, आत्मा में उछले
आत्मा समझ से उलझन सब सुलझे
अहो आत्म ज्ञान में ही सर्व समाधान है ....टेक
सिद्ध भगवन्त के समान ही आत्मा
ज्ञाता स्वभाव से सहज परमात्मा
आत्मा के आनंद से मिले शिवधाम है ....टेक
आत्मा ही ध्येय है आत्मा ही ध्यान है
आत्मा ही ध्याता है आत्मा भगवान है
उपादेय आत्मा सर्व गुण निधान है ....टेक

हर जन्म अपने में मौत लिए बैठा है
हर मानव अपने जीवन में पाप लिए बैठा है।
इस यौवन को पाकर क्यों इतराते हो इतना
हर यौवन भी बुढ़ापे का पैगाम लिए बैठा है।।

0555/
0501
0501
050
050
05(
05(
05
0:
0(
0(

ॐ

चौबीसों भगवान की स्तुति

चौबीसों महाराज थारे चरणों में नमो नमो

षभ अजित संभव जिनस्वामी

भिनंदन हो सुमत जग नामी

ाप्रभ महाराज थारे चरणों में नमो नमो ....टेक

ी सुपार्श्व चन्द्रप्रभ स्वामी

ष्पदन्त शीतल जग नामी

ी श्रेयांस महाराज थारे चरणों में नमो नमो ....टेक

ासुपूज्य श्री विमलनाथ जी

ानंत धर्म श्री शांतिनाथ जी

ुन्थुनाथ महाराज थारे चरणों में नमो नमो ....टेक

ार मल्लि मुनिसुव्रत नाथ जी

ामि नेमि वन्दों पार्श्वनाथ जी

र्धमान महाराज थारे चरणों में नमो नमो ....टेक

रात गवांई सोयकर दिवस गवांया खाय
हीरा जन्म अमोल था कौड़ी बदले जाय